देशबन्धु

जबलपुर, रविवार 23 फरवरी 2025 | वर्ष -69 | अंक -102 | पृष्ठ -12 | मूल्य - 3.00 रु.

- जीवन बीन मधुर न...
- पुस्तक मेला और एटीएम... **04**
- यूनुस राज में पूर्वी पाकिस्तान बनने के...
- ईरान की धमकी पर इजरायल बोला- हम... **09**
- महंगा हो सकता है खाने का तेल...
- समय से पहले लोन बंद करने पर मिलेगी... **11**
- भारत-पाक महामुकाबला...
- भयानक चूक.... **10**

सार संक्षेप

शक्तिकांत दास प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव नियुक्त

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर शक्तिकांत दास को शनिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रधान सचिव-2 के रूप में नियुक्त किया गया। मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति द्वारा जारी आदेश के अनुसार श्री दास की नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, समाप्त हो जाएगी। आदेश में बताया गया है कि श्री दास प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव-1 डॉ. पी. के. मिश्रा के साथ प्रधानमंत्री के निजी सचिव के रूप में काम करेंगे।

मणिपुर में प्रतिबंधित गुट के छह कार्यकर्ता गिरफ्तार

इंफाल। मणिपुर के इंफाल पश्चिम जिले से एक प्रतिबंधित संगठन के छह कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया है और इंफाल पूर्व में जबरन वसूली में कथित रूप से शामिल होने के आरोप में एक समूह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है। मामले में एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि प्रतिबंधित कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (इबुंगो नगांगोम) के छह सदस्यों को इंफाल पश्चिम के कोत्रुक माखा लेइकाई चर्च से गिरफ्तार किया गया।

बिरादरी की बात

चूहा-सुनती हो-कृषि मंत्री को हवाई जहाज में टूटी सीट मिली।

चुहिया- हां प्रिये- खुद ही सोचो कि जब मंत्री को ऐसी मिल रही है तो आम जनता का क्या हाल हो रहा होगा।

यूएसएड फंडिंग पर फिर बोले ट्रंप

मेरे दोस्त मोदी को 182 करोड़ भेजे गए

ट्रम्प ने बांग्लादेश में भेजे गए 250 करोड़ रुपए का भी जिक्र किया

वाशिंगटन, (एजेंसियां)। ट्रम्प ने चार दिन में चौथी बार भारत चुनाव में अमेरिकी फंडिंग पर सवाल उठाया है। इस बार उन्होंने कहा कि मेरे दोस्त मोदी को 182 करोड़ रुपए भेजे गए हैं। ये दूसरी बार है जब ट्रम्प ने इस मामले में मोदी का नाम लिया है।

ट्रम्प ने शुक्रवार को कहा कि ये फंड भारत में वोटर टर्नआउट बढ़ाने के लिए दिए गए। और हमारा क्या? हमें भी अमेरिका में वोटर टर्नआउट बढ़ाने के लिए पैसा चाहिए। इसके अलावा ट्रम्प ने बांग्लादेश में भेजे गए 250 करोड़ रुपए का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में राजनीतिक माहौल को मजबूत करने के लिए ये फंड एक ऐसी संस्था को भेजा गया, जिसका नाम भी किसी ने नहीं सुना।

यूएसएड को लेकर कांग्रेस ने पूछा सवाल, मोदी बताएं 21 मिलियन डॉलर लिए या नहीं?

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के यूएसएड को लेकर किए गए दावे के बाद भारत की राजनीति में भूचाल आया हुआ है। ताजा घटनाक्रम में कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने शनिवार को सत्ताधारी दल भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा और सवाल पूछा कि पीएम मोदी ये बताएं कि अमेरिका से 21 मिलियन डॉलर लिया या नहीं। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कांग्रेस नेता ने कहा, 'डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि 21 मिलियन डॉलर हमने अपने दोस्त नरेंद्र मोदी को दिया है। वोटर टर्न आउट बढ़ाने के लिए भारत को 21 मिलियन डॉलर दिया गया. ये 21 मिलियन डॉलर कहां गए? क्या इसी पैसे से वोटिंग टर्न आउट बढ़ जाता है?' उन्होंने आगे कहा, एक अखबार ने खुलासा किया कि 21 मिलियन डॉलर भारत नहीं बल्कि बांग्लादेश गया। वाशिंगटन पोस्ट की खबर है कि उनकी जांच में ऐसा कुछ नहीं मिला। 2001-2024 के बीच यूएसएड ने लगभग 113 करोड़ रुपये सालाना के हिसाब से पैसा भारत भेजा। इनमें से 44 फीसदी मोदी सरकार के समय आया। क़रीब 40 फीसदी कांग्रेस सरकार के समय आया। इसमें से एक चौथाई रकम बीते चार साल में आई।

शांति वार्ता में जेलेंस्की की उपस्थिति 'महत्वपूर्ण' नहीं : ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिका की राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शांति वार्ता में यूक्रेनी राष्ट्रपति व्लोदिमिर ज़ेलेंस्की की उपस्थिति को महत्वपूर्ण नहीं बताया है। उनका यह बयान उस समय आया जब यूक्रेन और रूस के बीच जारी संघर्ष के समाधान को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बातचीत हो रही है। फ़ॉक्स न्यूज़ रेडियो के ब्रायन किलमीड शो में शुक्रवार को दिए गए एक साक्षात्कार में श्री ट्रम्प ने युद्ध से निपटने के श्री ज़ेलेंस्की के तरीके की आलोचना की। उन्होंने कहा, मैं श्री ज़ेलेंस्की को कई सालों से देख रहा हूं, कैसे उनके शहर तबाह हो रहे हैं, कैसे उनके लोग और सैनिक मारे जा रहे हैं। श्री ट्रम्प ने श्री ज़ेलेंस्की पर बातचीत में कमज़ोर होने का आरोप लगाया और कहा, उनके पास कोई कार्ड नहीं है। पिछले तीन सालों में श्री ज़ेलेंस्की की बातचीत में भागीदारी से कोई ठोस परिणाम नहीं मिले हैं। श्री ट्रम्प ने कहा, वह तीन साल से बैठकों में शामिल हैं, और कुछ भी नहीं हुआ। यूक्रेन में तबाही को स्वीकार करते हुए, श्री ट्रम्प ने तर्क दिया कि शांति वार्ता में श्री ज़ेलेंस्की की भागीदारी ने सौदे तक पहुंचना और भी मुश्किल बना दिया है।

प्रधानमंत्री आज छतरपुर में करेंगे कैंसर अस्पताल का शिलान्यास

बुन्देलखण्ड को मिलेगी एक और बड़ी सौगात, कैंसर रोगियों का होगा निःशुल्क उपचार

भोपाल, देशबन्धु। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज मध्यप्रदेश के छतरपुर के ग्राम गढ़ा (राजनगर) में बागेश्वर धाम जन सेवा समिति द्वारा निर्मित किये जाने वाले मेडिकल साईंस एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट का शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री द्वारा बुन्देलखण्ड क्षेत्र को यह दूसरी बड़ी सौगात दी जा रही है। इसके पहले प्रधानमंत्री ने खजुराहों में केन-बेतवा नदी जोड़ों परियोजना की सौगात बुन्देलखण्ड क्षेत्र की दी थी। प्रधानमंत्री 218 करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले कैंसर अस्पताल का शिलान्यास करेंगे। इसके लिये 10.925 हेक्टेयर भूमि चिन्हित की जा चुकी है। कैंसर अस्पताल 36 माह में बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इसके पहले चरण में 100 बिस्तरों की सुविधा होगी, जिसमें अत्याधुनिक मशीनों और विशेषज्ञ चिकित्सकों के माध्यम से गरीब कैंसर रोगियों को निःशुल्क उपचार किया जायेगा। बागेश्वर धाम में शुरू होने वाली यह पहल न केवल कैंसर के इलाज के क्षेत्र में एक बड़ा कदम होगा, बल्कि यह समाज के हर वर्ग के लिये बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं को भी सुनिश्चित करेगा। अस्पताल के निर्माण से स्थानीय रोजगार और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञों को नए अवसर प्राप्त होंगे।

प्रधानमंत्री करेंगे विधायकों से चर्चा

भोपाल , देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 23 फरवरी को भोपाल आएंगे। प्रधानमंत्री इसी दिन शाम को प्रदेश के सभी सांसदों, विधायकों एवं पदाधिकारियों से चर्चा करेंगे। जनप्रतिनिधियों से यह चर्चा कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में होगी। मुख्यमंत्री ने शनिवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में चल रही तैयारियों का मुआयना किया। उन्होंने सम्पूर्ण परिसर का अवलोकन कर प्रधानमंत्री के सभागार में आगमन, जनप्रतिनिधियों से चर्चा, रात्रि भोज से लेकर प्रस्थान तक की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट आवश्यक : मुख्यमंत्री

भोपाल, (आईएएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को मध्य प्रदेश के दो दिवसीय प्रवास पर आ रहे हैं। पीएम मोदी रविवार को बागेश्वर धाम में कैंसर अस्पताल का भूमि पूजन करेंगे, इसी दिन शाम को भोपाल में संगठन की बैठक लेंगे और सोमवार को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का उद्घाटन करेंगे। शनिवार को मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भोपाल में होने वाली संगठन की बैठक और ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की तैयारियों का निरीक्षण किया। उन्होंने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार और मानव संग्रहालय का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने संवाददाताओं से चर्चा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का मध्य प्रदेश से विशेष लगाव है। वह एक बार फिर मध्य प्रदेश आ रहे हैं, जो हमारा सौभाग्य है। उनका दौरा मध्य प्रदेश के विकास और प्रगति के लिए ऐतिहासिक होगा। प्रधानमंत्री 23 फरवरी को मध्य प्रदेश आ रहे हैं और बागेश्वर धाम के कार्यक्रम के बाद भोपाल में रात्रि विश्राम करेंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में सांसदों और विधायकों का मार्गदर्शन भी करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी 24 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के शुभारंभ के बाद दिल्ली रवाना होंगे।

एअर इंडिया पर भड़के शिवराज सिंह चौहान

प्लेन में टूटी सीट पर बैठकर यात्रा करनी पड़ी

नई दिल्ली, (एजेंसियां)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को एअर इंडिया के विमान की टूटी सीट पर बैठकर यात्रा करनी पड़ी। उन्होंने एअरलाइंस की सुविधाओं पर सवाल उठाए हैं। शिवराज भोपाल से दिल्ली जा रहे थे। शिवराज की प्रतिक्रिया सामने आने के बाद केंद्रीय नागरिक उड्डयान मंत्री ने मामले की जांच के साथ ही एयर इंडिया को जरूरी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इस घटना के बाद कुरूक्षेत्र स्थित गुरुकुल पहुंचे केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने एयर इंडिया के प्लेन की फटी सीट को लेकर कहा कि अगर कोई चीज गलत होती है उसके लिए चुप होना या कुछ बोलना 2 रास्ते है। इससे लोगों को तकलीफ होती है। यह चीज मैनेजमेंट को पता होनी चाहिए। अगर पैसे लेते हैं तो सुविधा भी दें।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, क्या यात्रियों की मजबूरी का ऐसे फायदा उठाएंगे

विमानन मंत्री ने मामले की जांच के दिए निर्देश-शिवराज सिंह की शिकायत के बाद केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) को मामले की जांच करने और तुरंत सुधारात्मक उपाय सुझाने के निर्देश दिए हैं। जिसके बाद डीजीसीए ने मामले में एयरलाइन से रिपोर्ट मांगी है। शिवराज की पोस्ट पर यूथ कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास बीवी ने लिखा- कुंभ जाने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को इनकी सरकार ट्रेनों में पैर रखने की जगह नहीं दे पाई उसका दर्द नही हुआ, मंत्री जी को विमान में टूटी कुर्सी मिलने का दर्द हुआ है।

उत्तराखंड में सीएजी रिपोर्ट ने खोली पोल

वन संरक्षण के लिए फंड से खरीदे गए आईफोन

देहरादून, देशबन्धु। उत्तराखंड में वन संरक्षण के लिए फंड का इस्तेमाल आई फोन और लैपटॉप खरीदने में किया गया। सीएजी रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया है। फॉरेस्ट एंड हेल्थ डिपार्टमेंट और वर्कर्स वेलफेयर बोर्ड की 2021-22 की रिपोर्ट में बताया गया कि फंड का इस्तेमाल बिना योजना और इजाजत के किया गया था। यह रिपोर्ट उत्तराखंड विधानसभा के बजट सेशन के दौरान 21 फरवरी को सदन में रखी गई। उत्तराखंड के वन मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा है कि उन्होंने अपने विभाग से संबंधित मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। रिपोर्ट में कहा गया कि 2017 से 2022 तक जो वृक्षारोपण किया गया, उसमें से सिर्फ 33 फीसदी वृक्ष ही जीवित रह पाए। यह फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट की गाइडलाइंस के मानकों से बहुत नीचे हैं। इंस्टिट्यूट के मुताबिक वृक्षा रोपण के बाद 60-65 फीसदी तक वृक्ष जीवित रहने चाहिए।

सीएजी की रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया कि जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जेआईसीए) परियोजना के तहत 56.97 लाख रुपए का दुरुपयोग किया गया, जबकि यह पैसा किसी अन्य उद्देश्य के लिए था। इसके अलावा,

दफ्तर की सजावटी चीजों में भी हुआ इस्तेमाल

अल्मोड़ा कार्यालय में बिना मंजूरी के सोलर फेंसिंग पर 13.51 लाख रुपये खर्च किए गए। रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि जन जागरूकता अभियान के लिए निर्धारित 6.54 लाख रुपए का उपयोग मुख्य वन संरक्षक, सतर्कता और कानूनी प्रकोष्ठ के लिए ऑफिस बनाने पर किया गया। इसके अलावा, 13.86 करोड़ रुपये का दुरुपयोग अन्य विभागीय परियोजनाओं में किया गया, जिसमें टाईगर सफारी परियोजनाएं, कानूनी शुल्क, व्यक्तिगत यात्रा और आईफोन, लैपटॉप, फ्रिज, और कार्यालय आपूर्ति जैसी वस्तुओं की खरीद शामिल थी।

चुनाव आयोग पर भड़के तेजस्वी

आयोग भाजपा के 'चीयरलीडर' की तरह काम कर रहा

पटना, (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने चुनाव आयोग पर भड़कते हुए कहा कि आयोग संविधान और लोकतंत्र के कैंसर की तरह काम कर रहा है। चुनाव आयोग भाजपा का 'चीयरलीडर' बन चुका है। उसे बिहार में जब चुनाव कराना है, कराए। हम लोग तैयार हैं। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि बिहार की जनता इस बार नई सरकार चाहती है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार थक चुके हैं।

बिहार में चंद अधिकारी सरकार चला रहे हैं। अफसरशाही चरम सीमा पर है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रस्तावित बिहार यात्रा पर कहा, हर दिन कोई न कोई आएगा। दिल्ली चुनाव खत्म हो गया है। हर कोई बिहार आ रहा है। इन लोगों को बिहार और यहां के लोगों से कुछ लेना-देना नहीं है। वे केवल सत्ता में बने रहने के लिए आ रहे हैं। उन्हें किसी और चीज से मतलब नहीं है। क्या वे बिहार को कारखाने देने आ रहे हैं? क्या वे बिहार से पलायन को रोकने आ रहे हैं? वे केवल अपने स्वार्थ के लिए आ रहे हैं।

बिहार में चंद अधिकारी सरकार चला रहे हैं, मुख्यमंत्री थक चुके हैं

तेजस्वी यादव ने आगे कहा कि सत्ता में काबिज रहने के लिए तिकड़म, डीलिंग और मैनेजमेंट कैसे किया जाए, इसके लिए बिहार आ रहे हैं। क्या ये महंगाई, बेरोजगारी को खत्म करने के लिए बिहार आ रहे हैं? राजद नेता ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार के राजनीति में आने की चर्चा पर कहा कि राजनीति में उनके आने का स्वागत है। निशांत हमारे भाई हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण — बांग्लादेश में अराजकता का मौहाल जार

बीएनपी नेता की पीट-पीटकर हत्या

ढाका, (एजेंसियां)। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के नेता मोहम्मद बाबुल मिया की शुक्रवार दोपहर को बेरहमी से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। इस घटना ने एक बार फिर मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार को सवालों के घेरे में ला दिया जिस पर अराजकता को नियंत्रित करने में नाकाम रहने के आरोप लगते रहे हैं। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना शुक्रवार दोपहर को ढाका के धामराई उपजिला में घटित हुई।

बाबुल की पत्नी यास्मीन बेगम ने कहा, हमलावरों ने उन्हें डंडों और एसएस पाइपों से पीटा, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। उनकी दोनों आंखें भी फोड़ दीं। जब मैंने और कुछ स्थानीय लोगों ने बीच-बचाव करने और तो उन्होंने हमें रोक दिया। उनके बेहोश हो जाने के बाद ही वे वहां से गए। बताया जा रहा है कि बाबुल पर उस समय लोगों के एक समूह ने हमला किया जब वह और उसकी पत्नी अक्षिरनगर हाउसिंग के पास सरसों की कटाई कर रहे थे। उनकी

पत्नी ने बताया कि रियल एस्टेट के कारोबार अक्षिरनगर हाउसिंग को लेकर ग्रामीणों के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था। कुछ अन्य लोगों का दावा है कि मृतक बाबुल का हमलावरों के साथ तालाब के स्वामित्व को लेकर विवाद था, जो उनकी हत्या का कारण हो सकता है। बाबुल को अस्पताल ले

-मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार सवालों के घेरे में

जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। डॉक्टरों ने बताया कि उसे सिर, आंख, चेहरे और पैरों में गंभीर चोटों के साथ अस्पताल लाया गया था।

हाल ही में बीएनपी के शीर्ष नेता शम्सुज्जमां दुदु ने अंतरिम सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा था, अंतरिम सरकार के तहत कार्यकर्ताओं और राजनीतिक दलों के नेताओं की हत्या की गई है। दोषियों को बिना देरी के कानून के दायरे में लाया जाना चाहिए। अन्यथा लोगों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं में असंतोष बढ़ेगा।

इस हिंसक घटना ने दक्षिण एशियाई देश में आक्रोश पैदा कर दिया है, कई लोगों ने यूनुस के इस्तीफे की मांग की है क्योंकि ऐसी घटनाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है।

डाक पंजीयन क्रमांक एसएसपी जबलपुर/04/2020-2022

नई औद्योगिक नीति : विकास की नई कहानी लिख रहा है ह्रदय प्रदेश

मध्य प्रदेश में निवेश का स्वर्णिम अवसर

मध्य प्रदेश के विकास का नया अध्याय शुरू हो चुका है। नई औद्योगिक नीति 2025 के साथ राज्य सरकार ने उद्योग जगत को एक नया विजन दिया है। इस नीति का लक्ष्य है कि आने वाले पांच वर्षों में राज्य की औद्योगिक अर्थव्यवस्था को ₹2.9 लाख करोड़ से बढ़ाकर ₹6 लाख करोड़ तक पहुंचाया जाए। साथ ही 20 लाख नए रोजगार के अवसर भी सृजित किए जाएंगे। ₹125 करोड़ से अधिक के निवेश या ₹500 करोड़ के वार्षिक टर्नओवर वाली इकाइयों को वृहद श्रेणी में रखा गया है। वहीं ₹500 करोड़ से अधिक के निवेश वाली मेगा इकाइयों के लिए विशेष प्रोत्साहन पैकेज की व्यवस्था की गई है।

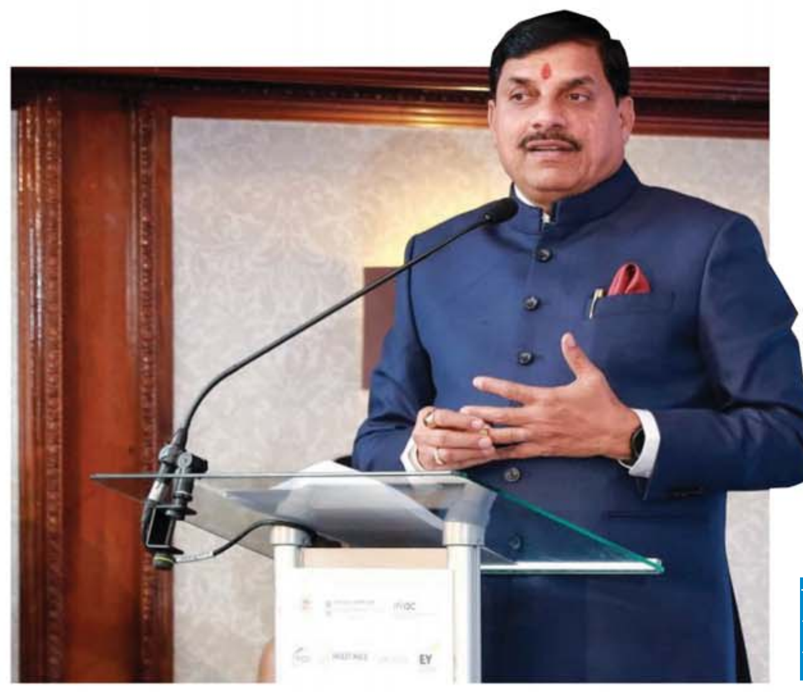

नई नीति की प्रमुख विशेषताएं

औद्योगिक इकाइयों का नया फार्मूला

- **बड़े उद्योग:** ₹125 करोड़ से अधिक निवेश या ₹500 करोड़ वार्षिक टर्नओवर
- **मेगा उद्योग:** ₹500 करोड़ का पूंजी निवेश (विशेष क्षेत्रों के लिए ₹75 करोड़)

वित्तीय प्रोत्साहन

- **निवेश सहायता:** ₹50 करोड़ से ₹2500 करोड़ तक के निवेश पर 40% से 10% तक की सहायता
- न्यूनतम 7 वर्षों तक वार्षिक किस्तों में अनुदान वितरण
- बिजली शुल्क सब्सिडी, हरित उद्योगों को 50% तक सहयोग

प्रमुख सेक्टर्स को विशेष पैकेज

- **खाद्य प्रसंस्करण:** 1.5X निवेश मल्टीप्लायर, ₹1/unit बिजली सब्सिडी
- **टेक्सटाइल:** 5% ब्याज सब्सिडी, ₹50 लाख तक प्रशिक्षण संस्थान सहायता
- **फार्मास्युटिकल:** आर एंड डी में 50% सहायता, 1.3X निवेश मल्टीप्लायर
- **इलेक्ट्रिक वाहन (EV):** 1.3X निवेश मल्टीप्लायर, ₹10 लाख तक प्रमाणन लागत सहयोग

इस नीति से न केवल निवेश आकर्षित होंगे, बल्कि स्थानीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार भी किया जाएगा। सरकार का यह कदम मध्य प्रदेश को निवेशकों के लिए पहला विकल्प बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा

निवेश का नया युग, असीमित संभावनाएं

मध्य प्रदेश सरकार ने औद्योगिक संवर्धन नीति 2025 के माध्यम से राज्य को निवेश और औद्योगिक विकास का केंद्र बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। यह नीति निवेशकों को व्यापक वित्तीय लाभ, सुविधाजनक प्रक्रियाएँ और मजबूत औद्योगिक अवसंरचना प्रदान करने के लिए तैयार की गई है।

FDI में बड़ा बदलाव

मध्यप्रदेश सरकार की औद्योगिक संवर्धन नीति (IPP) 2025 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रोत्साहन प्रदान कर रही है।

नीति के तहत FDI मल्टीप्लायर को 1.2x तक बढ़ाया गया है, जिससे निवेशकों को अधिक लाभ मिलेगा। सरकार प्रौद्योगिकी हस्तांतरण लागत का 50% (₹1 करोड़ तक) पुनर्भरण देगी और निर्यात माल ढुलाई पर ₹40 लाख प्रति इकाई (₹2 करोड़ तक) सब्सिडी मिलेगी।

विदेशी निवेशकों के लिए 'प्लग एंड प्ले' सुविधाएं, पाँच वर्षों तक 50% किराया सब्सिडी और भूमि स्टांप ड्यूटी पर 100% छूट उपलब्ध कराई गई है। निजी औद्योगिक पार्कों को ₹20 लाख प्रति एकड़ तक सहायता, हरित उद्योगों को ₹10 करोड़ तक प्रोत्साहन मिलेगा।

सरल प्रक्रियाएं तीव्र निर्णय

नए उद्योगों की स्थापना को आसान बनाने के लिए ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को प्राथमिकता दी गई है। नीति के तहत सिंगल-विंडो क्लियरेंस सिस्टम, स्वचालित मंजूरी प्रक्रिया और विशेष उद्योगों के लिए अनुकूलित नीतियाँ लागू की गई हैं। इससे निवेशकों को कम समय में अधिकतम लाभ उठाने का अवसर मिलेगा।

निवेशकों के लिए सुनहरा अवसर

औद्योगिक संवर्धन नीति 2025, GIS 2025 के दौरान निवेशकों को मध्यप्रदेश में नए व्यापार अवसरों से जोड़ने का एक बड़ा मंच प्रदान करेगी। सरकार सिंगल विंडो क्लीयरेंस, आसान व्यापार प्रक्रियाएँ और वैश्विक स्तर की अधोसंरचना के साथ राज्य को उद्योगों के लिए सबसे अनुकूल गंतव्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

रोजगार और नवाचार को बढ़ावा

- मध्यप्रदेश सरकार की नई औद्योगिक नीति में कई प्रोत्साहन योजनाएं शामिल हैं जो निवेशकों को आकर्षित करेंगी और राज्य में रोजगार के अवसर पैदा करेंगी। यह नीति नवाचार को बढ़ावा देने और युवाओं को उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित करने पर भी केंद्रित है।

टेक्सटाइल सेक्टर में निवेश प्रोत्साहन

- ₹5,000 प्रति कर्मचारी प्रतिमाह वेतन सहायता (5 वर्षों तक)
- ₹13,000 प्रति कर्मचारी कौशल विकास अनुदान
- 5% ब्याज सब्सिडी (₹50 करोड़ तक के टर्म लोन पर) 100% स्टांप ड्यूटी छूट
- निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूती

प्रेरक निवेश मॉडल और वित्तीय सहायता

औद्योगिक नीति के अंतर्गत कंपनियों को 50 करोड़ से 2500 करोड़ रुपए तक के निवेश पर 40% से 10% तक की सहायता दी जाएगी। यह अनुदान 7 वर्षों में बराबर किश्तों में वितरित किया जाएगा, जिससे उद्योगों को लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता मिलेगी।

इसके अलावा, औद्योगिक निवेश पर मल्टीप्लायर मॉडल लागू किया गया है, जो तकनीकी प्रगति, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय महत्व के आधार पर अतिरिक्त लाभ प्रदान करता है।

इलेक्ट्रिक वाहन (EV) सेक्टर में बढ़ता निवेश

- बैटरी निर्माण और EV कंपोनेंट सेक्टर को बढ़ावा
- चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए विशेष प्रोत्साहन
- मध्यप्रदेश को EV उत्पादन और निर्यात का हब बनाने की दिशा

प्रमुख प्रोत्साहन योजनाएं

- ₹200 करोड़ तक की निवेश प्रोत्साहन सहायता – पहले अधिकतम सीमा ₹150 करोड़ थी।
- औद्योगिक इकाइयों के लिए 40% तक पूंजीगत सब्सिडी।
- 5 वर्षों तक ₹5,000 प्रति कर्मचारी वेतन अनुदान।
- लॉजिस्टिक्स हब पर 100% स्टांप ड्यूटी छूट, ₹75 करोड़ तक का प्रोत्साहन।
- पर्यटन परियोजनाओं के लिए ₹90 करोड़ तक की छूट, अनुमोदन प्रक्रिया 30 दिन में पूरी।
- फिल्म निर्माण के लिए ₹2 करोड़ तक का अनुदान, यदि 75% शूटिंग मध्यप्रदेश में होती है।
- नवीकरणीय ऊर्जा उपकरण निर्माण में ₹10 करोड़ तक की सब्सिडी।

टेक्सटाइल, ईवी और फार्मा सेक्टर में निवेश की नई लहर

मध्यप्रदेश सरकार ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (GIS) 2025 से पहले टेक्सटाइल, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), और फार्मास्यूटिकल्स सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए निवेश प्रोत्साहन योजनाओं की घोषणा की है। इन नई नीतियों का लक्ष्य राज्य को भारत के प्रमुख निर्माण और नवाचार केंद्रों में बदलना और रोजगार सृजन को गति देना है। औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए टेक्सटाइल क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी अनुदान की पेशकश की गई है, जिससे यह उद्योग वैश्विक बाजार में अपनी पकड़ और मजबूत कर सके। टेक्सटाइल उद्योग मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन सकता है।

नई नीति के लक्ष्य

- नवाचार और तकनीकी विकास के लिए निवेश मल्टीप्लायर
- बिजली, गुणवत्ता प्रमाणन और बुनियादी ढाँचे पर वित्तीय सहायता
- पर्यावरण–अनुकूल हरित औद्योगिकीकरण को बढ़ावा
- सरल व्यापार प्रक्रियाएँ और तेज मंजूरी व्यवस्था
- समावेशी क्षेत्रीय विकास और रोजगार सृजन

हरित और आधुनिक औद्योगिकीकरण को बढ़ावा

मध्य प्रदेश में हरित औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए ₹10 करोड़ तक 50% तक का समर्थन दिया जाएगा, जिससे उद्योगों को पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन प्रक्रियाएँ अपनाने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा, बिजली शुल्क सहायता, संरचनात्मक विकास में 50% सहयोग, और गुणवत्ता प्रमाणन लागत की प्रतिपूर्ति जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को बढ़ावा

औद्योगिक संवर्धन नीति 2025 के तहत राज्य के पिछड़े और दूरस्थ क्षेत्रों में उद्योगों को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इससे स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और प्रदेश में संतुलित औद्योगिक विकास को गति मिलेगी।

आद्यौगिक क्रांति की दिशा में अग्रसर मध्यप्रदेश

औद्योगिक संवर्धन नीति 2025 न केवल निवेशकों को अत्याधुनिक औद्योगिक अवसर प्रदान करेगी, बल्कि मध्य प्रदेश को भारत का प्रमुख औद्योगिक राज्य बनाने में भी मदद करेगी। निवेशकों और उद्योगपतियों के लिए यह सही समय है कि वे इस नई औद्योगिक क्रांति का हिस्सा बनें और अपार संभावनाओं का लाभ उठाएँ। मध्यप्रदेश सरकार ने सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम को और अधिक प्रभावी बनाया है, जिससे निवेशकों को बिना किसी अड़चन के सभी अनुमतियाँ त्वरित रूप से प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को उच्चतम स्तर तक ले जाने के लिए नए डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को भी लॉन्च किया जाएगा। GIS 2025 के तहत मध्यप्रदेश को भारत के प्रमुख औद्योगिक, निर्यात, और पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने का रोडमैप तैयार किया गया है। निवेशकों को टेक्सटाइल, ईवी, फार्मा, लॉजिस्टिक्स और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में बड़े अवसर मिलने जा रहे हैं।

अन्य प्रमुख सेक्टर्स को विशेष पैकेज

- **कृषि, डेयरी एवं खाद्य प्रसंस्करण:** 1.5X निवेश मल्टीप्लायर, ₹1/unit बिजली सब्सिडी
- **एयरोस्पेस और रक्षा उत्पादन प्रोत्साहन:** 500 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश करने वाली मेगा श्रेणी इकाइयों को कस्टामाईज्ड पैकज की पात्रता
- **नवकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण:** 250 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश करने वाली मेगा श्रेणी की इकाइयों को सीसीआईपी अंतर्गत कस्टामाईज्ड पैकज की पात्रता
- **बायोटेक्नोलॉजी:** इन-हाउस आर.एंड.डी. के लिए यंत्र-संयंत्र एवं भवन का 50% ईएफसीआई में सम्मिलित
- **मेडिकल डिवाइसेस :** 500 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश करने वाली मेगा श्रेणी इकाइयां सीसीआईपी अंतर्गत कस्टामाईज्ड पैकज के लिए पात्र होंगी
- **हाई वेल्यू-एड विनिर्माता :** प्रशिक्षण और कौशल विकास के 13 हजार रूपये प्रति नए कर्मचारी की सहायता

फार्मास्यूटिकल्स और मेडिकल डिवाइसेस नीति

- 1.3X इन्वेस्टमेंट मल्टीप्लायर
- 50% पूंजी सब्सिडी इन-हाउस R&D और टेस्टिंग लैब्स के लिए ₹1 करोड़ तक की ग्रांट फार्मा टेस्टिंग फैसिलिटी के लिए
- स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश और नवाचार को बढ़ावा

निर्यात संवर्धन नीति और लॉजिस्टिक्स नीति 2025 की सौगात

मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य के उद्योगों को वैश्विक बाजार में मजबूत बनाने के लिए 'निर्यात संवर्धन नीति 2025' और 'लॉजिस्टिक्स नीति 2025' को लागू किया है। इन नीतियों का उद्देश्य राज्य के निर्यातकों की संख्या बढ़ाना, व्यापार सुगमता में सुधार करना और लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना है।

निर्यात को बढ़ावा

मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य के उद्योगों को वैश्विक बाजार में मजबूत बनाने के लिए 'निर्यात संवर्धन नीति 2025' और 'लॉजिस्टिक्स नीति 2025' को लागू किया है। इन नीतियों का उद्देश्य राज्य के निर्यातकों की संख्या बढ़ाना, व्यापार सुगमता में सुधार करना और लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना है।

नए निर्यातकों और निवेशकों के लिए सुनहरा अवसर

- निर्यात अधोसंरचना को सशक्त बनाने के लिए निजी भागीदारी को बढ़ावा
- बड़े निर्यातकों की भागीदारी बढ़ाने पर जोर
- 'मेड इन मध्यप्रदेश' ब्रांड को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने की पहल

नए निर्यातकों को सहयोग

- RCMC पंजीकरण पर ₹10 लाख तक की प्रतिपूर्ति
- निर्यात बीमा पर ₹25 लाख तक की सहायता

अन्य विशेष प्रावधान

- 24x7 परिचालन की अनुमति
- ग्रीन चैनल, सिंगल विंडो क्लियरेंस
- 70% ग्राउंड कवरेज की छूट

निर्यात नीति 2025 : प्रदेश के निर्यात को नई ऊंचाई

एचजीवी-वैश्विक बाजार केंद्रित क्षेत्रों को अतिरिक्त प्रोत्साहन

- Free Onboard Value पर 5% सहायता, अधिकतम ₹30 लाख प्रति वर्ष (5 वर्षों तक)
- 5% ब्याज अनुदान, अधिकतम ₹50 लाख (5 वर्षों के लिए)
- डेडिकेटेड एक्सपोर्ट पार्क्स (DEP) के लिए विशेष पैकेज
- 70% से अधिक निर्यात उन्मुखी इकाइयों को समर्थन

- 100% स्टांप शुल्क एवं पंजीकरण शुल्क प्रतिपूर्ति
- स्थायी अधोसंरचना पर 50% सहायता (अधिकतम ₹40 करोड़ तक)
- कॉमन प्रोसेसिंग फेसिलिटी पर 25% पूंजीगत सहायता (₹25 करोड़ तक)
- **हरित औद्योगीकरण:** अपशिष्ट प्रबंधन हेतु 50% अनुदान (₹5 करोड़ तक)
- जीरो लिक्विड डिस्चार्ज के लिए ₹10 करोड़ तक की सहायता

निर्यातकों के लिए वित्तीय सहायता

- पहली बार निर्यात करने वालों के लिए ₹10 लाख तक पंजीकरण शुल्क प्रतिपूर्ति
- निर्यात बीमा प्रीमियम पर ₹25 लाख तक सब्सिडी
- 50% निर्यात भाड़ा सहायता, अधिकतम ₹2 करोड़ तक
- इन्क्रीमेंटल Free Onboard Value पर 10% सहायता, 5 वर्षों तक ₹2 करोड़ तक
- व्यापार मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लेने के लिए 75% प्रतिपूर्ति, अधिकतम ₹5 लाख प्रति वर्ष

नवाचार और लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देना

- निर्यात इनक्यूबेशन हब की स्थापना
- औद्योगिक संस्थानों में ऑन-जॉब ट्रेनिंग प्रोग्राम
- गति शक्ति कार्गो टर्मिनलों का विकास (20+ टर्मिनल्स)
- एमएमएलपी, एयर कार्गो हब, नए हवाई अड्डों का निर्माण
- जिला स्तर पर ओएनडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम
- ग्रीन कार्ड स्कीम व डिजिटल अपडेट
- न्यूनतम निरीक्षण और त्वरित स्वीकृति के लिए ग्रीन कार्ड स्कीम
- राज्य पोर्टल पर निर्यातक-आयातक डेटाबेस का अपडेट
- प्रदेश के गतिशक्ति पोर्टल को नेशनल मास्टर प्लान से संरेखित करना

D-19313/24

देश-प्रदेश

उवाच — मध्य प्रदेश में निवेश का हो रहा उदय : ज्योतिरादित्य सिंधिया

ग्वालियर,(आईएएनएस)। मध्य प्रदेश की राजधानी में होने जा रही दो दिवसीय ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट को लेकर केंद्रीय दूरसंचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा है कि इस आयोजन से राज्य में निवेश का उदय होगा। केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने ग्वालियर प्रवास के दौरान संवाददाताओं से चर्चा करते हुए कहा कि भोपाल आ रहे निवेशकों व उद्योगपतियों का स्वागत है, उनसे हम मिलेंगे भी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व में निवेश का उदय होने जा रहा है। कांग्रेस की ओर से राज्य में हो रहे आयोजनों को लेकर उठाए जा रहे सवालों पर सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर, रीवा व खजुराहो में समिट हुई और अब भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट हो रही है।

भोपाल में वैश्विक निवेशक सम्मेलन कल से, प्रधानमंत्री मोदी करेंगे शुभारंभ

औद्योगिक विकास की नई संभावनाएं होंगी साकार

- 60 से अधिक देशों के राजनयिक और प्रतिनिधि होंगे शामिल
- गृह मंत्री शाह 25 को होंगे समापन समारोह में शामिल

भोपाल, देशबन्धु। भोपाल में 24-25 फरवरी को आयोजित होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 से मध्यप्रदेश, औद्योगिक विकास की नई संभावनाओं को साकार करने की दिशा में अग्रसर है। इस समिट का उद्देश्य निवेशकों को प्रदेश की औद्योगिक क्षमताओं से अवगत कराते हुए, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मध्यप्रदेश को एक फेवरेट इन्वेस्टमेंट डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करना है।

समिट का शुभारंभ 24 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भोपाल के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में करेंगे। शुभारंभ कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे से 11:15 बजे तक चलेगा। भोपाल जीआईएस का समापन समारोह 25 फरवरी को गृहमंत्री अमित शाह की उपस्थिति में शाम 4.30 से 6 बजे तक आयोजित होगा। इस समिट में देश-विदेश के उद्योग जगत की प्रमुख हस्तियां और नीति-निर्माता शामिल होंगे। कुल 31 हजार 659 से अधिक प्रतिभागियों ने विभिन्न श्रेणियों में पंजीकरण कराया है। इसमें उद्योग जगत के लगभग 3 हजार 903 विशेष आमंत्रित एवं डेलीगेट्स 8046 रहेंगे। इसमें 300 से अधिक गेस्ट ऑफ ऑनर, 133 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभागी 3398 स्टार्ट-अप्स के प्रतिनिधि, 562 एनआरआई एवं मध्यप्रदेश प्रवासी, विभिन्न उद्योग संघों के 249 प्रतिनिधि और विभिन्न सत्रों एवं विभागीय समिट्स में 10491 प्रतिभागी शामिल होंगे।

अडानी, बिड़ला, सिंघानिया सहित प्रमुख उद्योगपति भी रहेंगे मौजूद

समिट में भारत की अग्रणी कंपनियों के 300 से अधिक अध्यक्ष, एमडी और सीईओ उपस्थित रहेंगे। इनमें गौतम अडानी (अध्यक्ष, अडानी समूह), कुमार मंगलम बिरला (अध्यक्ष, आदित्य बिड़ला समूह), संजीव पुरी (सीएमडी, आईटीसी लिमिटेड), नादिर गोदरेज (सीएमडी, गोदरेज इंडस्ट्रीज अश्विनी अरोड़ा (एमडी) दावत फूड्स रघुपति सिंघानिया, सीएमडी जेके टायर बालकृष्ण गोयनका अध्यक्ष, वेल्सपेन वर्ल्ड, सुनील बजाज कार्यकारी अध्यक्ष आदित्य बिड़ला, सतीश पई एमडी हिंलातकों इंडस्ट्री, एम के अग्रवाल, एमडी ग्रासिम इंडस्ट्री कैलाश झावर, एमडी अल्ट्राटेक सीमेंट, बाबा एन कल्याणी, सीएमडी भारत फोर्स लिमिटेड, चंद्रजीत बनर्जी, डीजीसीआईआई, कार्तिक भारत राम, संयुक्त एमडीएसआरएफ लिमिटेड, आंद्रे एक होल्ट एमडी हेटिच इंडिया प्रायवेट लिमिटेड, राघवपत सिंघानिया, एमडी जेके सीमेंट, विनोद अग्रवाल, एमडी एवं सीईओ वी कमार्शियल व्हीकल्स, पुनीत डालमिया सीईओ डालमिया सीमेंट, सुधीर मेहता, सीएमडी पिनेकल इंडस्ट्रीज कुमार वेंकर सुब्रमण्यम, एमडी प्रॉक्टर एंड गैंबल, अभय फिरोडिया, अध्यक्ष फोर्स मोटर्स, श्रीमती सुचिता ओसवाल जैन, उपाध्यक्ष वर्धमान, सीएमडी ब्लू स्टार, पार्थ प्रतिम सेन गुप्ता, एमडी एवं सीईओ बंधन बैंक एवं इंगो सोलर, सीईओ टीडब्लूई ओबीटी शामिल है।

इन देशों की होगी भागीदारी

भोपाल जीआईएस में 60 से अधिक देशों के राजनयिक प्रतिनिधि, उच्चायुक्त, काउंसल जनरल और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। इसमें प्रमुख भागीदार देशों में जापान, जर्मनी, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर शामिल हैं। जीआईएस में मेक्सिको, ब्राजील, अर्जेंटीना, पेरू, अंगोल, बुर्किनाफासो, मोरक्को, मोल्दोवा, नेपाल और जिम्बाम्बे के राजदूत, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, फिजी, जमैका, लेसोथो, रवांडा, सेशेक्स और युगांडा के उच्चायुक्त, यूके, कनाडा, नीदरलैंड, पौलैंड ताइवान, दक्षिण अफ्रिका, कोरूटारिका, पनामा, मैक्सिको, टोगो, स्लोवेनिया के वरिष्ठ राजनयिक बुलगारिया, जिबूती, अल्बानिया, तुबालु हैती, म्यांमार, पलाऊ पौलेंड, दक्षिण कोरिया, रोमानिया और उज्बेकिस्तान के ओनोरेरी कौंसल शामिल है।

मुख्यमंत्री ने किया समिट की तैयारियों का अवलोकन, बोले-

हम सब अतिथियों और निवेशकों के स्वागत के लिए तैयार

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के कैपिटल सिटी भोपाल में जीआईएस का आयोजन पहली बार हो रहा है। आने वाली 24 एवं 25 फरवरी भोपाल शहर के लिए एक नया इतिहास लिखने वाली है। हम सब अतिथियों और निवेशकों के स्वागत के लिए तैयार हैं। ये सिर्फ सरकार का नहीं, हम सबका आयोजन है। इसमें सबकी भागीदारी होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के आयोजन के लिए चल रही व्यापक तैयारियों का मुआयना लिया। उन्होंने कहा कि निवेशक हमारे विशेष मेहमान हैं, उनके स्वागत में हम कोई भी कमी नहीं रखेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मानव संग्रहालय के सम्पूर्ण परिसर का निरीक्षण कर जीआईएस की तैयारियों का बारीकी से मुआयना किया।

साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम स्थल में आगमन से लेकर प्रस्थान तक की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के लिए जीआईएस परिसर में ही तैयार किए गए लाउंज का मुआयना किया। इसके बाद कार्यक्रम के लिए तैयार किए गए मुख्य सभागार (सबसे बड़े डोम) में पहुंचकर मंच, अतिथियों एवं निवेशकों के लिए बैठक व्यवस्था देखी। उन्होंने डोम में ही मंच के सामने निवेशकों के लिए आरक्षित सीटों पर स्वयं बैठकर दृश्य एवं श्रव्य व्यवस्था का भी अवलोकन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विदेशों से आने वाली डेलीगेट्स के लिए अलग से बैठक व्यवस्था की जाए।

मुख्यमंत्री ने किया नवनियुक्त सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ, बोले-

पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए पूरी क्षमता से करें कार्य

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि- अभियोजन अधिकारियों की न्याय प्रणाली में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। न्यायालय, पुलिस और अभियोजन मिलकर पीड़ित को न्याय दिलाते हैं। उन्होंने कहा कि न्यायालय, शासन, प्रशासन और अभियोजन के आपसी समन्वय से ही पीड़ितों को न्याय मिलेगा और प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति को और अधिक बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

डॉ. यादव आज कान्हासैंया स्थित केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी में 210 से अधिक नवनियुक्त सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारियों के आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अभियोजन अधिकारी विधिक प्रक्रियाओं, अभियोजन कार्यों और न्यायिक प्रणाली की बारीकियों से अवगत हों, जिससे वे अपने दायित्वों को कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सकेंगे।

डॉ. यादव ने अध्यक्षयीय उद्बोधन में कहा कि देश में सुशासन स्थापित करने में न्यायपालिका की अत्यंत सराहनीय भूमिका है। लोक अभियोजन अधिकारियों के पास यह स्वर्णिम अवसर है कि वे पीड़ितों और जरूरतमंदों को अपनी युवा ऊर्जा, अपने बौद्धिक ज्ञान, मेधा और क्षमता से तत्परतापूर्वक न्याय दिलाएं।

अपर मुख्य सचिव गृह जे.एन. कंसोटिया ने बताया कि गृह विभाग द्वारा 256 एडीपीओ के पदों की भर्ती के लिए म.प्र. लोक सेवा आयोग को प्रस्ताव दिया गया था, इनमें से 212 एडीपीओ ने पदभार ग्रहण कर लिया है नवनियुक्त अधिकारियों का प्रशिक्षण 45 दिन तक चलेगा। वहीं संचालक अभियोजन बी.एल. प्रजापति ने स्वागत भाषण में कहा कि यह अधिकारियों का प्रशिक्षण आधारित कार्यक्रम है।

न्याय दिलाना एक राजधर्म : इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस विवेक अग्रवाल ने कहा कि लोक अभियोजक समाज में न्याय और परिवर्तन लाने के ध्वजवाहक हैं। दोषियों को सजा दिलाने में उनकी अहम भूमिका होती है। अभियोजन की सफलता में परफेक्शन जरूरी है, इसलिए नए अभियोजन अधिकारी अपने ज्ञान को अपडेट करें, संवेदनशील बनें, प्रलोभन से बचें और अपने पद एवं आचरण की शुचिता बनाए रखकर आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि न्याय दिलाना एक राजधर्म भी है और पुण्यकर्म भी। कार्यक्रम में प्रमुख सचिव विधि एवं विधायी कार्य नरेन्द्र प्रताप सिंह, केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी के संचालक अनिल किशोर यादव, प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट जज भोपाल मनोज श्रीवास्तव, जिला न्यायालय के न्यायाधीशगण, अभियोजन विभाग के अधिकारीगण तथा प्रशिक्षु सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्यमंत्री को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री सहित सभी अतिथियों को अभियोजन विभाग द्वारा स्मृति चिन्ह भी दिया गया।

न्याय पाना सबका मानवीय अधिकार है : जस्टिस माहेश्वरी

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस जे.के. माहेश्वरी ने कहा कि न्याय पाना सबका अधिकार है। यह हमारा मानवीय अधिकार भी है। न्याय पाने की मंशा हमारी आत्मा में, हमारे दिलों में बसना चाहिए। सम्राट विक्रमादित्य ने भी अपनी न्याय प्रणाली से सबके दिलों में न्याय प्रणाली के प्रति आस्था जागृत की थी। सरकार की महिमा उसकी न्याय प्रणाली की बेहतरी से ही दृष्टिगोचर होती है। नवनियुक्त सहायक लोक अभियोजन अधिकारी अपने कौशल को सुधारें और न्याय प्रणाली की बेहतरी के लिए काम करें। उन्होंने कहा कि न्याय एक दर्शन है, एक संकल्प है। नए अभियोजन अधिकारियों को इस न्याय संकल्प से जुड़ना चाहिए और सबको न्याय दिलाने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. यादव से ई-कोर्ट और ई-लायब्रेरी सहित न्यायालय में अधिवक्ताओं और अभियोजकों की समुचित बैठक व्यवस्था के लिए प्रबंध किए जाने की मांग रखी।

लोक अभियोजन न्याय प्रणाली की है प्राथमिक कड़ी : जस्टिस कैत

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में मौजूद मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सुरेश कुमार कैत ने कहा कि अभियोजन अधिकारी न्याय प्रणाली की प्राथमिक कड़ी हैं। वे जो साक्ष्य प्रस्तुत करेंगे, उसी से केस की मजबूती तय होगी। उन्होंने कहा कि पीड़ितों को न्याय दिलाने में मजबूत साक्ष्य लेकर आने की जिम्मेदारी अभियोजन की होती है। इसीलिए पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए अभियोजन अधिकारी समर्पित होकर अपने कर्तव्य को अंजाम दें। दोष सिद्धि दर बढ़ाएं, जिससे अपराधियों को सजा मिले। श्री कैत ने कहा कि अभियोजन अधिकारियों को न्याय प्रणाली के सुचारू क्रियान्वयन और सत्य की खोज में न्यायाधीशों का मददगार बनना चाहिए। आपसी समन्वय से ही सबको न्याय दिलाने का उद्देश्य पूरा होगा और एक सशक्त समाज का निर्माण होगा। उन्होंने डॉ. यादव से अभियोजकों के हित में सुविधाएं बढ़ाने की मांग रखी।

आतिशी ने रेखा गुप्ता से मिलने का समय मांगा

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के विधायकों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से दिल्ली की महिलाओं को प्रति माह ढाई हजार रुपये देने के वादे पर चर्चा करने के लिए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मिलने का समय मांगा है। आप की वरिष्ठ नेता और दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने श्रीमती रेखा गुप्ता को शनिवार को एक पत्र लिखकर मिलने का समय मांगा है।

दिल्ली विस का सत्र कल से

नई दिल्ली, देशबन्धु। हाल ही में संपन्न दिल्ली विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने वाले सभी 70 नवनिर्वाचित विधायक 24 फरवरी से शुरू हो रही दिल्ली विधानसभा के पहले सत्र में सदस्य के तौर पर शपथ लेंगे। यह सत्र 24 फरवरी से शुरू होकर 27 फरवरी तक चलेगी। तीन दिवसीय सत्र में विधानसभा अध्यक्ष-उपाध्यक्ष का चुनाव भी किया जाएगा। 24 फरवरी (सोमवार) को सुबह 11 बजे नई विधानसभा का पहला सत्र शुरू होगा। इस दौरान नवनिर्वाचित विधायकों को प्रोटेम स्पीकर अरविंदर सिंह लवली शपथ दिलाएंगे। दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना के निर्देश पर लवली को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया गया है। जब तक विधानसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव नहीं हो जाता, वह प्रोटेम स्पीकर के तौर पर जिम्मेदारी संभालेंगे।

नाम सुधार

मैं विमल कुमार VIMAL KUMAR पिता जवाहर लाल उम्र 33 वर्ष निवासी ग्राम उमरिया पठरा तह. पनागर का निवासी हूं। मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में मेरा नाम विमल कुमार काछी गलत लिख गया है। जबकि मेरा सही नाम विमल कुमार है। मैंने शासकीय चिकित्सालय पनागर में उपरोक्त नाम सुधार हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं। उपरोक्त समस्त कथन सत्य है। अत: सुधार कर विमल कुमार VIMAL KUMAR करें।

विमल कुमार
पिता जवाहर लाल
उम्र 33 वर्ष
उमरिया (पढ़रा) थाना
पनागर जबलपुर (म.प्र.)
र.नं. 3117

कार्यालय संभागीय अधिकारी संभाग क्रं.11 नगर निगम, जबलपुर

पत्र क्र.- सं.क्र.11/19-20/
दिनांक 22/02/2025

भवन नामांतरण सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती कस्तूरी रजक पत्नी स्व. किशन कुमार रजक, श्री विजय आनन्द- जय आनन्द रजक पिता स्व. किशन कुमार रजक ने वार्ड क्रमांक 65 वार्ड का नाम सुभाष चन्द बैनर्जी वार्ड के भवन क्रमांक ब्लाक सी-115 जहांगीर अपार्टमेन्ट सिविल लाईन सम्पत्ति के पिन क्रमांक 1000398364 पर निर्मित भूतल 380 व.फु. आरसीसी पर निम्न दस्तावेज विक्रय पत्र के आधार पर निगम में दर्ज लक्ष्मी कुट्टी खरीददार- श्रीमती आरती यादव पत्नी लक्ष्मी प्रकाश का नाम हटाये जाने एवं आवेदक के नाम से नाम परिवर्तन किये जाने पर जिस किसी को भी उक्त नाम परिवर्तन पर आपत्ति हो तो वे इस प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर कार्यालय संभाग क्रमांक 11 राजा गोकुलदास धर्मशाला नगर निगम जबलपुर में प्रमाण सहित आपत्ति प्रस्तुत करें।

कृति
संभागीय अधिकारी
संभाग क्रं.-11 नगर निगम, जबलपुर

नाम परिवर्तन सूचना

मैं Army no- 13763937M Rank- HAV/CC Name- ROMESH SINGH, UNIT- 1 JAK RIF Presently residing at VILLAGE-SANGANOO, POST-DHANNI, TEH- KATHUA, DISTT- KATHUA, STATE-(J&K) PIN-184143, शपथ पूर्वक कथन करता हूँ कि मेरे आर्मी रिकार्ड में मेरी माताजी का नाम गलत दर्ज होने के कारण, मेरी माताजी का नाम SUVITHRI RANI से SUMITRA DEVI परिवर्तन हुआ है इस आशय का शपथ पत्र साथ में संलग्न है। द्वारा शपथ पत्र दिनॉक 22/02/2025 नोटरी जबलपुर मप्र । कृति

नाम सुधार सूचना

मैं SUNIL THADANI आज दिनांक को यह घोषणा करता हूं कि मै पहले अपना नाम SUNIL KUMAR THADHANI लिखता था और इसी नाम से मेरा पासपोर्ट भी पूर्व में बना हुआ था परंतु अब मैनें अपना नाम सुधार कर SUNIL THADANI कर लिया है जो की सही है । और मेरे सभी दस्तावेजों में भी यही नाम लिखा है । अतः आज दिनांक से मुझे मेरे सही नाम SUNIL THADANI से जाना पहचाना लिखा एवं पढ़ा जाए ।

पुराना नाम
SUNIL KUMAR THADHANI
सही नाम
SUNIL THADANI
कृति
पता-10 मथुरा विहार विजयनगर, जबलपुर

पश्चिम मध्य रेल

सामग्री प्रबंधन विभाग
(भंडार आपूर्ति हेतु ई- निविदा सूचना, संख्या/ईपीएस/60/2025)

प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल, भारत के राष्ट्रपति की ओर से, ई-खरीद प्रणाली के जरिए निम्नलिखित विज्ञापन निविदायें आमंत्रित करते हैं। कोई भी हस्तलिखित /डाक प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जाएंगे। पूर्ण विवरण/विनिर्देशन के लिए "website https://ireps.gov.in" पर 'ई' निविदा की जानकारी प्राप्त की सकती है।

क्र सं.	निविदा संख्या	संक्षिप्त विवरण	निविदा की मात्रा
1	30252001	बोगी फ्रेम व्यवस्था की खरीद- नॉन एसी मेन लाइन कोचों के लिए 13 टी	52 संख्या
2	20244026A	WAG-9 लोकोमोटिव के लिए डैम्पर का सेट	40 सेट
3	81246128	8.5 डायमंड क्रासिंग में 1 का निर्माण और आपूर्ति	4 सेट
4	38243575	ब्रेक बीम झाड़ियों से पूर्ण	1642 संख्या
5	20255005	इलेक्ट्रिक इंजनों के लिए ड्राइवर सीट का प्रावधान	562 संख्या
6	34243050	सिंथेटिक पेंट और वार्निश के लिए पतला	62468 लीटर
7	38243386	बोल्स्टर स्प्रिंग आउटर IS 3195 (BLC)	2325 संख्या
8	30241756	लचीले केबल पूर्ण सेट की खरीद	26 सेट

उपरोक्त सभी निविदाओं में क्र. सं. 1 की नियत तिथि- 06.03.2025, क्र. सं. 2 की नियत तिथि - 10.03.2025, क्र. सं. 3 की नियत तिथि - 11.03.2025, क्र. सं. 4 एवं 5 की नियत तिथि - 12.03.2025, क्र. सं. 8 एवं 9 की नियत तिथि - 25.02.2025, क्र. सं. 6 से 8 की नियत तिथि - 17.03.2025, 50 लाख रूपये से कम अनुमानित मूल्य वाली निविदाओं के लिए इच्छुक फर्मों को www.ireps.gov.in पर जाने की सलाह दी जाती है।

(हस्ता.)
कृते प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, पमरे, जबलपुर

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

कार्यालय संभागीय उपायुक्त जनजाति कार्य विभाग तथा अनुसूचित जाति विकास

कलेक्टर कार्यालय के बाजू में जबलपुर संभाग, जबलपुर दूरभाष क्रमांक 0761-4113391
ईमैल-dctwd.jbp@mp.gov.in
क्रमांक / 580/स.उपा/स्टोर/2024-25 जबलपुर, दिनांक- 20/2/25

वाहन किराये पर लिये जाने हेतु निविदा

कार्यालय को बोलेरो गाड़ी ड्राईवर सहित मासिक किराये पर लिया जाना है। वाहन की निविदा सभी करों सहित दी जाना चाहिये। वाहन आर.टी.ओ से पास होना चाहिये समस्त टैक्स पेड होना चाहिये वाहन मासिक दर पर लिया जायेगा वाहन का उपयोग संभाग के सभी जिलों में समय-समय पर आने जाने में किया जायेगा। इच्छुक निविदाकर्ता वाहन से संबंधित दस्तावेज सहित दिनांक 28.2.25 अपनी दरें एवं शर्ते कार्यालय में बंद लिफाफे में जमा कर सकते है। निविदा दिनांक 3.3.2025 को समय 3.00 बजे संभागीय उपायुक्त कक्ष में समिति सदस्यों सामने खोली जावेगी जिसमें आप उपस्थित रह सकते है। न्यूनतम दर की फर्म स्वीकार की जावेगी विवाद की स्थिति में अंतिम निर्णय संभागीय उपायुक्त का होगा। जो सभी निविदाकर्ता को मान्य करना होगा।

नियम एवं शर्ते निम्नानुसार-

1. संभागीय उपायुक्त कार्यालय हेतु वाहन प्रकार- बुलेरो निमार्ण वर्ष 2023-24 किराये पर लिया जाना है।
2. वाहन मालिक को मासिक भुगतान देयक प्रस्तुत करने पर किया जायेगा।
3. वाहन मालिक को देयक का भुगतान कार्यालय में आवंटन उपलब्ध होने पर ही किया जायेगा।
4. वाहन मालिक को निविंदा में स्वीकृत दर से अधिक के देयक को स्वीकार नहीं किया जायेगा।
5. वाहन मालिक को प्रति वर्ष इंकमटैक्स रिटर्न जमा करने की सूचना एवं छाया प्रति कार्यालय को अनिवार्यत: देना होगी।
6. वाहन निविदा माह अप्रैल 2025 से मार्च 2026 तक के लिये मान्य होगी, निविदाकर्ता का कार्य व्यवहार सर्विस सेवा अच्छी होने पर ही आगामी वित्तीय वर्ष के लिये कार्य आदेश बढ़ाया जा सकेगा या पुन: निविदा की जावेगी।
7. न्युनतम दर वाली संस्था को एक वर्ष के लिये निविंदा की शर्ते पूर्ण करने पर ही अनुबंध नोटरी से करवा कर कार्यालय में जमा करना होगा ।
8. वाहन में टूटफूट होने पर जबाबदारी वाहन मालिक की होगी ।
9. वाहन मालिक को मासिक देयक जीएसटी सहित देना होगा, जीएसटी नं. आधार कार्ड, पैन, कार्ड, वाहन का आर.सी. आरटीओ टैक्स पेंड की रसीद, आर.टी.ओ. से पासिंग रसीद, बैंक खाता क्रमांक इत्यादि कार्यालय में अनुबंध के साथ जमा कराना अनिवार्य होगा।
10. वाहन मालिक द्वारा दस्तावेज जमा न करने पर भुगतान की कार्यवाही पर रोक लगाई जा सकती है।
11. समस्त प्रकार का अंतिम निर्णय संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य विभाग जबलपुर का होगा एवं विवाद की स्थिति में न्यायालयीन क्षेत्र जबलपुर होगा।

संभागीय उपायुक्त
जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति विकास
जी-22355/24 जबलपुर, संभाग, जबलपुर

न्यायालय तहसीलदार तहसील आधारताल, जबलपुर

रा.प्र.क्र./1677/अ-6/2024-2025
जबलपुर, दिनांक 14/02/25

आम इश्तहार

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक विश्वास मिश्रा अन्य पिता स्व. श्री प्रेम सागर मिश्रा निवासी विजय नगर के द्वारा मौजा... ब्लॉक... नंबर.. प्लाट नंबर .... स्थित भूमि खसरा नं. 5/6/1 में से रकबा 1500 वर्गफुट भूमि जो राजस्व रिकार्ड में स्व. राजेश्वरी मिश्रा के नाम से दर्ज है। आवेदक के द्वारा अपना नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। तत्संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति / संस्था को कोई दावा या आपत्ति हो तो नियत पेशी दिनांक 3/3/25 तक इस न्यायालय में स्वंय या अधिवक्ता के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। समयावधि व्यतीत हो जाने के पश्चात प्रस्तुत दावा/आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। आज न्यायालय की मुद्रा व मेरे हस्ताक्षर से जारी किया गया।

जारी दिनांक 14/02/25
पेशी दिनांक 03/03/25
तहसीलदार
र.नं. 3109 अधारताल जबलपुर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार रांझी जबलपुर

रा.प्र.क्र./1881/अ-6/2024-25

आम इश्तहार

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका भागवती बाई प्रजापति पति जगदीश प्रजापति निवासी- 16 चीलघाट के पास वनखेड़ी होशंगाबाद जबलपुर द्वारा ग्राम परसवारा प.ह.नं. .... नं.बं. .... खसरा नं. 177/1 रकवा क्रमशः 0.0700 हेक्टेयर भूमि रजिस्टर्ड विक्रय पत्र, वसीयतनामा, सहमति पत्र, फौती के आधार पर शासकीय अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है, जिसका प्रकरण इस न्यायालय में विचाराधीन है। अत: उक्त भूमि आवेदक/ आवेदिका के नाम दर्ज किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति/ऐतराज हो तो वह अपनी लिखित आपत्ति इस न्यायालय के कक्ष क्रमांक-72 में तारीख पेशी के पूर्व पेश कर सकता है। समयावधि के बाद प्राप्त दावा/ आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। न्यायालय की मुहर एवं हस्ताक्षर से आज दिनांक 07/02/2025 को जारी।

जारी दिनांक 07/02/2025
पेशी दिनांक 28/02/2025
र.नं. 3119
अतिरिक्त तहसीलदार
रांझी जबलपुर

नाम सुधार

मैं शाहिद मोहम्मद खान उम्र 48 वर्ष पिता श्री मोहम्मद कमालुद्दीन निवासी म.नं. 1949 नव निवेश कालोनी गंगा नगर कांजी हाउस के पास महाराणाप्रताप वार्ड गढ़ा जबलपुर निम्नलिखित कथन शपथपूर्वक कथन करता हूं कि मेरे बड़े पुत्र मोहम्मद तनवीर के जी.सी.एफ. नं. 2 स्कूल के दाखिला खारिज रजिस्टर में एवं मेरे दूसरे पुत्र मोहम्मद दानिश अयान के के.वी.सी.एम.एम. स्कूल के दाखिला खारिज रजिस्टर में पिता का नाम मोहम्मद शाहिद है, जो कि त्रुटिपूर्ण है। यह कि मेरे सभी दस्तावेजों में जैसे आधार कार्ड, पेनकार्ड इत्यादि में मेरा नाम शाहिद मोहम्मद खान दर्ज है, जो सही एवं दोनों नाम एक ही व्यक्ति है। अत: दाखिला खारिज रजिस्टर में सुधार हेतु यह शपथपत्र पेश है।

गलत नाम
मोहम्मद शाहिद
सही नाम
शाहीद मोहम्मद खान
र.नं. 3120

नाम परिवर्तन

मैं, सुरपति दानेश आत्मज स्व. एम. गुरुमुर्ति केवट (Surpati Danesh S/o Late S. Gurumurti Kewat), निवासी म.नं. 1408/48 जी, रक्षा कर्मचारी कॉलोनी, रांझी, जबलपुर (म.प्र.) 482005 सर्व साधारण को सूचित कर रहा हूं कि मेरे शैक्षणिक प्रमाणपत्रों, आधार कार्ड, पेन कार्ड, मेरे जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाणपत्र एवं मेरे स्थानीय निवासी प्रमाण- पत्र में मेरा नाम दानेश (Danesh) दर्ज है जो कि मेरा पुराना नाम है एवं अब मेरा नया नाम सुरपति दानेश (Surpati Danesh) है जो मेरे बेटों की अंकसूची में दर्ज है। उपरोक्त दोनों दानेश (Danesh) एवं सुरपति दानेश (Surpati Danesh) मेरे ही नाम हैं। प्रकाशन के उपरांत मेरे आधार कार्ड, पेन कार्ड एवं समस्त शासकीय एवं अर्धशासकीय दस्तावेजों में मेरा नाम सुरपति दानेश (Surpati Danesh) दर्ज किया जावे एवं अब मुझे सुरपति दानेश (Surpati Danesh) के नाम से जाना पहचाना जावे।

पुराना नाम- दानेश
Danesh
नया नाम- सुरपति दानेश
Surpati Danesh
र.नं. 3114

न्यायालय तहसीलदार गोरखपुर जबलपुर

रा.प्र.क्र. 2648 /अ-6/2024-25

आम इश्तहार

आम और खास को सूचित किया जाता है कि आवेदक दीपक कुमार गुप्ता पिता विजय कुमार गुप्ता, निवासी- बाजनामठ रोड गढ़ा, खसरा नं.- 795/79/1 के द्वारा के आधार पर स्वयं का नाम मौजा पुरवा प.ह.नं. 07 खसरा नं. ... प्लॉट नं... रकवा 800 भूमि पर शासकीय रिकार्ड में नाम दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र दस्तावेज सहित न्यायालय में प्रस्तुत किया है।

अत: उक्त उपरोक्त का नाम दर्ज करने में किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से आम इश्तहार जारी होने के 15 दिवस की भीतर ही आपत्ति स्वीकार की जावेगी।

आज दिनांक 11/02/25 को पदमुद्रा से इश्तहार जारी किया जाता है।

पेशी दिनांक- 26.02.25
तहसीलदार
एवं कार्यपालिक दण्डाधिकारी
र.नं. 3115 गोरखपुर, जबलपुर

आम सूचना

मैं अधिवक्ता अपनी पक्षकारा श्रीमती गौरी पटेल पति श्री ब्रिन्दावन पटेल, निवासी आगा चौक उजार पुरवा, गली नम्बर 01, कस्तूरबा गांधी वार्ड, जबलपुर कि ओर से अधिकृत होकर मेरे द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि बयशुदा भूमि/प्लाट मौजा गढ़ा, नं.बं. 599, प.ह.नं. 06 तह. गोरखपुर जिला जबलपुर, महाराणा प्रताप वार्ड, स्थित डायवर्सन खसरा नम्बर 60/2 का भाग प्लाट नम्बर 51 एवं 52 का भाग कुल रकवा 50x20=1000 वर्गफुट भूमि का क्रय विक्रेता श्रीमती रजनी अनिल शर्मा पति अनिल शर्मा निवासी मकान नम्बर 7572-ए छाबड़ा कम्पाउण्ड जार्ज डिसिल्वा वार्ड गोरखपुर जबलपुर वालों से क्रय करने का अनुबंध आप वर्तमान विक्रेता से लगान हक्क रेट के मुताबिक कर लिया गया है। इस अनुबंधित भूमि/प्लाट का ई विक्रय पत्र का निष्पादन मेरे पक्षकार के द्वारा अपने पक्ष मे निकट भविष्य में किया जाना तय है। अत: एवं उक्त इकरारशुदा भूमि/ प्लाट के संबंध में यदि किसी व्यक्ति, कोई संस्था या वित्तीय संस्था, शासकीय अथवा अर्धशासकीय संस्था का कोई भी भार अथवा लेन- देन निकलता हो या कोई आपत्ति हो तो मय मूल दस्तावेजों सहित प्रकाशन से 3 दिन के अंदर मेरे कार्यालय में उपस्थित हों। समय अवधि के उपरांत किसी भी प्रकार की कोई भी आपत्ति मान्य नहीं होगी, और मेरे पक्षकार के द्वारा उपरोक्त अनुबंधित संपत्ति की ईरजिस्ट्री/ बैनामा का पंजीयन अपने पक्ष में करवा लिया जावेगा।

(विकास कुमार मिश्रा)
अधिवक्ता
पता- अविका ईपंजीयन सेवा केन्द्र
श्रीछाया ड्यूप्लेक्स, विजयनगर,
जबलपुर मो. 8839596415, 7067621199
र.नं.- 3112

In The Court of Additional District and Session Judge, District Court Jabalpur
Presiding Officer : विपिन सिंह भदौरिया
(आदेश 5 नियम 20 व्यवहार प्रक्रिया संहिता 1908 के अन्तर्गत प्रकाशन हेतु)
(MJC GW/0000014/2025)
अर्चना सोनी .... वादी
Vs
आम जनता .... प्रतिवादी
Process Id - 2025
पेशी दिनांक : 26/03/2025
प्रेषिती-
(1) आम जनता पता- जबलपुर म.प्र.

यह कि प्रार्थी अर्चना सोनी ने आपके विरूद्ध एम जे सी जे डब्ल्यू अवयस्क की भूमि विक्रय की अनुमति हेतु आवेदन पत्र अंतर्गत धारा 8 संरक्षक एवं प्रतिमाल्य अधिनियम के लिए वाद संस्थित किया है, आपको इस न्यायालय में सूचना के प्रकाशन के 30 दिवस के भीतर वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात/ हाजिर होने के लिए सम्मन सम्मन किया जाता है, आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर (अधिवक्ता) द्वारा उपसंजात हो सकते हैं, जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हों और जो इस वाद में संबंधित सभी सारवान कथनों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन प्रस्तुत करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपका प्रतिरक्षा या मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित हो, और यदि आप अन्य किसी दस्तावेज पर चाहे वह आपके कब्जे या शक्ति में हो अपनी प्रतिरक्षा या मुजरा के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो ऐसे सभी दस्तावेजों की लिखित कथन के साथ उपलब्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्टि करें।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई अवधि में इस न्यायालय में उपस्थित नहीं होंगे तो वाद की एक पक्षीय सुनवाई कर उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा। साथ ही यह भी सूचित किया जाता है कि यदि आप निराकरण मध्यस्थ के माध्यम से करने के इच्छुक हैं तो पीठासीन अधिकारी को अवगत करावें। यह आज तारीख 18 फरवरी 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगा कर दिया गया है।

न्यायालय की मुद्रा

टिप्पणी- प्रकाशन हेतु नोटिस के साथ अवस्यक की भूमि विक्रय की अनुमति हेतु आवेदन पत्र अंतर्गत धारा 8 संरक्षक एवं प्रतिपाल्य अधिनियम की छायाप्रति संलग्न है।

कृपया ध्यान दें- 1. यदि किसी कारणवश उक्त तिथि को न्यायालय अवकाश पर रहेगा तो आगामी कार्यदिवस पर यह प्रकरण सुनवाई में लिया जायेगा।

(विपिन सिंह भदौरिया)
जिला न्यायाधीश (षष्ठम)
र.नं.- 3113 जबलपुर म.प्र.

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री पियूष चाँदवानी पिता श्री राजकुमार चाँदवानी, निवासी-बड़ी सिंधी कालोनी, गुरुनानक वार्ड पनागर, जिला जबलपुर द्वारा मौजा दिवरीकला, प.ह.नं.-19, रा.नि.मं.-पनागर, खसरा नं.-686/1/1, 687/1, 688/1, 689/1 एवं 690/1 का भाग, कुल प्लॉट नं.-11,12 एवं 13 का कुल रकवा-3000 वर्गफुट, जो कटंगा कॉलोनी, प्रज्ञा विहार कालोनी, गुरुनानक वार्ड, पनागर, जिला जबलपुर में स्थित है, में से प्लॉट नं.-11, प्लॉट रकवा-1000 वर्गफुट, जिसकी चौहद्दी - उत्तर में विक्रेता का प्लॉट नं.-12., दक्षिण में खाली प्लॉट नं.-10, पूर्व में कॉलोनी साईड रोड, पश्चिम में श्री गदला देवराज नायडू जी की सम्पत्ति है, को विक्रेता एवं वर्तमान स्वामी श्री संस्कार रोहरा पिता श्री रमेश रोहरा, निवासी म.नं.-42, छोटी सिंधी बस्ती, जगमोहन वार्ड, पनागर, जबलपुर वालों से क्रय करने का इकरारनामा किया है। श्री संस्कार रोहरा ने उक्त सम्पत्ति को रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 07.06.2022, ई-रजिस्ट्रेशन नं.- MP182552022A 1603387 के माध्यम से श्री जी. देवराज नायडू पिता श्री जी.एन.एस. नायडू निवासी प्रताप वार्ड, पनागर, जबलपुर से क्रय की है एवं समस्त शासकीय दस्तावेजों में अपना नाम दर्ज करा लिया है और क्रय दिनांक से ही उक्त सम्पत्ति पर मालिक की हैसियत से काबिज हैं। उपरोक्त विक्रय पत्र दिनांक 07.06.2022 की मूल प्रति विक्रेता श्री संस्कार रोहरा से पनागर मेन रोड के आसपास कही गिर गयी, जिसे बहुत खोजने पर न मिलने की स्थिति में पुलिस थाना पनागर जबलपुर में सूचना देकर दिनांक 19.02.2025 को रिर्पोट दर्ज करायी, जिसका रो. सान्हा क्रमांक (रजिस्ट्रेशन नं.) 51/19.02.25 है। उपरोक्त मूल विक्रय पत्र दिनांक 07.06.2022, ई-रजिस्ट्रेशन नं.-MP182552022A 1603387 की अनुपस्थिति में क्रेता श्री पियूष चाँदवानी द्वारा यह सम्पत्ति वर्तमान स्वामी से क्रय करने बाबत् भारतीय स्टेट बैंक जबलपुर से ऋण प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है, जिस पर ऋण स्वीकृति विचाराधीन है। बैंक द्वारा वर्तमान स्वामी/विक्रेता की मूल प्रति की अनुपस्थिति में, क्रेतागण के पक्ष मे होने वाले प्रस्तावित विक्रय पत्र की मूल प्रति को बन्धक कर ऋण प्रदान किया जाएगा। अतः उक्त सम्पत्ति के सम्बन्ध में यदि किसी आम या खास किसी व्यक्ति, निगम, संस्था, वित्तीय संस्था, शासकीय अथवा अर्द्धशासकीय संस्था, या कोई भी बैंक, आदि को, किसी प्रकार की आपत्ति या लेन-देन या कोई उक्त भूमि पर अपना हित रखता हो, वह मूल दस्तावेज लेकर सूचना प्रकाशन से एक सप्ताह के अन्दर मेरे कार्यालय में आकर अपनी आपत्ति दर्ज कराए व पावती प्राप्त करे, अन्यथा अवधि समाप्त होने के पश्चात किसी भी प्रकार की आपत्ति, दावा मान्य नहीं किया जावेगा और बैंक उपरोक्त वर्णित सम्पत्ति बन्धक रख उस पर ऋण देने को स्वतंत्र रहेगा।

भवदीय-अखिलेश मिश्र (अधिवक्ता)
देवायन 6, स्टेट बैंक कालोनी,
सिंगल स्टोरी, बल्देवबाग जबलपुर
मो.9826319966, 0761-4004196
र.नं.- 3118

साहित्य

संदर्भ : शायर-नग़मा निगार आरज़ू लखनवी का जन्मदिवस

जीवन बीन मधुर न बाजे झूठे पढ़ गये तार...

■ ज़ाहिद ख़ान

आरज़ू लखनवी का शुमार उन शायरों में होता है, जिन्होंने न सिर्फ़ अपना नाम उर्दू अदब में सुनहरे हुरूफ़ में लिखवाया, बल्कि उनके मधुर गीझतों ने हिन्दी सिनेमा के इब्तिदाई दौर को मालामाल किया। आरज़ू लखनवी के नग़मों के शैदाई उनके समकालीन मूसीक़ार अनिल विश्वास, केदार शर्मा, नौशाद से लेकर शायर-नग़मा निगार साहिर लुधियानवी भी थे। नौशाद ने अपने एक इंटरव्यू में उनकी तारीफ़ करते हुए कहा था, ''फ़िल्मों में गीत लिखने वाला सिर्फ़ एक ही बेजोड़ शायर हुआ है, आरज़ू लखनवी।'' वहीं साहिर भी उन्हें सबसे बड़ा फ़िल्मी गीतकार मानते थे। अनिल विश्वास अपने इंटरव्यू में अक्सर आरज़ू लखनवी के गीतों का ज़िक्र करते थे। ज़ाहिर है कि जिस गीतकार के गीतों की उत्कृष्टता को अनिल विश्वास, नौशाद और साहिर लुधियानवी ने भी तस्लीम किया हो, उस नग़मा निगार के नग़मों का क्या मेयार होगा। सुपर हिट फ़िल्म 'देवदास' के गाने 'बालम आए बसो मोरे मन में', 'दु:ख के दिन बीतत नाहीं' वगैरह जिन्होंने सिंगर केएल सहगल की आवाज़ को मुल्क में घर-घर तक पहुंचा दिया, वो आरज़ू लखनवी ही की क़लम से निकले थे। इन गीतों के अलावा 'करूं क्या आस निरास भई', 'पिया मिलन को जाना', 'जग में चले पवन की चाल', 'लूट लियो मन धीर' जैसे मानीख़ेज़ गीतों के रचयिता आरज़ू लखनवी थे। उनके लिखे गीत और केएल सहगल, पंकज मलिक, केसी डे, कानन बाला की जादुई आवाज़ जब मिली, तो हिन्दी सिने संगीत अपने उरूज पर पहुंच गया। आलम यह था कि ये गाने पूरे मुल्क में गुनगुनाये जाते थे। घर-घर इनके चर्चे होते थे। इन गानों को आये एक लंबा अरसा हो गया, मगर इनकी मक़बूलियत और कैफ़-ओ-असर में कोई कमी नहीं आई है। यह गाने आज भी दिलों को झूमने पर मजबूर कर देते हैं।

16 फ़रवरी, 1872 को उत्तर भारत के लखनऊ में पैदा हुए अल्लामा आरज़ू का असल नाम सय्यद अनवर हुसैन था। बीस साल की उम्र तक आरज़ू लखनवी की शोहरत लखनऊ से निकलकर, दूसरे शहरों तक पहुंच गई। शायरी के अलावा आरज़ू लखनवी उर्दू ज़बान के बड़े आलिम और ख़ास तौर पर लखनवी ज़बान के जानकार थे। ज़बान की बारीकियों और मुहावरे पर उनकी अच्छी दस्तरस थी। शायरी के अलावा उन्होंने उर्दू व्याकरण और अलंकार से संबंधित किताबें भी लिखीं। इन किताबों में 'निज़ाम-ए-उर्दू' का ख़ास मुक़ाम है। आरज़ू लखनवी ने शायरी के अलावा नस्र में भी अपने हाथ आजमाये। उन्होंने दोस्तों के मशवरे पर ड्रामे भी लिखे। उनका पहला ड्रामा 'मतवाली जोगन' था, जिसका सबसे पहला मंचन लखनऊ में हुआ। ज़बान की दिलकशी और सादा अशआर की बदौलत यह ड्रामा ख़ूब पसंद किया गया। ड्रामे की शोहरत हुई, तो एक पारसी थियेटर कंपनी ने इसे खरीद लिया। साथ ही आरज़ू लखनवी से आगे और भी ड्रामे लिखने का कॉन्ट्रेक्ट कर लिया। कलकत्ता की मशहूर 'मैडन थियेटर कंपनी' ने उन्हें कलकत्ता बुलवा लिया। साल 1936-37 के दरमियान वो कलकत्ता में ही रहे और उन्होंने इस कंपनी के लिए 'दिल जली बैरागन', 'अमल का फल', 'चराग़-ए-तौहीद', 'चांद गहन', 'सदा-ए-दरवेश' और 'शरार-ए-हुस्न' जैसे मक़बूल-ए-आम ड्रामे लिखे। जो ड्रामे के शौक़ीनों को ख़ूब पसंद आए। 14 मार्च, 1931 को रिलीज हुई 'आलमआरा' भारतीय सिनेमा की पहली बोलती फ़िल्म थी। इस फ़िल्म की रिलीज के बाद लोगों की तवज्जो और दिलचस्पी फ़िल्मों की ओर बढ़ गई। थियेटर की तरफ़ लोगों का रुजहान कम होता चला गया। इसका नतीजा यह निकला कि कई बड़ी-बड़ी थियेटर कंपनियां बंद हो गईं। आरज़ू लखनवी भी वापस लखनऊ लौट आए। लेकिन कुछ ही दिनों में उन्हें बंबई से बुलावा आ गया। फ़िल्म कंपनी 'न्यू थियेटर्स' के लिए उन्होंने उन्नीस फ़िल्मों में गीत लिखे।

आम बोलचाल की ज़बान में लिखे गए आरज़ू लखनवी के गीत लोगों को ख़ूब पसंद आते थे। यह गीत ज़ल्द ही उनकी ज़बान पर चढ़ जाते थे। 'स्ट्रीट सिंगर' वह पहली फ़िल्म थी, जिसमें लिखे उनके सारे गाने सुपर हिट हुए। केएल सहगल और कानन देवी की आवाज़ और आरज़ू लखनवी के गीतों 'रुत है सुहानी मस्त हवाएं, छाई हैं ऊदी ऊदी घटाएं', 'सांवरिया प्रेम की बंसी सुनाए', 'जीवन बीन मधुर न बाजे झूठे पढ़ गये तार' ने ख़ूब जादू जगाया। साल 1939 में आई फ़िल्म 'दुश्मन' के गीत भी सुपर हिट हुए। ख़ास तौर पर केए सहगल का गाया गाना 'करूं क्या आस निरास भई'। 'न्यू थियेटर्स' की फ़िल्मों में आरज़ू लखनवी के कुछ और हिट गीत हैं-'दीवाना हूं दीवना हूं, राहत से मैं बेगाना हूं' (फ़िल्म-ज़िंदगी), 'कैसे कटे रतिया बालम', 'काहे को रार मचाई' (फ़िल्म-लगन), 'यूं दर्द भरे दिल की आवाज़ सुनाएंगे' (फ़िल्म-कपाल कुंडला), 'गुज़र गया वो ज़माना कैसा', 'आई नित नई रुत की बहार' (फ़िल्म-डॉक्टर), 'मस्त पवन शाखें लहराएं' (फ़िल्म-हार जीत), 'मदभरी रुत जवान है', 'ये कौन आया आज सवेरे सवेरे', (फ़िल्म-नर्तकी)। केएल सहगल, पंकज मलिक, पहाड़ी सान्याल और कानन देवी इन गीतों से जवां दिलों की धड़कन बन गए।

'न्यू थियेटर्स' के अलावा आरज़ू लखनवी ने 'नेशनल स्टुडियो', 'मिनर्वा मूवीटोन' और 'बॉम्बे टाकीज' के लिए भी गीत लिखे। यह गीत भी बाक़ी फ़िल्मी की तरह सुपर हिट रहे। महबूब के निर्देशन में बनी फ़िल्म 'रोटी' में आरज़ू लखनवी के गीत भी शामिल थे। 'उलझ गए नैनवा हटे नहीं छुड़ाए', 'जोबन उमड़ाए नैन रसियाए खबर बिसराए' इन गीतों को मलिका-ए-ग़ज़ल बेगम अख़्तर ने अपनी आवाज़ दी थी। आरज़ू लखनवी ने फ़िल्मों के लिए गीत मजबूरी में लिखे थे। गीत लिखना, उनके लिए एक रोजगार था। लेकिन उनके ये नग़मे अदबी लिहाज़ से भी कमज़ोर नहीं। अपनी लेखनी से उन्होंने इन गीतों में एक अदबी मेयार पैदा कर दिया है। ज़बान की सादगी और लफ़्ज़ों का इंतिख़ाब आरज़ू लखनवी कुछ इस तरह से करते थे

गीत लोगों की ज़ुबान पर चढ़ जाते थे। फ़िल्म के कथानक और सिच्युएशन के हिसाब से वो ऐसे गीत लिखते थे कि वे फ़िल्म का एक हिस्सा बन जाते थे। गीतों में क्षेत्रीय बोलियों के लफ़्ज़ों के इस्तेमाल से भी उन्हें कोई गुरेज़ नहीं था। आरज़ू लखनवी की कई ग़ज़लें फ़िल्मों में इस्तेमाल हुईं और वो बेहद मक़बूल हुईं। फ़िल्मी दुनिया में जब आरज़ू लखनवी उरूज पर थे, मुल्क का बंटवारा हो गया। लाखों लोगों के साथ वो भी पाकिस्तान चले गए। लेकिन बीच-बीच में वे बंबई आते रहे। उम्र के वे अब आख़िरी पड़ाव में थे। लिहाज़ा उन्होंने धीरे-धीरे आना-जाना बंद कर दिया। कुछ अरसा उन्होंने पाकिस्तान रेडियो के कराची स्टेशन पर मुलाज़मत की। कुछ यादगार रेडियो नाटक लिखे। मुशायरों में शिरकत करते रहे।

आरज़ू लखनवी अपनी ग़ज़लों, गीतों के लिए ही जाने जाते हैं, लेकिन उन्होंने नज़्में भी बेशुमार लिखीं। यही नहीं उन्होंने शायरी की हर सिन्फ़ में लिखा। क़सीदा, मसनवी, रुबाई और मरसिये लिखने पर भी उन्हें महारथ हासिल थी। आरज़ू लखनवी की ग़ज़लों के चार दीवान 'फ़ुग़ान-ए-आरज़ू' (1897), 'जहान-ए-आरज़ू' (1936), 'सुरीली बांसुरी' (1938) और 'निशान-ए-आरज़ू' (1942) हैं, तो वहीं 'सहीफ़ा-ए-इलहामी', 'दुरदाना और अंदल-ए-महमूद', 'सुबह-ए-बनारस', 'मीज़ान-उल-हरफ़', 'निज़ाम-ए-उर्दू' कि मिरासी, रूबाई, मसनवी और उर्दू ग्रामर की किताबें हैं। उर्दू शायरी में आरज़ू लखनवी का एक अलग ही मुक़ाम है। उन्होंने अपनी शायरी में कई अनूठे प्रयोग किए। क्या अरबी, फ़ारसी के अल्फ़ाज़ों के बिना ग़ज़ल का तसव्वुर किया जा सकता है ? लेकिन आरज़ू लखनवी ने शायरी में इसे मुमकिन कर दिखाया। 'सुरीली बांसुरी' में उनकी ऐसी ग़ज़लें शामिल हैं, जिनमें न तो अरबी, फ़ारसी ज़बान के लफ़्ज़ हैं और न ही उसकी कोई तराक़ीब और तशबीहात (उपमाएं)। महज़ लखनवी मुहावरों के बल पर उन्होंने शायरी में वो कशिश पैदा की, कि लोगों ने उनके हुनर का लोहा मान लिया। सरल ज़बान में वे अपने जज़्बात को बड़ी ही ख़ूबसूरती से पेश कर जाते थे। यह उनका एक ऐसा कारनामा है, जो हमेशा याद रखा जाएगा। हिंदुस्तानी ज़बान की तरक़्क़ी के लिहाज से उनका यह अहमतरीन काम था। उनके इस क़दम से हिन्दी-उर्दू क़रीब आईं। और एक ऐसी ज़बान अमल में आई, जो आम अवाम को पसंद थी। साल 1930 में इस पाबंदी के साथ उनकी पहली ग़ज़ल 'नैरंग-ए-ख़याल' में शाए हुई। उसके बाद ये सिलसिला शुरू हो गया। इसी रंग में उन्होंने एक के बाद एक काफ़ी ग़ज़लें लिखीं। जो आम लोगों को ख़ासी पसंद आईं। इन ग़ज़लों के अशआर आम अवाम की ज़बान पर चढ़ गए। ख़ालिस उर्दू कहें या फिर हिंदुस्तानी इस ज़बान को लिखने में आरज़ू लखनवी का कोई जवाब नहीं था। 'जिसने बना दी बांसुरी गीत उसी के गाये जा/सांस जहां तक आये जाये एक ही धुन बजाये जा।', 'रस उन आंखों में है, कहने को ज़रा सा पानी/सैकड़ों डूब गये, फिर भी है उतना पानी।'

आरज़ू लखनवी ने ऐसा नहीं कि सिर्फ़ ख़ालिस उर्दू में ग़ज़लें लिखीं और हिंदुस्तानी ज़बान में फ़िल्मों के गीत लिखे। मुशायरों में वे लखनवी रंग की इश्क़-ओ-मुहब्बत की रूमानी ग़ज़लें पढ़ा करते थे, जिन्हें ख़ूब दाद मिलती थी। 'बुरा हो इस मुहब्बत का हुए बरबाद घर लाखों/वहीं से आग लग उट्ठी ये चिंगारी जहां रख दी।' आरज़ू लखनवी ने लंबी उम्र पाई। अदबी काम करने के साथ-साथ ज़िंदगी भर वे रोज़गार की उलझनों में उलझे रहे। इज़्ज़त, शोहरत ख़ूब मिली। पैसा भी कमाया, लेकिन उसे संभाल नहीं सके। माल-ओ-दौलत से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। अपनी सादा तबीयत के चलते, पैसे के मामले में वे बेहद लापरवाह थे। यही वजह है कि हर दम तंगहाली में रहे। इक्यासी साल की उम्र में कराची (पाकिस्तान) में 16 अप्रैल, 1951 को उन्होंने इस जहान-ए-फ़ानी से अपनी रुख़सती ली।

फ्रांसिसी कहानी

■ मोपासां
अनुवाद : प्रेमचन्द गांधी

दरख्तों से सरसब्ज पहाड़ी पर पुराने फैशन की एक हवेली थी। ऊंचे और लंबे छायादार पेड़ों की हरियाली उसे घेरे हुए थी। एक विशाल बाग था, जिसके आगे घना जंगल और फिर एक खुला मैदान था। हवेली के सामने की तरफ पत्थर का एक विशालकाय जलकुंड था, जिसमें संगमरमर में तराशी हुई परियां नहा रही थीं। ढलान पर एक के बाद एक कई कुंड थे, जिनमें से पानी की एक धारा अदृश्य फव्वारे की तरह नाचती हुई एक जलप्रपात का आभास देती थी।

इस सामंती आवास में एक नाजुक मिजाजी और नफासत को करीने से सहेजा गया था। शंख और सीपियों से सजी एक गुफा में पुराने जमाने की प्रेमकथाएं सोई हुई थीं। एक तरह से कहें तो पूरी हवेली में पुराने वक्त को सहेजकर रखा गया था। ऐसा लगता था जैसे कोई भी चीज अभी बस बोल ही पड़ेगी। बैठक की दीवारों पर पुरातन शैली की पेंटिंग्स थीं, जिनमें सम्राट लुई-15 के साथ भेड़ें चराते चरवाहे और घने घेरदार लहंगों में सुंदरियों के साथ विग पहने जांबाज आशिक चित्रित किए गए थे। एक लंबी आराम कुर्सी में एक बहुत ही बूढ़ी औरत बैठी थी। अगर वह हिलती-डुलती नहीं तो उसके मृत होने का आभास होता। उसके अनावृत पतले हाथों की चमड़ी बिल्कुल मिस्र की ममियों जैसी लगती थी।

उसकी निगाहें दूर क्षितिज में कुछ खोज रही थीं। ऐसा लगता था जैसे वह बाग में अपनी जवानी के दिन याद कर रही हो। खिड़कियों से हरियाली और फूलों में नहाकर आई हुई खुशबूदार हवा उसके झुर्रियों भरे माथे को छूकर उसे यादों के समंदर में लिए जा रही थी। उसके पास ही सुंदर परदे से ढंकी स्टूल पर एक युवती बैठी थी जिसके बाल हवा में उड़ रहे थे। वह एक कपड़े पर कढ़ाई कर रही थी। उसकी आंखों में कुछ तनाव और माथे पर चिंता की लकीरें दिख रही थीं। लग रहा था वह कढ़ाई तो कर रही है लेकिन उसका दिलो-दिमाग कहीं और खोया हुआ है। बुढिया ने तुरंत ही लड़की को अपनी तरफ देखने के लिए विवश कर दिया।

'बेर्थे, अखबार में से कुछ पढ़कर सुनाओ ना। ताकि मुझे भी तो पता चला कि दुनिया में क्या हो रहा है?' लड़की ने अखबार उठाया और तेजी से मुआयना करते हुए कहा, 'इसमें राजनीति की एक बड़ी खबर है, इसे तो छोड़ दूं ना दादी मां?' 'हां बेटी, हां। क्या कहीं कोई प्रेम-प्रसंग की खबर नहीं है? क्या फ्रांस में आशिक मिजाजी और प्यार-मोहब्बत मर चुकी है, जो अब हमारे जमाने जैसी प्रेम-प्रसंगों की चर्चा ही बंद हो गई है?'

लड़की देर तक अखबार के पन्नों के कोने-कोने तलाश करने के बाद बोली, 'यह मिल गई एक खबर। इसका हैडिंग है 'एक प्रेम प्रसंग।' बुढ़िया के झुर्रियों भरे चेहरे पर मुस्कान खेलने लगी, 'हां मुझे यह खबर सुनाओ।' यह तेजाब फेंकने की एक घटना थी, जिसमें एक स्त्री ने अपने पति की प्रेमिका से बदला लेने के लिए उस पर तेजाब फेंक दिया था। प्रेमिका की आंखें जल गई थीं। अदालत ने उस स्त्री को बाइज्जत बरी कर दिया था और लोगों ने फैसले की तारीफ की थी। सुनकर दादी मां उत्तेजना में चिल्लाईं, 'यह तो भयानक है बेहद खौफनाक! देखो बेटी, शायद तुम्हें मेरे मतलब की कोई खबर मिले?'

लड़की ने वापस अखबार को खंगाला तो अपराध के समाचारों में से पढ़कर सुनाने लगी।

'उदास नाटक- दुकान पर काम करने वाली एक लड़की, जो ज्यादा जवान नहीं थी। उसने एक नौजवान के प्यार में डूबकर खुद को समर्पित कर दिया लेकिन प्रेमी बेवफा निकला। लड़की ने बदला लेने के लिए अपने प्रेमी को गोलियों से भून दिया। लड़का जिंदगी भर के लिए अपाहिज हो गया। अदालत ने लड़की को बरी कर दिया और जनता ने फैसले की तारीफ की।'

खबर सुनकर दादी मां को गहरा धक्का लगा और वे कांपते हुए कहने लगीं, 'क्यों आजकल के लोग पागल हो गए हैं? तुम लोग पागल हो! ईश्वर ने जीवन के लिए सबसे बड़ा वरदान इंसान को प्रेम के रूप में दिया है। मनुष्य ने इसमें शिष्टता और रसिकता जोड़ी है। हमारे नीरस क्षणों को आल्हादित करने वाली चीज है प्रेम, जिसे तुम्हारी पीढ़ी के लोग तेजाब और बंदूकों से ऐसे खराब कर रहे हैं, जैसे उम्दा शराब में मिट्टी डाल दी जाए।' लड़की दादी के क्रोध और झुंझलाहट को नहीं समझ पाई। कहने लगी, 'दादी मां उस औरत ने बिल्कुल सही किया। वह शादीशुदा थी और उसका पति उसे धोखा दे रहा था।' दादी मां बोलीं, 'पता नहीं ये लोग आजकल की लड़कियों के दिमाग में कैसे-कैसे विचार ठूंस रहे हैं?'

लड़की ने जवाब दिया, 'लेकिन दादी मां, शादी एक पवित्र बंधन है।'

दादी मां का जन्म पराक्रम और आशिक मिजाजी के दौर में हुआ था। वह अपने दौर में डूबकर दिल से कहने लगी, 'सुनो बेटा, मैंने तीन पीढियां देखी हैं। शादी और प्यार में कोई समानता नहीं है। हम परिवार के लिए शादी करते हैं और शादी को खारिज नहीं कर सकते। अगर समाज एक जंजीर है तो हर परिवार उसकी एक कड़ी है। इन कडियों को जोडने के लिए हम वैसी ही चीजें ढूंढते हैं जिनसे यह जंजीर बनी रहे। हम शादी करते हैं तो कई चीजें मिलाते हैं जाति, समाज, धन-दौलत, भविष्य, रुचियां आदि-आदि। दुनिया हमें मजबूर करती है इसलिए हम एक बार शादी करते हैं लेकिन जिंदगी में हम बीसियों बार प्रेम कर सकते हैं क्योंकि कुदरत ने हमें ऐसा ही बनाया है। तुम जानती हो बेटी, शादी एक कानून है और प्यार करना इंसान की फितरत। यह फितरत ही हमें कभी सीधे तो कभी टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलने के लिए मजबूर करती है। दुनिया ने कानून इसलिए बनाए हैं कि इनसे इंसान की मूल प्रवृत्तियों को काबू में किया जा सके। ऐसा करना जरूरी भी था लेकिन हमारी मूल प्रवृत्तियां ज्यादा शक्तिशाली हैं, हमें इनका विरोध नहीं करना चाहिए क्योंकि ये हमें ईश्वर ने दी हैं जबकि कानून इंसान ने बनाए हैं। अगर हम जीवन में प्यार की खुशबू नहीं भरेंगे तो जिंदगी बेकार हो जाएगी। यह ऐसा ही है जैसे बच्चे की दवा में चीनी मिलाकर देना।'

बेर्थे की आंखें आश्चर्य से खुली रह गईं। वह बड़बड़ाई, 'ओह, दादी मां, हम प्यार सिर्फ एक बार कर सकते हैं।'

दादी मां ने आसमान की ओर अपने कांपते हाथों को ऐसे उठाया जैसे कामदेव का आवाहन कर रही हों। फिर उत्तेजना में कहने लगीं, 'तुम लोग बिल्कुल गुलामों जैसे हो गए हो, बिल्कुल सामान्य। तुम लोगों ने हर काम को भारी-भरकम शब्दों में बांध दिया है और हर जगह कठिन कर्तव्यों के बंधन बांध दिए हैं। तुम लोग समता और शाश्वत लगाव में यकीन रखते हो। तुम्हें यह बताने के लिए कि कइयों ने प्यार में जान कुर्बान की है, अनेक कवियों ने कविताएं लिखी हैं। हमारे जमाने में कविता का मतलब होता था पुरुष को स्त्री से प्रेम करना सिखाना। प्रत्येक स्त्री से प्रेम करना और हम! जब हमें कोई भा जाता था तो हम उसे संदेश पहुंचाती थीं। जब नए प्रेम की उमंग हमारे मन में जागती थी तो हम पिछले प्रेमी से किनारा करने में भी देर नहीं लगाती थीं। हम दोनों से भी प्रेम कर सकती थीं।'

बुढिया एक रहस्यमयी ढंग से मुस्कुराई। उसकी बूढ़ी-भूरी आंखों में एक ऐसी चमक थी और चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे वह किसी और ही मिट्टी की बनी हो। जैसे कोई शासक हो, सारे नियम और कायदे-कानूनों से ऊपर। लड़की का रंग पीला पड़ गया था। वह बड़बड़ाते हुए बोली, 'इसका मतलब उस जमाने में औरतें मर्यादाहीन आचरण करती थीं?' दादी मां ने मुस्कुराना बंद किया। ऐसा लगता था जैसे उसके दिल में वाल्तेयर की विडंबना और रूसो की दार्शनिकता गहरे समाई हुई हो। 'इसलिए कि हम प्यार करके उसे स्वीकारने की हिम्मत रखती थीं, यहां तक कि गर्व से बताती थीं। मेरी बच्ची अगर उस जमाने में किसी स्त्री का प्रेमी नहीं होता था तो लोग उसका मजाक उड़ाते थे। तुम्हें लगता है कि तुम्हारा पति जिंदगी भर सिर्फ तुमसे ही प्यार करता रहेगा, यह हो भी सकता है। मैं तुमसे कहती हूं कि शादी समाज के अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है लेकिन यह मनुष्य जाति की मूल प्रवृति नहीं है। कुछ समझीं क्या तुम? जीवन में एकमात्र खूबसूरत चीज है प्रेम और सिर्फ प्रेम। तुम इसे कैसे गलत समझ सकती हो? कैसे खराब कर और कह सकते हो? तुम इसे किसी रस्म-रिवाज या संस्कार की तरह क्यों समझते हो? जैसे कि कोई कपड़ा खरीदकर लाना हो।'

लड़की ने बुढ़िया के कांपते हाथों को अपने हाथों में थामते हुए कहा, 'चुप करो दादी मां। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं अब और नहीं... बस करो।'

वह अपने घुटनों के बल झुककर, आंखों में आंसू भरकर प्रार्थना करने लगी कि ईश्वर उसे एक सघन, गहन और अमर प्रेम का आशीर्वाद दे। एक ऐसा प्रेम जो आधुनिक कवियों का स्वप्न है। जबकि दादी मां ने बड़े प?यार से उसका माथा चूमा। अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिकों के उस तर्क पर विश्वास और आस्था जताते हुए, जिसने जिंदगी को अपने वक्त में इश्क के नमक से जायकेदार बना दिया था, दादी मां ने कहा, 'सावधान! मेरी प्यारी बच्ची। अगर तुम इन मूर्खतापूर्ण बातों पर विश्वास करोगी तो जिंदगी में कभी सुखी नहीं रह पाओगी।'

पुस्तक मेला और एटीएम से निकलती पुस्तकें

■ सुधाकर आशावादी

व्यंग्य

पुस्तक मेला आयोजित हो और पुस्तकों की चर्चा न हो, ऐसा संभव नही हो सकता। एक समय था कि जब शिक्षा, साहित्य से जुड़े लेखकों, पाठकों को पुस्तक मेले की प्रतीक्षा रहा करती थी। अब पुस्तक मेला औपचारिकता निभाने तक सीमित रह गया है। प्रकाशक केवल अपनी पुस्तकों की प्रदर्शनी हेतु ही मेले मे अपना स्टाल लगाते हैं। आजकल एटीएम युग है। यूँ तो एटीएम धन उगलने वाली मशीन है, पुस्तकें प्रिंटिंग मशीन से ही छपती हैं। एटीएम और प्रिंटिंग मशीन की कोई तुलना नही की जा सकती, मगर तर्क अब किसे सुहाते हैं। एटीएम भी तभी धन देगा, जब व्यक्ति के बैंक खाते में धन होगा। राह चलते तो किसी को धन नहीं देगा। पुस्तक प्रकाशन भी अब इसी स्थिति में है। बुरा मानो या भला, कड़वा सच यही है। हर वर्ष ऐसा ही होता है। पुस्तक मेले में पुस्तकें केवल विज्ञापन के लिए उपलब्ध होती हैं। बिक्री के लिए नहीं। कुछ पुस्तकें बिकती भी हैं, मगर किस की पुस्तकें बिकती हैं, हर कोई जानता है। किसी सेलिब्रिटी की, किसी नामी गिरामी हस्ती की, किसी छद्म लेखक की। अब मौलिक रचनाकार की बात न ही की जाए तो अच्छा है। जब से सोशल मीडिया का युग आया है. पुस्तक मेले में पुस्तक का विज्ञापन कम आत्ममुग्ध लेखक का प्रचार अधिक होता है। कोई भूला भटका वरिष्ठ रचनाकार यदि किसी बुक स्टाल पर उपस्थित जाए, तो यह स्टाल के लिए भी बड़ी उपलब्धि होती है और वहाँ अपनी पुस्तकों को निहार रहे लेखकों के लिए भी। ऐसे में अति उत्साही लेखक उसके इर्द इर्द बैठकर इतराने से परहेज नहीं करते, इधर मोबाइल से फोटो खींचा, उधर फेसबुक, इंस्टाग्राम सहित सोशल मीडिया पर चस्पा करने में देर नहीं लगाते। तिस पर भी लेखकों की शिकायत रहती है, कि अब पहले जैसे पाठक नहीं रहे। पुस्तकों से पाठकों की दूरी बढ़ती जा रही है। सच भी है, सोशल मीडिया पर विभिन्न समूहों में जब उन्हें मनभावन किस्से कहानियां पढ़ने को मिलेंगी, तब वे पुस्तकों के बारीक शब्दों पर नजर क्यों गड़ाएं ? किसी भी आत्ममुग्ध लेखक की रचनाओं को पढ़ने के लिए जेब ढीली क्यों करें ? जबकि वे जानते हैं कि आधे से अधिक किताबें उन लोगों की हैं, जिनका स्वाध्याय या लेखन से कोई सरोकार ही नहीं है। जिनके नाम पुस्तक के शीर्षक से साथ लेखक के रूप में प्रकाशित हैं, वे उन पुस्तकों के प्रत्यय को जानते ही नहीं। अपनी ही पुस्तक के बारे में बता नहीं सकते, कि अपनी पुस्तक में उन्होंने क्या लिखा है। अब पुस्तकें दीर्घकालीन बैठक का सुपरिणाम नहीं होती। अब सब कुछ फटाफट है। इधर प्रकाशक के खाते में पैसा डालो, उधर तीसरे दिन अपने नाम की पुस्तक छपी हुई पाओ, चौथे दिन पुस्तक का विमोचन कराओ, पुस्तक बिके या न बिके, मगर लेखक की गिनती में नाम तो अंकित कराया ही जा सकता है। इतिहास साक्षी है कि एक समय लेखन के क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं हुआ करती थी। जिसे तनिक सी भी कलम पकड़नी आती थी तथा जो कल्पनाओं की ऊँची उड़ान भरने में महारत रखता था, उसकी शर्तों पर प्रकाशक पुस्तकें प्रकाशित किया करते थे। कुछ लेखकों को जीते जी उतना कुछ नहीं मिला, जितना उनकी मृत्यु के उपरांत उनके उत्तराधिकारियों को रॉयल्टी के रूप में मिल गया। अब स्थिति सर्वथा प्रतिकूल है। मौलिक लेखक अपनी कल्पनाओं को कागज पर उकेर कर जब प्रकाशक के पास जाता है, तब प्रकाशक उसके सम्मुख अपना दुखड़ा रोने लगता है कि अब पुस्तक प्रकाशित करना लाभ का सौदा नहीं रह गया है, जब पुस्तकें बिकती नहीं, तो प्रकाशित करने से क्या लाभ ? तदुपरांत प्रकाशक मूल विषय पर आकर प्रस्ताव रखता है कि यदि अपनी मौलिक कृति प्रकाशित कराने का संकल्प पूरा करना है, तो अपना आर्थिक योगदान देकर पुस्तक प्रकाशित कराएं ? लेखक यदि गरीब हुआ तो उलटे पाँव घर लौट जाएगा, यदि धनवान होगा, तो लागत मूल्य से चौगुना मूल्य देकर भी पुस्तक प्रकाशित कराएगा। ऐसे में ऐसे कुछ व्यापारी, कुछ उद्योगपति प्रकाशक के लिए दुधारू गाय बन जाते हैं, जिनका लेखन से कोई सरोकार नहीं होता। धंधा चाहे कोई भी हो, ईमानदारी से संचालित किया जाना सरल नहीं होता। पुस्तक मेला भी इस धंधे से अछूता भला कैसे रह सकता है। प्रकाशक को अपने धंधे का विस्तार करना है, तो पुस्तक मेले में उसके द्वारा प्रकाशन का स्टाल लगाया जाना और उस पर प्रकाशन की सैकड़ों पुस्तकें सजाया जाना अपेक्षित होता ही है। सब दिन सभी के लिए एक से नहीं नहीं रहते, कभी दिन बड़े और रातें छोटी, तो कभी की रातें बड़ी और दिन छोटे होते ही हैं। पुस्तक का प्रकाशन त्वरित गति से होता है। आज प्रकाशक के खाते में पैसे जमा कराओ, तीसरे दिन एटीएम से धन निकासी की तरह प्रकाशित पुस्तक निकालो। पुस्तक एटीबी की स्थापना तथा लेखकों की आत्ममुग्धता की सलामती के लिए जैसे भी तरीके अपनाएं जाने आवश्यक होते हैं, उन तरीकों के विज्ञापनों की सोशल मीडिया पर भरमार रहती है तथा पुस्तक प्रकाशन के लिए आकर्षक ऑफर की संख्या पुस्तक मेले के आयोजन से पहले अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि जो आनंद पुस्तक मेले में किसी स्टाल पर सजी अपनी पुस्तक को देखने से किसी लेखक को मिलता है, उसे शब्दों में व्यक्त करने के लिए आत्म मुग्ध लेखकों के पास भी शब्द कम पड़ जाते हैं।

- सुधाकर आशावादी
ब्रह्मपुरी, मेरठ

दो ग़ज़लें

■ बशीर बद्र

1

अगर तलाश करूं कोई मिल ही जाएगा
मगर तुम्हारी तरह कौन मुझ को चाहेगा

तुम्हें ज़रूर कोई चाहतों से देखेगा
मगर वो आँखें हमारी कहाँ से लाएगा

न जाने कब तिरे दिल पर नई सी दस्तक हो
मकान ख़ाली हुआ है तो कोई आएगा

मैं अपनी राह में दीवार बन के बैठा हूँ
अगर वो आया तो किस रास्ते से आएगा

तुम्हारे साथ ये मौसम फ़रिश्तों जैसा है
तुम्हारे बाद ये मौसम बहुत सताएगा

छुपाले मुझे अपने आंचल में
और उतार दे, मेरी नजर
चाहे पान से या मिर्ची से
या फटी पुरानी चिन्दी से
क्योंकि मेरे जन्म दिन पर आये
कुछ लोग,
मेरे घुंघरेले काले बालों को
गोरे-गोरे गालों को
पिताजी द्वारा लाई जोधपुरी जूती
पहने मलमली जरीदारी कुर्ते को
भर नजर देख रहे थे
शायद, उन्होंने कल्पना ना की होगी
ठुमक चलत रामचंद्र
बाजत पैजनियां की
माथे पर मोर मुकुट और
श्याम की करधनियां की
इसलिए तो कहता हूं
मां उतार दे मेरी नजर
और छिपा ले मुझे
अपने आंचल में

- किरण गोविन्द उपाध्याय

''शहर का यातायात राम भरोसे''

ई वी ऑटो की धमाचौकड़ी और अव्यवस्थित ट्रेफिक से शहरवासी हलाकान

जबलपुर, देशबन्धु। आजकल शहर की सड़कों, चौराहों से निकलना एक जंग से कम नहीं है, और चौराहों पर तो सर्कस जैसा हाल है, जिसको जहां से जगह मिली वहीं से निकल रहा है, सही, गलत कोई नहीं देख रहा। रानीताल, ज्योति टाकीज, रसल चौक, हाईकोर्ट से वर्किंग आवर मे निकलना, एक टेढ़ी खीर है। एक समय शहर का यातायात रिक्शों के मकड़जाल में उलझा था, शहर मे आए दिन लोग रिक्शे वालों से उलझते रहते, बेचारे गरीब थे, इसलिए मार भी खाते रहे, अर्थव्यवस्था को उड़ान देने के लिए, और बेरोजगारी पर लगाम लगाने के लिए ऑटो के लोन धड़ाधड़ बांटे जाने लगे इसमे सब्सिडी थी,।

अब शहर ऑटो की धमाचौकड़ी से हलाकान हो गया। नागरिकों को तेज़ यातायात सुलभ करने का प्रयास तब घातक सिद्ध होने लगा, जब आए दिन ऑटो लोगों की जान लेने लगा, समय बदला नीतियां बदली, पर्यावरण को साफ़ रखने के दबाव सरकार पर था, इसलिए इलेक्ट्रिक व्हीकल को बढ़ावा दिया जाने लगा, इसे आकर्षित बनाने के लिए सब्सिडी दी जाने की घोषणा बजट मे की गई, डीज़ल ऑटो मे अघोषित रोक लगाई जाने लगी। बहरहाल अब शहर ई वी ऑटो के मकड़जाल से हलाकान है। मूल बात ये है कि शहर को एक व्यवस्थित यातायात के प्रभावी प्रयास और सोच हमेशा ही नदारद रही, फोटो खिचाऊ प्रयास जमके हुए, नेता और प्रशासन दोनो ने खूब फोटो खिंचाई। माननीयों ये बताने का खूब प्रयास किया शहर और युवाओं के लिए हम ही हैं ।लोन बांटते हुए फोटो खिंचा कर नेताओं ने खूब वाहवाही बटोरी प्रशासनिक अधिकारी भी इसमें कहां पीछे रहने वाले थे मीडिया साथ लेके खूब गुलाब बांटे एक आईपीएस ने तो फ्री के हेलमेट तक बांट डाले नगर निगम के सामने , जनता का भला हुआ या नहीं लेकिन उनकी सी आर जरूर अच्छी हो गई।

शहर को मुंह चिढ़ाती इस अव्यवस्था की जिम्मेदारी लेने कोई तैयार नहीं। यातायात पुलिस कहती हैं, हमारा काम व्यवस्था बनाना है, जनता पूछ रही है आप चालान काटते हैं, तेजगति से वाहन चलाने के नाम पर, तो गति सीमा के संकेतक कहां है, और डेड स्लो का तो पूरे शहर में एक भी बोर्ड नहीं है, ट्रैफिक सिग्नल के टाइमर खराब है। हद तो ये है कि हजारों रूपए मेंटीनेस के नाम पर खर्च करके भी सिग्नल ठीक नहीं हो पा रहे और टाइमर तो हर चौराहे के तीन चार दिन से ज्यादा काम कर ही नहीं पाते। इस तरह की फ़ोटो खिचाउ प्रयासों से शहर का यातायात राम भरोसे ही है।

फर्जी दस्तावेज बनाने वाले गिरोह पर तगड़ी कार्यवाही करें: कलेक्टर

जबलपुर, देशबन्धु। कलेक्टर दीपक सक्सेना की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। जिसमें राजस्व महाअभियान की समीक्षा करते हुए उन्हों ने नक्शा बटांकन, आधार से आरओआर लिंकिंग, फार्मर रजिस्ट्री , बंटवारा, नामांतरण, सीमांकन, धारणाधिकार तथा आरसीएमएस में दर्ज प्रकरणों की तहसीलवार समीक्षा की। उन्हों ने सभी एसडीएम व तहसीलदारों को निर्देशित किया कि राजस्व महाअभियान अंतर्गत सभी कार्यो में प्रगति लायें, इसमें लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जायेगी। इसके साथ ही कहा कि सीएम हेल्पलाईन के प्रकरणों को गंभीरता से लें और उनका निराकरण करें। प्रकरणों के निराकरण से जिले की रैंकिंग में सुधार होगी। इस दौरान कलेक्टर श्री सक्सेना ने एक-एक प्रकरणों की समीक्षा कर उनके निराकरण के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम और तहसीलदार फील्डप विजिट करें और अपने-अपने कार्य को देखें। पेंडिंग प्रकरण न बढ़े इसके लिए लगातार उनके निराकरण करते रहें। उन्होंने कहा कि लंबे समय से एक ही जगह रहने वाले पटवारियों को दूसरी जगह देना सुनिश्चित करें। नये पटवारियों को अच्छे ढंग से प्रशिक्षित करें। जिस तहसील में ज्याहदा सीमांकन के प्रकरण है वहां दूसरे तहसील से सीमांकन मशीन मंगाकर कार्य पूर्ण करें। उन्होंजने अपर कलेक्टर को निर्देशित किया कि तहसील न्यायालयों के निरीक्षण का शैडयूल बनाये। वहीं सभी एसडीएम से कहा कि राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिए शिविर लगायें।

कलेक्टर श्री सक्सेना ने विशेष रूप से कहा कि जिले में फर्जी जाति प्रमाण पत्र बनाने वाले रैकेट पर तगड़ी कार्यवाही करे। फर्जी हस्ताक्षर व फर्जी आदेश पर तत्काल एफआईआर दर्ज करायें। शासकीय प्रक्रिया में जहां कहीं भी फर्जी कागजात मिले तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि दस्तावेजों की जांच करें, यदि फर्जी है तो इसमें संलिप्त व्यक्तियों पर प्रभावी कार्यवाही करें।

ज्ञान गंगा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज में बूटकैम्प समापन समारोह

जबलपुर, देशबन्धु। एआईसीटीई (ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन) और शिक्षा मंत्रालय के इनोवेशन सेल द्वारा प्रायोजित पाँच दिवसीय इनोवेशन, डिज़ाइन और एंटरप्रेन्योरशिप बूटकैम्प स्टेज II का समापन समारोह ज्ञान गंगा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज, जबलपुर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के दृष्टिकोण के तहत आयोजित किया गया है।

समापन समारोह की शुरुआत मान्यवरों का स्वागत करते हुए की गई। इसके बाद डॉ. नीता नाथानी और डॉ प्रीति राय ने बूटकैम्प की यात्रा के बारे में विस्तार से बताया। एआईसीटीई के श्री नितिन कुमार ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी टीमों और मेजबान संस्थान ज्ञान गंगा को बधाई दी। इसके बाद, संस्थान के प्राचार्य डॉ. रविंद्र वी. क्षीरसागर (नोडल कोऑर्डिनेटर) ने संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने बूटकैम्प की सफलता की सराहना की। उन्होंने डुमना नेचर पार्क में प्रतिभागियों के गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए जबलपुर के महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू को धन्यवाद दिया। डॉ. रजनीत जैन ने सभी छात्रों को अनुशासन बनाए रखने और पूरे समर्पण के साथ शिविर में भाग लेने के लिए बधाई दी। इसके बाद, डॉ. अशोक वर्मा (SPOC) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने सभी प्रतिभागियों, संकाय सदस्यों और मान्यवरों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर प्रमुख व्यक्तित्वों की उपस्थिति रही, जिनमें श्री नितिन कुमार (एआईसीटीई), शैख वसीम (वाधवानी फाउंडेशन), इंजीनियर डी.सी. जैन, अध्यक्ष, डॉ. राजनीत जैन, सचिव, डॉ. पंकज गोयल, इंजीनियर अपूर्व सिंघई, इंजीनियर विशेष जैन और अन्य प्रतिष्ठित संकाय सदस्य शामिल थे। इस कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर तोयेशा नागदेव ठाकुर और प्रोफेसर ऋचा वैरागी द्वारा किया गया, जिन्होंने समारोह को सफलता पूर्वक और ऊर्जा से संचालित किया।

8 मार्च को नेशनल लोक अदालत का आयोजन

जबलपुर, देशबन्धु। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली के निर्देशानुसार पूरे देश में 08 मार्च 2025 को नेशनल लोक अदालत का आयोजन तालुका स्तर से सर्वोच्च न्यायालय तक किया जा रहा हैं। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जानकारी दी गई कि इसी अनुक्रम में राज्य प्राधिकरण एवं प्रधान जिला न्यायाधीश श्री आलोक अवस्थी के मार्गदर्शन में जिला न्यायालय जबलपुर एवं तहसील न्यायालय सिहोरा एवं पाटन में लोक अदालत का आयोजन किया जावेगा।

लोक अदालत में राजीनामा योग्य प्रीलिटिगेशन एवं न्यायालय में लंबित प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा, जिसके अंतर्गत चैक बाउंस के केसेस, आपराधिक राजीनामा योग्य प्रकरण, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण, पारिवारिक विवाद से संबंधित प्रकरण एवं अन्य सभी प्रकार के सिविल प्रकृति के प्रकरण जिनका निराकरण राजीनामा से हो सकता है। इस लोक अदालत में इस लोक अदालत में निराकृत किये जायेंगे। उन्होंमने कहा कि अभी तक समस्त न्यायालयों से लगभग 10487 प्रकरण लोक अदालत के लिए चिन्हित कर रेफर किये गये है। पूर्व की भांति नेशनल लोक अदालत में बिजली विभाग एवं नगर निगम के अंतर्गत संपत्तिकर एवं जलकर के मामलों में छूट प्रदान की जायेगी। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने कहा कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर जिले के नागरिको को नि:शुल्क एवं सक्षम विधिक सलाह एवं सहायता प्रदान करने में सदैव तत्पर है। देश का कोई भी नागरिक 15100 नंबर डायल कर अपने मोबाईल से भी विधिक सलाह एवं सहायता प्राप्त कर सकता है।

ब्रांडेड दूध के दाम घटे पर खुले दूध के दाम जस के तस

जबलपुर,देशबन्धु। एक तरफ दिग्गज डेयरी कम्पनी अमूल ने जनवरी माह में दूध की कीमतों में 1 रूपए प्रति लीटर की कटौती की थी लेकिन खुले दूध की कीमत जस की तस 70 रूपए प्रति लीटर पर टिकी हुई है। जबकि अमूल कम्पनी ने आम उपभोक्ताओं को महंगाई को देखते हुए राहत दी थी लेकिन दूध माफियाओं ने दूध की कीमतों में अभी तक कोई कटौती नहीं की है। कहीं ऐसा न हो कि एक बार फिर से दूध के दाम महंगाई की आड़ लेकर फिर से बढ़ा दिये जायें। वर्तमान में वैवाहिक सीजन के चलते दूध सहित डेयरी उत्पादों की मांग अधिक है। आलम यह है कि इन दिनों सबसे ज्यादा मांग पनीर और दही की है, जिसकी आपूर्ति कम होने के कारण किसी किसी दिन भाव भी ऊंचे कर दिए जाते हैं।

इन दिनों पनीर की कीमत 360 रूपए से लेकर 380 रूपए किलो तक चल रही है।

दूध से बने उत्पाद के भाव भी आसमान पर

दही की कीमत बढ़कर 100-120 रूपए किलो पर पहुंच चुकी है वहीं सरपेटा दही 60-70 रूपए किलो के भाव तक बिक रहा है। घी की कीमत आसमान छू रही है। गाय का घी 720 रूपए किलो की ऊंचाई पर पहुंच चुका है। जबकि भैंस का घी 640-650 रूपए किलो के भाव से बिक रहा है। इसके अलावा मही 20 रूपए, खोवा 240-300 रूपए, मक्खन 540-550 रूपए व क्रीम 340 रूपए किलो के भाव पर बिक रही है। कुल मिलाकर दूध सहित डेयरी उत्पादों की महंगाई सिर चढ़कर बोल रही है। आम उपभोक्ता और गरीब की पहुंच से दूध व डेयरी उत्पाद पहुंच से दूर होते जा रहे हैं, उनकी खरीद क्षमता घटने लगी है। दूध की लगातार कीमत बढ़ने से जो उपभोक्ता पहले 1 लीटर दूध खरीदते थे, उनमें से कई उपभोक्ता आधा लीटर की खरीद पा आ गए हैं। दूसरी तरफ गरीब अपने बच्चों को दूध का भरपूर आहार ऊंची कीमतों के कारण नहीं दे पा रहे हैं। पिछले 2-3 बार जो दूध के दाम बढ़ाए गए हैं, वह बढ़ोतरी गुप-चुप तरीके से कर दी गई और जिसका झटका उपभोक्ताओं को लगातार लग रहा है। दूध की महंगाई से आम उपभोक्ता और गरीब हलाकान है लेकिन उनकी इस पीड़ा को सुनने वाला कोई जिम्मेदार नजर नहीं आ रहा है।

स्काउट्स एंड गाइड्स ने मनाया विश्व विचार दिवस

जबलपुर, देशबन्धु। भारत स्काउट गाइड मध्य प्रदेश जिला संघ जबलपुर द्वारा राज्य मुख्यालय भोपाल के आदेशानुसार और सहायक राज्य संगठन आयुक्त ललित कुमार मिश्रा एवं जिला शिक्षा अधिकारी पदेन जिला कमिश्नर स्काउट घनश्याम सोनी के मार्गदर्शन में 22 फरवरी को स्काउटिंग के संस्थापक लार्ड बेडेन पावेल एवं लेडी बेडेन पॉवेल का जन्म दिवस जिसे गर्ल गाइड्स और गर्ल स्काउट्स आंदोलन के अतीत वर्तमान और भविष्य को किस प्रकार बेहतर बनाए की थीम पर मनाया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रिंकुंज विज अध्यक्ष, नगर निगम जबलपुर एवं अध्यक्ष जिला संघ जबलपुर, विशिष्ट अतिथि अजय तिवारी जिला संरक्षक, डॉ विजयकांत तिवारी जिला मुख्य आयुक्त जिला संघ जबलपुर, देवेन्द्र कुमार भट्ट जिला संघ जबलपुर रहे। जिला संघ द्वारा आयोजित क्लाइमेट चेंज और स्काउट का समृद्ध इतिहास विषय पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रथम पुरुस्कार विहान देवरगढ़ , द्वितीय पुरस्कार यशिका, तृतीय पुरस्कार सृष्टि कोल को मिला।

इस अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्रथम स्थान सेंट नॉरबर्ट हायर सेकेंडरी स्कूल जबलपुर और द्वितीय पुरस्कार यश नर्सरी हायर सेकेंडरी स्कूल जबलपुर को मिला। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला सचिव व्ही.के. झारिया , संयुक्त सचिव अमिता चौधरी, मंत्रों इक्का, प्रतिभा दुबे, अंजना वर्मा के सहयोग से पूर्ण हुआ।

महाप्रबंधक ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से दिये दिशा निर्देश

सेफ्टी इन्फ्रास्ट्रेक्चर की समीक्षा बैठक

जबलपुर, देशबन्धु। पमरे की महाप्रबंधक शोभना बंदोपाध्याय जोन की 'सेफ्टी इन्फ्रास्ट्रेक्चर' कार्यों को लेकर अत्यंत गंभीरता बरत रही हैं। महाप्रबंधक का मानना संरक्षित एवं सुरक्षित रेल संचालन किया जाना पहली प्राथमिकता है। इस मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आम यात्रियों का रेलवे पर सबसे ज्यादा विश्वास बढ़ा हुआ है। इसको बरकरार रखना सभी की नैतिक जिम्मेदारी है।

सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार महाप्रबंधक शोभना बंदोपाध्याय प्रति दिन मंडल रेल प्रबंधक जबलपुर भोपाल एवं कोटा से वीडिओ कांफ्रेसिंग के माध्यम से आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए हैं। महाप्रबंधक ने रेलवे अधिकारियों को निर्देश जारी करते हुए कहा कि सभी अधिकारी विभाग की आय बढ़ाने के प्रति गंभीरता से प्रयास करें जिससे कि यात्रियों को अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध करायी जाए जिससे कि यात्रियों का आकर्षण रेलवे की ओर हमेशा बढ़ता जाए।

महाप्रबंधक का कहना है कि गति शक्ति मल्टी माडल कार्गो टर्मिनल जीएसटी और प्रायवेट फ्रेट टर्मिनल पीएफटी को विकसित करने गुडस ट्रैफिक में सुधार रेलवे लाइनों एवं ट्रेनों के सैफ्टी अनुक्षण जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर सभी की अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्कयता है।

महाप्रबंधक शोभना बंदोपाध्याय ने निर्देशित किया कि अधोसंरचना कार्यों के दौरान नई रेल लाइनों एवं यार्डों और संवेदनशील रेलखंडों में संबंधित अनुभाग अभियंताओं द्वारा समय समय पर समीक्षा एवं निरीक्षण करना और सभी स्थानों पर गेटमैन की नियमित पेट्रोलिंग व सेफ्टी के दौरान रेल कर्मियों को मिलने वाली सुविधाओं और सेफ्टी उपकरण की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए हैं।

उल्लेखनीय है जोन के अंतर्गत कई शहरों में लूप लाइन हैं उनको भी महत्व दिया जाए। यहां इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि रेलवे बोर्ड दिल्ली द्वारा जारी किए गए प्रत्येक निर्देश का पालन कराए जाने के लिए शोभना बंदोपाध्याय प्राथमिकता के लिए हमेशा सक्रियता बरतती हैं।

जबलपुर ने भोपाल को दिया 251 रन का लक्ष्य

जबलपुर, देशबन्धु। मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में स्थानीय नीमखेड़ा मैदान पर चल रही राजर्षि परमानंद भाई पटेल अंडर 22 क्रिकेट ट्रॉफी के पूल बी के अंतिम लीग मैच में आज जबलपुर एवं भोपाल का मुकाबला प्रारंभ हुआ।

जबलपुर ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया किंतु उनका यह निर्णय सही साबित नहीं हुआ और एक समय जबलपुर के पांच शीर्ष बल्लेबाज मात्र 53 रनों के स्कोर पर आउट हो गए थे मगर उसके बाद अंचित ठाकुर और सार्थक जैन के बीच छठवें विकेट के लिए हुई 134 रनों की साझेदारी ने जबलपुर की स्थिति संभाल ली। अंकित ठाकुर ने शानदार शतक जमाया। इसके पश्चात आठवें विकेट के लिए सार्थक जैन और पारुष मंडल के बीच हुई 62 रन की साझेदारी से जबलपुर सम्मानजनक 251 रन का स्कोर बना सका। जबलपुर के सार्थक जैन ने शानदार 86 रन तथा पारुष मंडल ने 20 रनों का योगदान दिया।

भोपाल की ओर से पृथ्वीराज तोमर ने तीन अनिमेष सिंह ने तीन तथा राघवेंद्र ने दो विकेट प्राप्त किये।

जवाबी पारी खेलने उतरी भोपाल की टीम को भी जबलपुर के मयंककेश सिंह और मंगेश यादव ने लगातार झटके दिए और खेल समाप्ति तक भोपाल 104 रनों पर अपने पांच विकेट गंवा चुका है। भोपाल की ओर से तनिष्क यादव ने 27 परभ मिश्रा ने 15 रन बनाए। विकास शर्मा 36 रनों पर नाबाद हैं। मयंकेश ने तीन और मंगेश यादव ने दो विकेट लिया है। आज के मैच में प्रदेश के चयनकर्ता अजय राजपूत और ऑब्जर्वर सलीम खान मौजूद थे। कल दूसरे दिन का खेल प्रात: 9.30 बजे से प्रारंभ होगा।

ए.पी. नर्मदा विधि महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन

जबलपुर,देशबन्धु। संवैधानिक नैतिकता में व्यक्तिगत पसंद और मामलों में स्वायत्ता स्वतंत्रता, समानता एवं गैर भेद-भाव जैसे लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के पालन को संदर्भित किया जाता है जिसके अंतर्गत संविधान के सिद्धांतों द्वारा लोकतांत्रिक समाज को आकार और दिशा देने में संवैधानिक नैतिकता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उक्त आशय के उदगार अतिथि वक्ताओं डॉ. ज्ञानवेन्द्र के तिवारी एसोसिएट प्रोफेसर लॉ, डायरेक्टर ऑफ सेंटर फार स्टडीज इन लीगल थ्योरी डी.एन.एल.यू जबलपुर एवं गौतम गुप्ता असिस्टेंट प्रोफेसर लॉ डायरेक्टर फार सेन्टर फार क्रिमिनल जस्टिस एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड रिसर्च (सीजेआर) डी.एन.एल.यू जबलपुर ने एपी नर्मदा विधि महाविद्यालय में आयोजित Pedagogy of constitutional Morality and New Criminal Lawas विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी के अवसर पर व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष चमन श्रीवास्तव द्वारा की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन विधि महाविद्यालय की विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक श्रीमति प्रियंका श्रीवास्तव ने किया।

कार्यकम में प्रमुख रूप से महाविद्यालय रजिस्ट्रार मानवेन्द्र सिंह विधि विभागाध्यक्ष श्रीमति प्रियंका श्रीवास्तव, प्राध्यापक रविन्द्र गुप्ता, विजयश्री तिवारी, सपना जैन, आकांक्षा अवस्थी, आकांक्षा मिश्रा, मृत्युंजय तिवारी, शशांक यादव, त्रिपदा भटट, रक्षा पालीवाल, निकिता कौरव, डॉ. जयश्री तिवारी, आदर्श राज सहित विधि विभाग के समस्त प्राध्यापक उपस्थित रहे।

चश्मे के लिए 975 हितग्राहियों का हुआ पंजीयन

जबलपुर,देशबन्धु। पूर्व विधानसभा क्षेत्र के सात दिवसीय मानव सेवा का संकल्प स्वास्थ्य शिविर का तीसरा दिन शनिवार को भानतलैया स्कूल खेरमाई में प्रात्त 10 बजे से प्रारम्भ हुआ जो शाम 5 बजे तक जारी रहा। महिला एवं पुरूष ने भारी तादाद में अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया।

तीसरे दिन में लगभग 3360 हितग्राहियों ने अपना परीक्षण कराया जिसमें 975 हितग्राहियों का चश्मे के लिए पंजीयन किया गया। 115 हितग्राहियों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन के लिए पंजीयन किये गये। 1680 हितग्राहियों को दवाईयों का वितरण किया गया। पूर्व केबिनेट मंत्री, विधायक लखन घनघोरिया ने कहा कि मानव सेवा का जो संकल्प लिया है। पूर्व विधानसभा क्षेत्र के अलावा अन्य विधानसभा क्षेत्र की जनता को भी उपरोक्त शिविर में स्वास्थ्य का लाभ दिया जा रहा है।

इस शिविर में दिनेश यादव, अमरीश मिश्रा, संजय अहिरवार, धर्मेन्द्र पटारिया, मुन्नू पंडा, जीत जागड़े, मुरलीधर राव, राजेश दीवान, अभिषेक चंदेल, दिलीप जाट, धीरेन्द्र विश्वकर्मा, पाण्डू कश्यप, बब्लू भोजक, कमल रजक आदि कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विद्यार्थी प्रयास करना न छोड़ें : प्रो राजेश वर्मा

श्रीजानकीरमण महाविद्यालय का 54वां वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

जबलपुर, देशबन्धु। श्रीजानकीरमण महाविद्यालय में वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन संपन्न हुआ। जिसमें महाविद्यालय के सभी प्रतिभागियों को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर राजेश कुमार वर्मा सारस्वत अतिथि प्रोफेसर अल्केश चतुर्वेदी प्राचार्य पी एम श्री एक्सीलेंस कॉलेज ,श्री जानकीरमण महाविद्यालय शासी निकाय अध्यक्ष श्री शरद चंद पालन, श्री जानकीरमण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अभिजात कृष्ण त्रिपाठी एवं वरिष्ठ कीड़ा अधिकारी डॉ शक्ति सिंह मंडलोई संयोजक डॉ आनंद राणा के आतिथ्य में सभी 36 प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को मेडल एवं ट्रॉफी देखकर सम्मानित किया गया।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन का शुभारंभ मां सरस्वती जी के समक्ष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वल कर तथा विद्यार्थियों के द्वारा गीतों की प्रस्तुतियां से किया गया। तदुपरांत श्रीजानकीरमण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अभिजात कृष्ण त्रिपाठी ने स्वागत उद्बोधन देते हुए कहा कि सांस्कृतिक और खेलकूद की गतिविधियों में शामिल होना व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर राजेश कुमार वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हार के डर से विघार्थियों को प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ विद्यार्थियों को खेलकूद भी अतिआवश्यक हैं खेल के माध्यम से ही छात्र का सर्वांगीण विकास होता हैं सारस्वत अतिथि के रूप में पीएम श्री एक्सीलेंस कॉलेज जबलपुर के प्राचार्य प्रो. अल्केश चतुर्वेदी जी ने अपने उद्बोधन में श्रीजानकीरमण महाविद्यालय में सफल प्रतिस्पर्धाओं के होने पर बधाई दी।

तीन दिवसीय महाशिवरात्रि महोत्सव पर भगवान गुप्तेश्वर महादेव का होगा भव्य रजत श्रृंगार

जबलपुर, देशबन्धु। संस्कारधानी जबलपुर स्थित स्वयंभू सिद्धपीठ श्री गुप्तेश्वर महादेव मंदिर में इस वर्ष भगवान शिवलिंग का भव्य रजत (चांदी) अलंकरण किया जा रहा है। इस पावन अवसर को और अधिक दिव्य एवं भव्य बनाने हेतु त्रिदिवसीय महाशिवरात्रि महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक आयोजन में संतों, विद्वानों, श्रद्धालुओं एवं शिव भक्तों की विशेष उपस्थिति रहेगी। आयोजन परम पूज्य गुप्तेश्वर पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी मुकुंददास जी महाराज के सानिध्य में आयोजित किया जा रहा.. एवं भगवान के अनन्य भक्त द्वारिका प्रसाद मिश्रा एवं परिवार के द्वारा भगवान को रजत अर्पित किया जा रहा है..

भगवान गुप्तेश्वर महादेव का महत्व

श्री गुप्तेश्वर महादेव मंदिर जबलपुर की प्राचीनतम शिव स्थली में से एक है। यह मंदिर मां नर्मदा के दक्षिण तट पर स्थित है और यहां विराजमान भगवान शिव स्वयंभू रूप में गुफा के भीतर प्रतिष्ठित हैं। मान्यता है कि भगवान शिव स्वयं इस गुप्त गुफा में प्रकट हुए थे, इसलिए इन्हें गुप्तेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि जो भी सच्चे मन से यहां भगवान शंकर की उपासना करता है।

रजत अलंकरण आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्व

इस वर्ष भगवान गुप्तेश्वर महादेव का श्री रजत अलंकरण किया जा रहा है। रजत (चांदी) को शुद्धता, शीतलता एवं चंद्रमा से संबंध रखने वाला धातु माना जाता है, जो भगवान शिव के परम प्रिय तत्वों में से एक है। इस पावन कार्य का उद्देश्य भगवान गुप्तेश्वर जी के शिवलिंग का क्षरण हो रहा है उसको बचाने एवं शिव के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति को प्रकट करना तथा इस आध्यात्मिक स्थल को और अधिक अलौकिक स्वरूप प्रदान करना है।

नरसिंह मंदिर में 21 वें निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन

शिविर में 500 से अधिक नेत्र रोगियों की हुई जांच

जबलपुर, देशबन्धु। हर तीर्थ के दर्शन करने के लिए नेत्रों का स्वस्थ होना चाहिए, ईश्वरीय कृपा से हृदय चक्षु में भगवत दर्शन होते हैं। भौतिक रूप से नेत्रों का परीक्षण चिकित्सा विज्ञान में संभव है ।

महापुरुष भगवान स्वरूप में विराट स्वरूप में आशीर्वाद देते हैं।गुरु चरणों का आशीर्वाद मिलते ही शिष्य शून्य से शिखर पर पहुंच जाते हैं। गुरु संत महात्माओं परमात्मा का सानिध्य प्राप्त होते ही धर्म संस्कृति की ध्वजा पताका को लेकर शिष्य सारे जगत के कल्याण के लिए कार्य करता है। संतों की कृपा, परमात्मा का आशीर्वाद से

वर्ष 2005 से साकेतवासी पूज्य नृसिंहपीठाधीश्वर महंत रामचंद्रदासजी की पावन स्मृति मे आयोजित निःशुल्क नेत्र शिविर नरसिंह मंदिर में पूज्य

जगतगुरु डॉ श्यामदेवाचार्य जी महाराज के सूक्ष्म दिव्य कृपा छाया में स्वामी कौशल किशोर दास बड़े भक्तमाल जी अयोध्या, राम रंगी व्दाराचार्य जगद्गुरु नरसिंह पीठाधीश्वर डॉक्टर स्वामी नरसिंह देवाचार्य जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी, स्वामी कलिकानंद, स्वामी मुकुंददास जी, आचार्य वासुदेव शास्त्री, श्रीकृष्ण राज आराध्य ने आशीर्वाद दिया।

निःशुल्क नेत्र शिविर को नरसिंह भगवान के परमभक्त अमेरिका निवासी हरकेश सिंह ठाकुर परिवार सहित जबलपुर आकर नगर के ख्यातिलब्ध नेत्र चिकित्सक डा पवन स्थापक , आयुष टंडन सहित देवजी नेत्र चिकित्सालय के डाक्टरों व्दारा 500 से अधिक रोगियों की सभी जांचें कर निशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन,दवाईयों का वितरण किया । नेत्र रोगियों के रोगो के निवारणार्थ निःशुल्क नेत्रशिविर में श्याम साहनी, अशोक मनोध्या, गुलशन मखीजा, लकी भाटिया, हैप्पी परमार , हरकेश ठाकुर, शरद काबरा, प्रवेश खेड़ा, अंजू भार्गव, डॉ सुधीर अग्रवाल, डॉ हितेश अग्रवाल, डा वी के डांग दशरथ सिंह, विष्णु पटेल, विध्येश भापकर, जगदीश साहू, एस एन शर्मा, मनोज नारंग,डॉ संदीप मिश्रा, संजय पटेल, राजेन्द्र यादव, लोकराम कोरी, राजेन्द्र प्यासी, अंबर पुंज, महिला मंडल सहेली गुप्र की डा कावेरी शा, इंदुमती प्यासी, कृष्णा यादव, बिदूंमती, शिवकली मालवीय, हिमांशु प्रियांश सहित नरसिंह मंदिर गीता धाम भक्त परिवार,सनातन धर्म महासभा जबलपुर के भक्त जनों की उपस्थिति रही।

आसक्ति से कामनाओं की उत्पत्ति होती है: सुश्री धामेश्वरी देवी

जबलपुर, देशबन्धु। भक्तियोग रसावतार जगदगुरुत्तम स्वामी श्री कृपालु जी महाराज की प्रमुख प्रचारिका सुश्री धामेश्वरी देवीजी द्वारा दिव्य आध्यात्मिक प्रवचन श्रृंखला के नवमे दिन शिव मंदिर कचनार सिटी जबलपुर में चल रहे प्रवचन श्रृंखला में बताया गया कि आसक्ति से कामनाओं की उत्पत्ति होती है। सांसारिक कामनाओं को छोड़कर भक्ति करनी होगी। जब तक हमारे हृदय में संसार की कामना रहेगी तब तक भगवान हमारे हृदय में नहीं आ सकते। ईश्वरीय जगत में कामना सबसे खतरनाक बीमारी है कामना ही काम, क्रोध, लोभ, मोह की जननी होती है।

कामना पूरी हो जाए तो लोभ और न पूरी हो तो क्रोध आता है। कामना उत्पन्न होने का कारण बताया गया वह है आसक्ति। जहाँ हम सुख का अनुभव करेंगे वहां हमारी आसक्ति हो जाएगी और उसी आसक्ति से कामना पैदा होगी। इसलिए हमें भगवान में ही सुख है एवं वह ही हमारे हैं, इसका बार-बार अभ्यास करना होगा। तभी हमारा भगवान से प्रेम बढ़ेगा। सांसारिक कामनाओं को भगवान के निमित्त करना होगा। तभी हम इस मानव देह का एकमात्र लक्ष्य भगवद्प्राप्ति की ओर आगे बढ़ेगे। प्रवचन के अंत में श्री युगल सरकार की आरती हुई, जिसमें समस्त भक्तगणों ने आध्यात्मिक लाभ लिया।

दत्त मंदिर में दासनवमी उत्सव का समापन

जबलपुर, देशबन्धु। श्री दत्त भजन मंडल एवं रामदास सेवा समिती के तत्वाधान मे रामदासनवमी उत्सव का समापन प्रात:कालीन उपासना से किया गया.मुख्य वक्ता श्री अभय गोरे का स्वागत शाल एवं श्रीफल से मनीष वैद्य व विजय भावे द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता अभय गोरे ने दासबोध प्रवेश एवम पंचीकरण विषय पर अपने उदबोधन मे बताया की समर्थ रामदास ने प्रपंच नींव पर परमार्थ का मंदिर खडा किया।

आपने बताया की समर्थ द्वारा लिखित दासबोध एवं आत्माराम ग्रंथ का मनन करने से व्यक्ती को सायुज्य मुक्ती मिलती है। राम की भक्ती तथा हनुमान की शक्ती की उपासना बतायी. समर्थ रामदास ने आज के दिन अर्थात माघ नवमी को सज्जनगड मे अपना देह राम चरणों मे विसर्जित किया। इस अवसर पर डॉ. शिरीष जामदार, विजय भावे, प्रमोद पाठक, अनिल राजूरकर, सौ चित्रा ताम्हनकर रंजना वर्तक आदि उपस्थित थे।

धर्मायतन में हुई जिनबिंबों की स्थापना

मंगलगान से गूंज उठा श्री महावीर स्वामी दिगंबर जिनालय

जबलपुर, देशबन्धु। फाल्गुन कृष्ण अष्टमी शुक्रवार के शुभ दिन राईट टाऊन गोल बाजार स्थित श्री महावीर स्वामी दिगंबर जिनालय धर्मायतन तीर्थंकर महावीर भगवान सहित देव - शास्त्र - गुरु भगवन्तों की मंगलकारी जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

मंगलमय प्रसंग था संस्कारधानी में बने जिनशासन की मंगल प्रभावना एवं धर्माराधना का प्रतीक सुंदर एवं मनोहारी संकुल धर्मायतन में विराजमान हुए मनोहारी जिनबिंबों की स्थापना का जिसका सौभाग्य मिला श्री वीतराग विज्ञान मंडल एवं जैन युवा फेडरेशन जबलपुर के जिनशासन सेवकों को।

फेडरेशन के मीडिया प्रभारी दीपक राज जैन एवं नितिन जैन ने बताया कि प्रात:काल की

मंगल बेला पर बड़ी संख्या में श्रावणगणों ने मनोहारी जिनबिंबों के प्रक्षालन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया पश्चात सकल समाज ने विधि विधान पूर्वक मूलनायक 1008 तीर्थंकर महावीर स्वामी के साथ तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान एवं तीर्थंकर मल्लीनाथ भगवान की प्रतिमा को वेदी पर विराजमान कर उनका गुणगान किया।

मंगलमय अनुष्ठान में जैनदर्शनाचार्य पंडित अभयकुमार शास्त्री देवलाली द्वारा रचित शांति विधान किया गया जिसके विधानकर्ता बनने

का सौभाग्य आतम जैन परिवार को मिला, कार्यक्रम में नगर गौरव पंडित राजेंद्रकुमार जैन, ब्रह्मचारी डॉ. मनोज जैन, श्रेणिक जैन, जिनेंद्र जैन सहित अन्य विद्वतजनों ने विधान की मांगलिक क्रियाएं सम्पन्न कराई, सभी अनुष्ठानों का कुशल निर्देशन पंडित विराग शास्त्री एवं मंगलार्थी अनुभव शास्त्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष अशोक जैन, फेडरेशन अध्यक्ष संजय जैन के साथ अनुभव जैन दिगम्बर, अभिषेक जैन दिगम्बर, विशाल जैन, प्रशांत जैन, निशांत जैन, अंकित जैन दिगंबर सहित बड़ी संख्या में मंडल, फेडरेशन एवं त्रिशला महिला मंडल के पदाधिकारियों के साथ जिनशासन सेवकगण सम्मिलित हुए और सभी ने मिलकर धर्माराधना करते हुए जिनशासन की मंगल प्रभावना की।

दैनिक राशिफल

रविवार 23 फरवरी 2025 का पंचांग विक्रम संवत् 2081, शक संवत 1946 हिजरी 1445। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की दशमी, नक्षत्र- मूल।

मेष
आज मन व्याकुल रहेगा और शरीर में आलस्य छाया रहेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम हो सकता है। काम में सफलता देर से मिलेगी।

वृषभ
सरकार विरोधी काम और एक्टिविटी से दूर रहने की सलाह आपको दी जाती है। नए काम की शुरुआत ना करें। स्वास्थ्य भी बिगड़ सकता है।

मिथुन
आज का दिन सुख और शांतिपूर्वक गुजार सकेंगे। दैनिक कामों में कुछ ज्यादा ही व्यस्त रह सकते हैं। मन को प्रसन्न रखने के लिए आप मनोरंजन का सहारा लेंगे।

क- 224-455

कर्क
व्यवसाय स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। मायके से अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। पारिवारिक वातावरण भी अनुकूल रहेगा। विरोधियों को लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा।

सिंह
प्रणय प्रसंग के लिए आज का दिन अनुकूल है। फिर भी गुस्से पर संयम रखें। पेट से संबंधित रोगों से कोई कष्ट हो सकता है। दोपहर के बाद परिवार में आनंद और उल्लास का वातावरण रहेगा।

कन्या
आज शारीरिक ताजगी का आपमें अभाव रहेगा। किसी बात की चिंता से काम में मन नहीं लगेगा। धनहानि होने की आशंका है।

तुला
नए काम की शुरुआत करने के लिए दिन अच्छा है। प्रिय व्यक्ति के साथ हुई मुलाकात आनंददायी रहेगी।

वृश्चिक
निर्धारित काम न होने के कारण हताशा का अनुभव होगा। किसी भी महत्वपूर्ण काम का डिसीजन आज ना लें। पारिवारिक वातावरण में क्लेश रहेगा।

धनु
आज का दिन आप के लिए शुभ फलदायी है। आज भाग्य आपका साथ देगा और आर्थिक रूप से आपको फायदा होगा। शारीरिक और मानसिक रूप से आप उत्साही तथा प्रफुल्लित बने रहेंगे।

मकर
कोर्ट कचहरी के मामलों से आज दूर रहें। मन में किसी बात को लेकर आज चिंता रह सकती है। आपके नकारात्मक विचार काम पर सीधा प्रभाव डालेंगे।

कुंभ
आज के दिन की शुरुआत लाभदायी है। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में आप प्रगति करेंगे। किसी नए व्यक्ति से रिश्ता बन सकता है।

मीन
आपके विचारों में आज दृढ़ता अधिक नहीं होगी। व्यापार में भागीदारी के काम से लाभ होगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं।

म. 136-156

1,3,5,9,10,31,57,95,59,13,05,99

जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में महोत्सव इनर्शिया का आयोजन

जबलपुर, देशबन्धु। जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में एनुअल टेक फेस्ट इनर्शिया में 24 घंटे की हैकाथॉन के बाद स्पोर्ट्स एक्टिविटी का आयोजन किया गया। इस दिन विभिन्न तकनीकी और रचनात्मक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। टेक फेस्ट में ई-स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने गेमिंग में कौशल कला और रणनीति का परिचय दिया। टीम वर्क और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता ने टीम को विनर बनाया।

ओपन माइक में टैलेंट - कल्चर कॉम्पीटिशन में ओपन माइक कल्चर खास रहा। इसमें प्रतिभागियों ने कविता, कहानियां और कामेडी शो प्रस्तुत किया। इसके साथ ही कई तकनीकी विषयों पर एक्सपर्ट लैक्चर भी हुए। उद्योग विशेषज्ञों और शिक्षाविदों ने तकनीकी क्षेत्र में नवीनतम प्रगति और औद्योगिक विकास पर गहन चर्चा की। इसके साथ ही डिफेंस एक्सपो में अत्याधुनिक रक्षा तकनीक, सैन्य उपकरण और आधुनिक हथियार प्रणालियों की प्रदर्शनी लगाई गई।

दिनभर हुए टूर्नामेंट- टेक फेस्ट में शनिवार को दिनभर स्टूडेंट्स ने एक्टिविटीज में हिस्सा लिया। आयोजन में प्राचार्य डॉ. राजीव चांडक, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रीति जैन, डॉ. जेएस ठाकुर, डॉ. वसुधा सक्सेना, प्रो. अविता फुसकेले, प्रो. सुधांशु डोले, प्रो. माधुरी गोखले, डॉ. कुमार महर्षि और प्रो. अभिलाष कुमार पटेल ने प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन किया। आयोजन में जेईसी लिनक्स यूजर्स ग्रुप से हर्षित सोलंकी, मानस मेहरा, निशित गुप्ता, रोहित पटेल, सुयश सोनी, प्रिंस द्विवेदी, तनिष्का शिवहरे, पलक चौधरी, अक्षत तिवारी, अनिमेष, प्रथम सराफ, अथर्व पांडे का सहयोग रहा।

हर समूह को जोड़ती है मातृभाषा

जबलपुर, देशबन्धु। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में 9 जिलों के छात्र और प्राध्यापक शामिल हुए। अध्यक्षता प्राचार्य सहदेव सिंह मरावी ने की। उन्होंने कहा मातृभाषा दिवस भाषायी विविधता और सांस्कृतिक संरक्षण के बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। समन्वयक डॉ. प्रमोद श्रीवास्तव, अर्शी नाज, आभा श्रीवास्तव, नमो पटेल, पूजा ठाकुर, संदीपिका सिंह, लता सोमवंशी, शकुन्तला वर्मा, जीपी यादव, सतीश तिवारी, डॉ. आशीष नारायण माथुर, ललिता सप्रा, अर्चना दुबे, डॉ. ज्योति खरे, डॉ. रीना जैन, डॉ. राजकुमारी दुबे मौजूद रहीं।

स्काउट का अनुशासन संवारता है व्यक्तित्व

जबलपुर, देशबन्धु। जिला स्काउट कार्यालय जबलपुर मंडल पमरे में स्काउट्स एंड गाइड्स दिवस मनाया गया। इस दौरान प्रतिभागियों ने स्काउटिंग के संस्थापक रॉबर्ट बेडेन-पॉवेल और

लेडी बी.पी का स्मरण कर विचार दिवस की महत्ता समझाई। जिला सचिव अनिल चौबे, यनन्या डोंगरे ने स्काउट के नियम बताए। इस मौके पर अपर मंडल रेल प्रबंधक सुनील टेलर, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी सुबोध विश्वकर्मा, राजश्री द्विवेदी मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर, सच्चिपति नंदन, सहायक कार्मिक अधिकारी, जिला संगठन आयुक्त विमलेश तिवारी, सहायक जिला सचिव संजीव तिवारी, स्काउटर कृष्णा उपाध्याय, शुभम कुशवाहा, अब्दुल वाजिद मौजूद थे।

दिनचर्या में शामिल करें योगाभ्यास

जबलपुर, देशबन्धु। गवर्नमेंट साइंस कॉलेज में शासकीय विज्ञान महाविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य विषय पर व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम में उमंग उच्च शिक्षा हेल्थ एंड वेलनेस कार्यक्रम के अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य विषय पर व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. एएल महोबिया, कार्यक्रम प्रभारी डॉ. रमेश शुक्ला, डॉ. राहुल पटेल ने कहा कि दैनिक जीवन में भौतिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी काम करना चाहिए। इससे स्वस्थ्य व जागरूक समाज व देश का निर्माण होगा। उन्होंने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए रोजाना तीस मिनट का व्यायाम और योग अपनाने की जानकारी दी। इस मौके पर डॉ. जया वाजपेयी, डॉ. अंकिता बोहरे, डॉ. सुमन प्रभाकर, डॉ. रचना सांचा, डॉ. विनीता रतोनिया, डॉ. रूपाली जैन मौजूद रहीं।

निधन

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सद्गति दे भगवान

श्रीमती प्रतिभा शुक्ला- चैतन्य सिटी तिलहरी निवासी श्री संजय शुक्ला की धर्मपत्नी श्रीमती प्रतिभा शुक्ला (45) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्रीमती छोटी बाई सैनी- ग्रीन सिटी रोड गोल्ड टाउन निवासी श्री राज किशोर सैनी की धर्मपत्नी श्रीमती छोटी बाई सैनी (55) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार माढ़ोताल मोक्षधाम में किया गया।

श्री बृज लाल पृथ्यानी- रसीदगंज नया मोहल्ला निवासी श्री बृज लाल पृथ्यानी (82) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री प्रताप सिंह सैनी- न्यू शोभापुर कॉलोनी निवासी श्री प्रताप सिंह सैनी (68) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गुप्तेश्वर मोक्षधाम में हुआ।

श्री कैलाश चंद्र दीक्षित- गुप्ता कॉलोनी गढ़ाफाटक निवासी श्री कैलाश चंद्र दीक्षित (70) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री सूरज पटेल- राजीव गांधी नगर निवासी श्री सूरज पटेल का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गुप्तेश्वर मोक्षधाम में किया गया।

श्रीमती प्रेमलता राजपूत- जेडीए कॉलोनी कटंगा निवासी प्रेमचंद राजपूत की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता राजपूत (77) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री मयूर कुमार चौधरी- बाबा टोला रविदास नगर निवासी श्री रोशन लाल चौधरी के पुत्र श्री मयूर कुमार चौधरी (31) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर श्मशान भूमि में किया गया।

श्री प्रेम लाल श्रीवास- पटेल नगर महाराजपुर निवासी श्री प्रेम लाल श्रीवास (82) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री राजेंद्र कुमार अतरखेल- चांदमारी तलैया लालमाटी निवासी श्री राजेंद्र कुमार अतरखेल (55) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर श्मशान भूमि में किया गया।

श्रीमती कुसुम बाला ओंडेला- रक्षा कॉलोनी रांझी निवासी श्रीमती कुसुम बाला ओंडेला का निधन हो गया है। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री सुरेश चौधरी- सिंधी कैंप बड़ी मदार टेकरी निवासी श्री सुरेश चौधरी (50) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर श्मशान भूमि में किया गया।

श्री राम स्वरूप यादव- एपीआर कॉलोनी 2, बिलहरी निवासी श्री राम स्वरूप यादव (80) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री कृष्ण कुमार राजपूत- भरतीपुर सामुदायिक भवन के पास निवासी श्री अशोक राजपूत के पुत्र श्री कृष्ण कुमार राजपूत (39) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर में किया गया।

श्री सुरेश कुमार राव- बिलहरी पोस्ट आफिस के पीछे निवासी श्री सुरेश कुमार राव (69) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री राजेंद्र प्रसाद सोनकर- भरतीपुर निवासी श्री राजेंद्र प्रसाद सोनकर (70) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर श्मशान भूमि में किया गया।

बैंक में डकैती की योजना बनाते पुलिस के हत्थे चढ़े

पिस्टल-कारतूस सहित धारदार हथियार जब्त

जबलपुर,देशबन्धु। रांझी थानान्तर्गत आधा दर्जन युवक व्हीकल फैक्टरी के खंडहरनुमा क्वॉटर में बैठक बैंक में डकैती डालने की योजना बना रहे थे। पुलिस ने दबिश देकर युवकों को पिस्टल-कारतूस सहित धारदार हथियारों के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी युवकों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है।

रांझी पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार शनि जांगड़े उम्र 22 वर्ष निवासी झंडा चौक, अमन केवट उम्र 20 वर्ष निवासी बड़ा पत्थर, अंकित गिराय उम्र 20 वर्ष निवासी फक्कड बाबा मंदिर के पास, अंशू उर्फ अंशुल मलिक उम्र 21 वर्ष निवासी गंगा मैया यादव पान भंडार के पास,गोविन्द गुरू उम्र 18 वर्ष निवासी रक्षानगर कालोनी तथा करन गिराय पिता बंटी गिराय उम्र 20 वर्ष निवासी फक्कड़ बाबा मंदिर के पास दरम्यानी रात व्हीकल फैक्टरी के खण्डहर क्वाटर सेक्टर-1 में एकत्रित होकर यूको बैंक व्हीकल स्टेट में डकैती डालने की योजना बना रहे थे । पुलिस ने सूचना मिलने पर दबिष देते हुए सभी आरोपी को घेराबंदी कर अभिरक्षा में लिया।

तलाशी के दौरान युवकों के पास से एक पिस्टल, एक कारतूस, दो तलवार, एक चायना चाकू, कटौनी जब्त की। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 310(4), 310(5) बीएनएस तथा 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया हे।

इनकी रही महत्वपूर्ण भूमिका-आरोपियों को गिरफतार करने में सीएसपी रांझी विवेक कुमार गौतम,थाना प्रभारी रांझी मानस द्विवेदी, उप निरीक्षक मनीष कुमार जाटव, एम एल बिहुनिया, प्रधान आरक्षक सुनील दुबे, प्रदीप तिवारी, पुरूषोत्तम अहिरवार, आरक्षक प्रदीप नाईक, मनीष अहिरवार, गौरव यादव, रवि पंचेश्वर, अर्पित सिंह, अभिषेक, मनीष पटैल, चंचल सेन, हरिशंकर, सैनिक महेन्द्र सिंह की सराहनीय भूमिका रही।

मिक्सर मशीन ने पुलिस आरक्षक को मारी टक्कर

चरगवां के ग्राम भौतिया तिराहा में हादसा

जबलपुर,देशबन्धु। चरगवां थाने में पदस्थ एक पुलिसकर्मी को ड्यूटी के दौरान एक मिक्सर मशीन ट्रक के चालक ने पीछे से टक्कर मार दी। जिससे आरक्षक को गंभीर चोटे आई है, वहीं उसकी बाईक भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। वहीं हादसे के बाद आरोपी चालक वाहन लेकर मौके से फरार हो गया।

पुलिस ने बताया कि नरसिंहपुर गोटेगांव बगासपुर निवासी 30 वर्षीय राहुल नादोनिया चरगवां थाने में आरक्षक के पद पर पदस्थ है। बीते दिवस वह समंस, वारंट तामील के सिलसिले में बिजौरी देहात गया था। शासकीय कामकाज करते हुए शाम करीब छह बजे वह अपनी मोटरसाइकिल क्रमांक एमपी 49 जेडएफ-2776 से वापस थाने आ रहा था। जैसे ही वह ग्राम भौतिया तिराहा के पास गोटेगांव जबलपुर मेन रोड पर पहुंचा, उसी समय सफेद रंग की टाटा कम्पनी की मिक्चर मशीन वाले ट्रक क्रमांक एमपी 20 जेडएफ 2842 के चालक ने तेज रफ्तार व लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए उसकी बाइक में पीछे से टक्कर मार दी, जिससे वह बाईक सहित गिर गया और उसे चोट आ गई, उसकी बाईक भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। शिकायत पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर मामले को विवेचना में लिया है।

शराब के नशे में पत्नी की धुनाई

पुलिस ने दर्ज किया प्रकरण

जबलपुर,देशबन्धु। शराब के नशे में घुत युवक ने खाना नहीं बनाने पर पत्नी की धुनाई कर ली। पुलिस ने पत्नी की शिकायत पर षराबी पति के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है।

पाटन थाने से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रीमती वर्षा चौधरी उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम देवरी जमुनिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह मजदूरी करती है उसके 2 छोटे बच्चे हैं दिनंक 21-2-25 की रात लगभग 11 बजे उसका पति चन्नू चौधरी शराब के नशे में घर आया और आंगन में खड़े होकर उससे खाना बनाने की बात को लेकर गाली गलोज करने लगा, उसने गालियां देने से मना किया तो पति हाथ मुक्कों से मारपीट करने लगा वह गिर गयी गिरने से उसको भोंह के पास चोट आयी पति उसे जान से मारने की धमकी देते हुये घर से चला गया। रिपोर्ट पर धारा 296, 115(2), 351(3) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

नगदी सहित लाखों के जेवरात पर किया हाथ साफ

युवक घर में सोता रहा

जबलपुर,देशबन्धु। रांझी थानान्तर्गत एक युवक सोता रहा और अज्ञात चोर ने नकदी व लाखों रूपये के जेवरात पर हाथ साफ कर दिये। परिवार के अन्य सदस्य विवाह समारोह से लोटे जो अज्ञात चोर उन्हें देखकर भाग गया।

रांझी पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रितेश कुमार यादव उम्र 43 वर्ष निवासी पुराना शोभापुर पनेहरा पेट्रोल पंप के पीछे परिवार सहित शादी में गये थे। घर में उसका छोटा भाई सो रहा था। परिवार सहित रात को 11 बजे घर वापस लौटे तो देखा की भाई के कमरे में एक अज्ञात युवक है। युवक उन्हें देखकर पीछे के दरवाजे से फरार हो गया।

उसने कमरे में जाकर देखा सामान पड़ा था आलमारी खुली थी जिसकी चाबी कमरे में ही रखी थी आलमारी में सोने की बाजूबंद, 4 अंगूठी, लम्बा मंगलसूत्र, 2 जोड़ी झाले, मनचली, 2 रिंग, चांदी की पायल, 5 जोड़ी बिछिया, नगदी लगभग 40 हजार रूपये गायब थे, कोई अज्ञात चोर घर के अंदर घुसकर सोने चांदी के जेवर ,नगदी सहित चोरी कर ले गया है। रिपोर्ट पर धारा 331(4), 305(ए) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

दुकान की शटर का ताला तोडकर उड़ाये दस हजार- इसी प्रकार लार्डगंज थानान्तर्गत स्थित चंदन गारमेंट्स नामक दुकान की शटर का ताला तोडकर अज्ञात चोर ने ड्राज में रखे 10 हजार रूपये पर हाथ साफ कर दिया। पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर उसके संबंध में पतासाजी प्रारंभ कर दी है।

असामाजिक तत्वों पर पुलिस ने कसा शिकंजा

जबलपुर,देशबन्धु। पुलिस ने अभियान के तत्व असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्यवाही की। पुलिस कंट्रोल रूप से प्राप्त जानकारी के अनुसार विभिन्न थानान्तर्गत वाद विवाद करने वाले 112 व्यक्तियों के विरूद्ध 126/135 (3) बी.एन.एस.एस (107/116 जा.फौ.) के तहत, एवं 15 व्यक्तियों के विरुद्ध धारा 170 बी.एन.एस.एस (151 जा.फौ.) के तहत की गयी है, इसी प्रकार पिछले कई वर्षो से फरार 11 गैरम्यादी, 28 म्यादी वारंटी, को गिरफ्तार किया गया है तथा 34 व्यक्तियों के विरूद्ध 34 आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही करते हुये 24 बॉटल बीयर, 194 पाव देशी/अंग्रेजी एवं 49 लीटर कच्ची शराब, जप्त की गयी तथा 4 व्यक्तियों के विरूद्ध 25 आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही करते हुये 4 चाकू जप्त किये गये एवं 7 जुआडियों को जुआ खेलते हुए एवं 2 सटोरियों को सट्टा लिखते हुये रंगे हाथों पकडा गया जुआडियो एवं सटोरियो के कब्जे से 1950 रूपये जप्त किये गये।

धक्का लगने पर युवक को चाकू से गोदने वाला आरोपी गिरफ्तार

हनुमानताल क्षेत्र की घटना

जबलपुर,देशबन्धु। हनुमानताल थाना क्षेत्र में धक्का लगने की बात पर एक युवक पर दनादन चाकू से वार कर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी को पुलिस ने चंद घंटो में ही धर दबोचा। पुलिस ने वारदात में प्रयुक्त चायना चाकू भी आरोपी से बरामद कर लिया है।पुलिस ने बताया कि सुब्बा शाह मैदान आदर्श स्कूल के समीप रहने वाला 21 वर्षीय मो. नदीम प्राइवेट काम करता है। बीती शाम वह केजीएन बिरयानी होटल के बाजू में चाय के स्टाल में बैठा था, जहां पर पहले से ही सलमान उर्फ चंदू बैठा। जहां नदीम का धक्का सलमान को लग गया। जिस पर सलमान ने गाली गलौज करते हुए चायना चाकू से दनादन नदीम पर हमला कर दिया। जिससे उसके चेहरे, गर्दन, सीने, पेट व पीठ में गंभीर चोटें आई। जिसे उपचार के लिये मेडिकल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। शिकायत पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर सरगर्मी से तलाश करते हुए आरोपी सलमान को धर दबोचा।

दिनदहाड़े ई-रिक्शा चुरा ले गये चोर

जबलपुर,देशबन्धु। माढ़ोताल थानातंर्गत श्रीराम कालेज गेट के पास खड़ी ई-रिक्शा क्रमांक एमपी जेडएन-1175 को कोई अज्ञात चोर चुरा ले गया। जिस वक्त वारदात हुई उस वक्त ई-रिक्शा मालिक मूलनदास बैरागी खाना खाने घर गया हुआ था। दिनदहाड़े हुई उक्त वारदात के बाद मामले की शिकायत पुलिस में दर्ज करायी गई।

सड़क हादसे में घायल युवक की मौत

जबलपुर,देशबन्धु। पनागर थानातंर्गत ग्राम पिपरिया कुशनेर निवासी 37 वर्षीय ओमकार राजभर विगत 15 फरवरी को सड़क हादसे में घायल हो गया था। जिसे उपचार के लिये मेडिकल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां उपचार दौरान शनिवार सुबह ओंकार की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आवश्यक कार्यवाही करते हुए मर्ग कायम कर मामले को जांच में लिया है।

हत्या के प्रयास के आरोपियों का पुलिस ने निकाला जुलूस

कटंगी में पिछले दिनों हुई थी वारदात

जबलपुर,देशबन्धु। कटंगी पुलिस द्वारा शनिवार को जानलेवा हमला कर फरार हो जाने वाले आरोपी को पकड़कर उनका जुलूस निकाला घटना विगत 16 फरवरी की बतायी जाती है। पुलिस ने अंकित नेमा नामक युवक पर हुए हमले के आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया है। कोर्ट में पेश करने के पहले उक्त आरोपियों का कटंगी नगर में जुलूस निकाला गया। जानकारी के मुताबिक 16 फरबरी को अंकित नेमा के ऊपर कटंगी व आसपास के क्षेत्र में रहने वाले चार लोगों के द्वारा लाठी डंडों से हमला किया गया था। जिसमें उसे गंभीर चोट आई थी, जिसके बाद उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया था। इस मामले में पुलिस द्वारा आरोपियों को गिरफ्तार कर उन्हें कोर्ट में पेश किया है।

कार और ऑटो में जोरदार भिड़ंत

जबलपुर,देशबन्धु। ओमती थानांतर्गत नागरथ चौक के सीप एक कार और ऑटो में जोरदार भिड़ंत हो गई। घटना में दोनों वाहन तो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुए ही हैं साथ में सवारियों को भी गंभीर चोटें आई हैं। घायलों को उपचार हेतु विक्टोरिया अस्पताल पहुंचाया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के मुताबिक आज सुबह-सुबह नागरथ चौक पर आमने-सामने से आ रही कार क्रमांक एमपी 20 सीएच 2913 और ई-रिक्शा में भिड़ंत हो गई। भिड़ंत के बाद ही मौके ओमती के नागरथ चौक पर सुबह-सुबह हुई घटना पर भगदड़ मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची और घायलों को तत्काल अस्पताल ले गई। जहां उनका उपचार जारी है। दोनों ही वाहनों को थाने ले जाया गया है।

विवाहित महिला द्वारा दर्ज करवाई गई बलात्कार की एफआईआर निरस्त

हाईकोर्ट ने कहा शारीरिक संबंध स्थापित करने झूठे वादे का आरोप नहीं

जबलपुर,देशबन्धु। विवाहित महिला द्वारा पड़ोसी युवक के खिलाफ बलात्कार के अपराध में दर्ज कराई गई एफआईआर को हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया। हाईकोर्ट जस्टिस एम एस भट्टी की एकलपीठ ने अपने आदेश में कहा है कि एफआईआर में इस बात का उल्लेख नहीं है कि यौन संबंध स्थापित करने की सहमति के लिए याचिकाकर्ता ने शिकायतकर्ता महिला से झूठा वादा किया था।

छतरपुर निवासी वीरेंद्र यादव ने बलात्कार के अपराध में दर्ज एफआईआर को खारिज किये जाने की मांग करते हुए हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका में कहा गया था कि उसके पडोस में विवाहित महिला रहती थी,जिसके दो बच्चे थे। महिला ने उसके खिलाफ बडे मल्हार थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि शादी का प्रलोभन देकर युवक ने उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित किए थे। महिला की षिकायत पर पुलिस ने उसके खिलाफ बलात्कार का प्रकरण दर्ज कर लिया था। याचिकाकर्ता की तरफ से विवाहित महिला के द्वारा दर्ज करवाई गयी बलात्कार के मामले में पारित आदेष का हवाला दिया गया था। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता श्रेयस पंडित ने एकलपीठ को बताया गया कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेष है कि विवाहित महिला यह आरोप नहीं लगा सकती थी कि सहमति तथ्य की गलत धारणा के आधार पर प्राप्त की गई थी।

. एकलपीठ ने अपने आदेश में एफआईआर में दर्ज तथ्यों का उल्लेख करते हुए कहा है कि महिला ने स्वयं कहा है कि वह पिछले 3 महीनों से याचिकाकर्ता के साथ संबंध में थी। उसका पति ड्रायवर था और जब भी वह बाहर जाता तो याचिकाकर्ता उसके घर आता था और उनके बीच शारीरिक संबंध स्थापित होते थे। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि शिकायतकर्ता द्वारा तथ्य की किसी गलत धारणा के तहत सहमति दी गई थी। एफआईआर में ऐसा कोई आरोप नहीं है कि याचिकाकर्ता ने षिकायतकर्ता पर विवाह के झूठे वादे की आड़ में विवाह करने के लिए दबाव डाला। इसके अलावा एफआईआर में उल्लेख किया गया है कि याचिकाकर्ता कहता था कि वह अपनी पत्नी को तलाक देगा और शिकायतकर्ता से विवाह करेगा। एफआईआर में यह कहीं नहीं कहा गया है कि झूठे वादे की आड़ में याचिकाकर्ता ने षिकायतकर्ता को यौन संबंध बनाने के लिए राजी किया। एकलपीठ ने याचिकाकर्ता को दोषमुक्त करते हुए दर्ज एफआईआर को निरस्त करने के आदेष जारी किये है।

एडवोकेट्स अमेंडमेंट बिल पर अधिवक्ता संगठनों से की जाएगी रायशुमारी

विधि विभाग ने जारी किया पत्र

जबलपुर,देशबन्धु। केन्द्र सरकार द्वारा एडवोकेट्स एक्ट में प्रस्तावित संशोधनों के विरोध में जबलपुर के अधिवक्ताओं ने गत दिवस विरोध स्वरूप कार्य से विरत रहे। एडवोकेट्स अमेंडमेंट बिल के विरोध को देखते हुए सरकार ने संभावित संशोधन को फिलहाल टाल दिया गया है। केन्द्रीय विधि विभाग के तरफ से बार काउंसिल ऑफ इंडिया को पत्र जारी किया गया है। जिसमें कहा गया था है एडवोकेस एक्ट में संभावित संषोधन अधिवक्ता संघ से चर्चा कर किया जायेगा।

एसबीसी के वाइस चेयरमैन व जिला अधिवक्ता संघ के पूर्व अध्यक्ष आरके सिंह सैनी ने कहा कि उक्त संशोधित बिल वकीलों के खिलाफ है। वकीलों के हक के लिये लड़ाई जारी रहेगी। वकीलों की स्वतंत्रता पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने दी जायेगी। अधिवक्ता विरोधी संषोधित बिल का हर स्तर पर विरोध किया जायेगा।

सीधी भर्ती का नियम प्रमोशन में क्यों लागू किया

डीएमई व बिरसा मुंडा शासकीय मेडिकल कालेज से मांगा जवाब

जबलपुर,देशबन्धु। मप्र हाईकोर्ट के जस्टिस आशीष श्रोती की एकलपीठ ने एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर पदोन्नति के मामले में डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन और बिरसा मुंडा शासकीय मेडिकल कालेज शहडोल को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब पेश करने के निर्देश दिये है। मामला सीधी भर्ती का नियम प्रमोशन पर लागू किये जाने के रवैये को चुनौती से संबंधित है।

याचिकाकर्ता शहडोल निवासी डॉ. देबरंजन दत्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता आदित्य संघी ने पक्ष रखा। उन्होंने दलील दी कि याचिकाकर्ता असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। उक्त कालेज की ओर से आठ फरवरीए 2025 को एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर भर्ती के लिये इन-हाउस विज्ञापन जारी किया गया। कालेज प्रशासन ने नेशनल मेडिकल कमीशन टीचर एलिजिबिलिटी क्वालिफिकेशन रूल के एक प्रविधान का हवाला देते हुए याचिकाकर्ता को अपात्र घोषित कर दिया। उक्त नियम सीधी भर्ती पर लागू होता है, जबकि याचिकाकर्ता का मामला प्रमोशन का है। हाईकोर्ट ने तर्क से सहमत होकर जवाब पेश करने के निर्देश दिये है।

अपराध का उचित अन्वेषण कर अंतिम प्रतिवेदन प्रस्तुत करें

जेएमएफसी कोर्ट ने पुलिस को दिये निर्देश

जबलपुर,देशबन्धु। प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी अरुण कुमार गोयल की अदालत ने अपने एक आदेश में कहा कि ऐसा लगता है पुलिस द्वारा अपराध का पता लगाने के समुचित प्रयास नहीं किये गये हे। अदालत ने धोखाधड़ी के प्रकरण में पुलिस द्वारा प्रस्तुत खात्मा रिपोर्ट पर असहमति दर्शाते हुए अपने आदेश में लेख किया कि केस डायरी के अवलोकन से यह दर्शित होता है कि पुलिस ने संदेहास्पद व्यक्तियों से पूछताछ कर अपराध का सही पता लगाने के समुचित प्रयास नहीं किया है। वहीं शिकायतकर्ता मनोज गुप्ता ने भी पुलिस द्वारा प्रस्तुत खात्मा रिपोर्ट पर असंतुष्टि प्रकट की है। जिस कारण पुलिस थाना संजीवनी नगर द्वारा प्रस्तुत खात्मा रिपोर्ट अस्वीकार की जाती है। पुलिस अधिकारी को निर्देशित किया जाता है कि अपराध का उचित अन्वेषण कर अंतिम प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। मामला कूटरचित हस्ताक्षर कर अवैध रूप से मध्य प्रदेश वुशु संघ पर कब्जा करने का प्रयास किए जाने के आरोप से संबंधित है। पूरे मामले का अवलोकन करने के बाद अदालत ने उक्त निर्देश दिये।

50 फीसदी राशि ब्याज सहित लौटाएं

हाईकोर्ट ने कहा-कोई भी नियम भूतलक्षी प्रभाव से लागू नहीं होता

जबलपुर,देशबन्धु। मप्र हाईकोर्ट के जस्टिस विवेक अग्रवाल की एकलपीठ ने अपने एक आदेश में स्पष्ट किया है कि कोई भी नियम भूतलक्षी प्रभाव से लागू नहीं होता। इस टिप्पणी के साथ याचिकाकर्ता द्वारा जमा की गई 50 फीसदी की किश्त की राशि आठ प्रतिशत ब्याज के साथ लौटाने का निर्देश दिये है।

याचिकाकर्ता छिंदवाड़ा निवासी रितेश साहू की ओर से अधिवक्ता एमआर वर्मा ने पक्ष रखा। उन्होंने दलील दी कि वर्ष 2015 में नगर परिषद अमरवाड़ा ने दुकानों की नीलामी की थी। याचिकाकर्ता ने भी उसमें हिस्सा लिया और अमानत राशि के साथ कुल राशि का 50 प्रतिशत जमा किया। शेष राशि जमा नहीं करने पर उसे आवंटन नहीं हुआ। बाद में एडिशनल कलेक्टर छिंदवाड़ा ने वर्ष 2016 के एक नियम का हवाला देते हुए याचिकाकर्ता द्वारा जमा की गई राशि जब्त करने के आदेश दिये, जिस पर हाईकोर्ट की शरण ली गई। सुनवाई पश्चात न्यायालय ने एडिशनल कलेक्टर का आदेश निरस्त करते हुए उक्त निर्देश दिये।

अवमानना मामले में पंद्रह हजार की कॉस्ट

दोषी के वेतन से होगी 50 प्रतिशत कटौती

जबलपुर,देशबन्धु। मप्र हाईकोर्ट के जस्टिस एके पालीवाल की एकलपीठ ने अवमानना प्रकरण में 15 हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। राशि जमा न होने की सूरत में दोषी अधिकारी के वेतन से 50 प्रतिशत कटौती का प्रविधान किया गया है। विश्वनाथ प्रसाद मिश्रा सेवानिवृत्त पंप अटेंडेंट लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड रीवा की ओर से अधिवक्ता राहुल मिश्रा व अभिमनोज ने पक्ष रखा।

उन्होंने दलील दी कि हाईकोर्ट ने पूर्व में याचिकाकर्ता के हक में आदेश पारित किया था। लेकिन पालन नहीं किया गया। मामला कार्यभारित स्थापना के रूप में की गई सेवाओं की गणना पेंशन व अन्य देय स्वत्वों के भुगतान हेतु जोड़े जाने के साथ समयमान वेतनमान स्वीकृत किए जाने से संबंधित है। 90 दिन में ये लाभ देने थे, लेकिन नहीं दिये गये। इसके स्थान पर याचिका दायर करने समय चाहा गया। जिस पर नाराजगी जाहिर करते हुए न्यायालय ने उक्त निर्देश दिये।

हाईकोर्ट ने महिला एवं बाल विकास विभाग से मांगा जवाब

डेढ़ लाख से अधिक आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं से जुड़ा प्रकरण

जबलपुर,देशबन्धु। मप्र हाईकोर्ट के जस्टिस संजय द्विवेदी की एकलपीठ ने प्रदेश में कार्यरत डेढ़ लाख से अधिक आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं को सेवानिवृत्ति के उपरांत ग्रेज्युटी का लाभ दिये जाने की मांग के प्रकरण में जवाब-तलब किया है। इस संबंध में राज्य शासन, महिला एवं बाल विकास विभाग सहित अन्य को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब पेश करने के निर्देश दिये गये है।

दरअसल यह मामला याचिकाकर्ता मप्र आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन की ओर से अधिवक्ता अरविंद श्रीवास्तव ने पक्ष रखा। उन्होंने दलील दी कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय अनुसार आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ग्रेज्युटी के पात्र हैं, परन्तु उन्हें उक्त अधिकार से वंचित किया जा रहा है। इस रवैये के विरोध में कई बार अभ्यावेदन दिये गये। ज्ञापन सौंपे गये, आंदोलन किये गये, लेकिन नतीजा सिफर रहा। लेकिन आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं सहायिकाओं की सुध लेने कोई आगे नहीं आ रहा। इससे उनकी हालत खराब है। परिवार का भरण-पोषण मुश्किल है और भविष्य अलग संकट में है। सुनवाई पश्चात् न्यायालय ने अनावेदकों को जवाब पेश करने के निर्देश दिये है।

विभागीय जांच बगैर सेवा से बर्खास्ती पर कोर्ट सख्त

अनावेदक बैंक अधिकारियों से जवाब तलब

जबलपुर,देशबन्धु। मप्र हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत व जस्टिस विवेक जैन की युगलपीठ ने बिना विभागीय जांच व आरोप पत्र दिये सेवा से बर्खास्त किये जाने के मामले में नाराजगी व्यक्त करते हुए चेयरमैन बैंक आफ इंडिया मुंबई, जनरल मैनेजर भोपाल व उज्जैन को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। इसके लिए तीन सप्ताह की मोहलत दी गई है।

याचिकाकर्ता योगेंद्र बरगेश की ओर से अधिवक्ता नर्मदा प्रसाद चौधरी व अमित कुमार चौधरी ने पक्ष रखा। उन्होंने दलील दी कि याचिकाकर्ता पर बैंक की भर्ती परीक्षा में परीक्षार्थी के स्थान पर अन्य व्यक्ति को बैठाने का आरोप लगाया गया। इस सिलसिले में स्पष्टीकरण मांगा गया। स्पष्टीकरण देने के तुरंत बाद शोकाज नोटिस देकर नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। चूंकि नियमानुसार विभागीय जांच में आरोप सिद्ध न होने तक इस तरह का कठोर दंड नहीं दिया जा सकता। सुनवाई पश्चात न्यायालय ने अनावेदकों को नोटिस जारी कर जवाब पेश करने के निर्देश दिये है।

सिविल अस्पताल में सुरक्षाकर्मी करे रहे इलाज!

मरीजों के परिजनों के विरोध करने पर ड्यूटी डॉक्टर पुलिस में कर रहे झूठी शिकायत

पाटन, देशबन्धु। नगर की सिविल अस्पताल पाटन में आए दिन मरीजों के इलाज में ड्यूटी डॉक्टरों के द्वारा लापरवाही एवं सुरक्षा गार्ड के द्वारा इलाज कराया जाना आम बात हो गई है।

यदि कोई पीड़ित इन सुरक्षा गार्ड से अपने मरीज का इलाज करवाने से मना करता है, साथ ही इसकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से करने की बात करता है तो ऐसे लापरवाह ड्यूटी डॉक्टर फौरन पीड़ित की पुलिस में शिकायत दर्ज कराने थाने पहुंच जाते हैं। ऐसा ही एक मामला पाटन से निकलकर सामने आया है, जहां पीड़ित प्रिंस यादव पिता भूपेन्द्र सिंह यादव निवासी चौधरी मोहल्ला पाटन ने बताया कि शुक्रवार 21 फरवरी की सुबह लगभग 4.30 बजे मां का स्वास्थ्य खराब होने की वजह से उनको सिविल अस्पताल पाटन लेकर पहुंचे, जहां ड्यूटी डॉ. वैशाली खन्ना आराम फरम रही थी, तभी उपस्थित नर्स ने मेरी मां को वार्ड में लेकर आए और नर्स के कहने पर सुरक्षा गार्ड ने मेरी मां का बीपी चैक किया, जब मैने ड्यूटी डॉक्टर से अपनी मां का इलाज करवाने की बात कही तो नर्स एवं सुरक्षा गार्ड ने बताया कि यहां हम लोग ही आने वाले मरीजों का इलाज करते हैं। मैडम अभी आराम कर रही है तो मैने कह दिया कि इसकी शिकायत में कलेक्टर दीपक से करूंगा तब डाक्टर मैडम ने मेरे और मेरी मां के साथ अभद्रता करते हुए अस्पताल से बाहर निकलवा दिया और मुझे धमकाते हुई बोली कि तुझे अभी झूठे कैश में फसाकर जेल भिजवा दूंगी, इसी बीच मेरी मां की तबीयत और बिगड़ने लगी तो में सरकारी अस्पताल से 7.30 अपनी मां को लेकर डॉक्टर नीरज नेमा के यहां आया और मां का इलाज करवा रहा था। आज शाम को मुझे जानकारी मिली कि डॉक्टर वैशाली खन्ना मेरी झूठी शिकायत करने पाटन थाने पहुंची हैं। नगर के गणमान्य नागरिकों के कहने पर मेरी गलती नहीं होने के बावजूद भी ड्यूटी डॉक्टर से मैने माफी मांगी, लेकिन डॉक्टर मैडम मेरी पुलिस में झूठी शिकायत करने पर आमादा हैं। जानकार बताते हैं कि इलाज के दौरान लापरवाही को लेकर मेडिकल स्टाफ को राहत दर राहत मिलती जा रही है। डॉक्टर्स के पक्ष में पिछले साल संसद में कानून में परिवर्तन किया गया। अब मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने डाक्टरों के पक्ष में एक और फैसला सुनाया है। ऐसे में सवाल उठता है कि मेडिकल स्टाफ की निरंकुशता पर कैसे लगाम कसी जा सकेगी। बताया जा रहा हैं कि पीड़ित पक्ष की ओर से दो तीन सौ लोग पाटन थाने में एकत्रित होकर ड्यूटी डॉक्टर की लापरवाही एव मरीज एवं उसके बेटे के साथ की गई अभद्रता की शिकायत करने पहुंच गए। बबाल बढ़ता देख पुलिस के भी हाथ पाव फूलने लगे इसी बीच स्वास्थ्य विभाग की सीनियर डॉक्टरों ने भी खन्ना मैडम को समझने और सुलह करने की कोशिश की, लेकिन डॉक्टर मैडम अपनी जिद पर अड़ी है। सूत्र बता रहे है कि डॉक्टर मैडम किसी केंद्रीय मंत्री की रिश्तेदार बताई जा रही हैं खबर यह भी है कि पीड़ित पक्ष के परिजन एवं मोहल्ले वाले पाटन नगर की मुख्य सड़क पर चक्का जाम करने वाले है और लापरवाह ड्यूटी पर सक्त कार्यवाही के साथ-साथ पुलिस में मामला दर्ज करने अपना विरोध प्रदर्शन करने वाले है।

इनका कहना

जब इस संबंध में खंड चिकित्सा अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने बताया कि सुबह प्रिंस यादव अपनी मां को इलाज कराने अस्पताल आए थे, इसी बीच ड्यूटी डॉक्टर एवं मरीज के परिजनों के बीच कुछ कहा सुनी हो गई। मेरे द्वारा दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया गया। दोनों पक्ष एक दूसरे पर मामला दर्ज करवाने थाने पहुंचे है, मुझे इसकी जानकारी नहीं है।

डॉ. आदर्श विश्नोई
खंड चिकित्सा अधिकारी, सिविल अस्पताल, पाटन

कलेक्टर ने जारी किया प्रतिबंधात्मक आदेश

त्यौहारों को लेकर सख्ती, बिना अनुमति कार्यक्रम, डीजे, रैली पर रोक

पाटन, देशबन्धु। आगामी त्यौहार जैसे महाशिवरात्रि,रमजान माह,होलिकोत्सव एवं होली पर्व,चैत्र नवरात्रि पर्व, गुड़ी पड़वा पर्व, ईदुल फितर, हनुमान जयंती इत्यादि पर्व के दौरान सम्पूर्ण जिले में कलेक्टर दीपक सक्सेना एवं जिला मजिस्ट्रेट के द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत् प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं जिसमें समस्त प्रकार के आयोजनों की अनुमति प्रशासनिक अधिकारियों से लेना अनिवार्य होगी वही बिना अनुमति के आयोजनों पर वैधानिक कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं (2) जिले में दो पहिया वाहन रैली एवं डीजे तथा ध्वनि विस्तारक यंत्रो से अपत्तिजनक नारे/गाने इत्यादि पर पूर्णत: प्रतिबंध रहेगा।

इसके अलावा प्रशासनिक अनुमति प्राप्त आयोजनों में ऐसे नारे अथवा शब्दों का प्रयोग नहीं होगा जिससे किसी भी धर्म/वर्गों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचे ऐसा करने वालों के विरूद्ध विधिसम्मत कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं।

जिले में कोई भी व्यक्ति, संस्था, पशु मालिक अपने पशुओं को सडकों पर न छोडे और न ही सडकों पर आने दें। घरेलू नौकरों एवं व्यवसायिक नौकरों की सूचना संबंधित व्यक्तियों के द्वारा थाने पर देना अनिवार्य किया गया है इसके अलावा होटल,लॉज, धर्मशाला में रूकने वाले व्यक्तियों के पहचान पत्र लेना भी अनिवार्य होगा साथ ही ठहरने वाले व्यक्तियों की सूची संबंधित थाने पर देना होगी। पेईंग गेस्ट,किरायेदारो की सूचना संबंधित थाने में लिखित रूप से देना अनिवार्य किया गया है।

जिले की राजस्व सीमा क्षेत्र में किसी भी आपत्तिजनक फोटो, चित्र, मैसेज करने या साम्प्रदायिक मैसेज करने या इनकी फारवर्डिंग, लाईक, ट्वीटर एक्स, फेसबुक, व्हाटसएप इत्यादि सोशल मीडिया पर करने या इन पर कमेंट/ लाईक करने की गतिविधियों को प्रतिबंधित किया गया है, साथ ही सोशल मीडिया के ग्रुपों पर विशेष निगाह रखने के निर्देश जिम्मेदारों के द्वारा दिए गए हैं। वही इन आदेश का उल्लंघन होने पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 तथा अन्य प्रावधानों के तहत् कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू किया गया है और यह आदेश जिले में दो मास तक लागू रहेगा।

सार-समाचार

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में किया महाशिवरात्रि पर्व का आयोजन

बरेला, देशबन्धु। विगत दिवस् थाने के पास स्थित शिव दर्शन भवन मे महाशिवरात्रि के पावन पर्व के अवसर पर मंगलयतन युनिवर्सिटी के वॉइस चांसलर भ्राता संभा शिवाराव, विट्स स्कूल की प्राचार्य श्रीमती निमिषरा त्यागी,दादा दरबार समिति के अध्यक्ष भ्राता राजेश सोनी ,राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि भ्राता अरविन्द तिवारी, पूर्व रिटायर कर्नल भ्राता सतीश शर्मा,सिविल सर्जन एस के पांडये एवं जबलपुर सेवा केंद्र की मुख्य संचालिका बी के भावना बहिजी ,बरेला सेवा केन्द्र की संचालिका बी के अनिता बहिन के द्वारा शिव ध्वजारोहण किया गया। शिवरात्रि के अध्यात्मिक रहस्य पर संगोस्टी का आयोजन किया गया। सभी के द्वारा कहा गया कि लोग कहते है कि शिव भगवान ने गांजा पिया इसलिए हम भी पीते है पर जब बात आती है कि शिवभागवान ने विष भी पिया है तो आप भी पियो.तो उसके लिए मना करते है।इसका अध्यात्मिक रहस्य है कि हम परमात्म नाम का ऐसा नशा करे जो जीवन भर चढ़ा रहे।जिससे जीवन सफल हो जाये। राजयोग के निरन्तर अभ्यास से मन को वश मे किया जा सकता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन भ्राता प्रकाश विश्वकर्मा जी ने किया.इस अवसर पर बी के ज्योति बहिन भ्राता अरविन्द साहूजी,कृष्णकुमार साहूजी,सुनील साहूज जी,सेवाकेंद्र के सभी भाई,बहिने,माताए सहित् नगर के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे,कार्यक्रम के अंत मे सभी को प्रसाद सहित ईस्वरीय सौगात भी दी गई।

शिव पुराण में सुनाई समुद्र मंथन की कथा

गोसलपुर, देशबन्धु। सिहोरा तहसील के गोसलपुर कस्बे में स्थित रामसागर जलाशय के तट पर शिवघाट मंदिर में चल रहे शिव पुराण की कथा में कथा वाचक पंडित योगेंद्राचार्य पांडेय जी ने समुद्र मंथन की कथा सुनाते हुए बताया की देवी देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन हुआ था इस मंथन में 14 रत्न और अमृत कलश निकला था इस अमृत को पीने के लिए देवताओं और राक्षसों में युद्ध हुआ था जिसे देवासुर संग्राम के नाम से जाना जाता है

देवता और राक्षस दोनों ब्रह्मांड में सबसे शक्तिशाली बनना चाहते थे भगवान विष्णु ने सुझाव दिया था की देवता और राक्षस दोनों मिलकर क्षीर सागर का मंथन करें समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले कालकूट ऐराबत कामधेनु उच्चै: श्रवा कौस्तुभ एवं पद्मराग मणि कल्पबृक्ष रम्भा नामक अप्सरा महालक्ष्मी व्यासपीठ का पूजन अर्चन मंदिर समिति के उपेंद्र चौबे अर्पित चौबे रवि सिंह ठाकुर शंकर लाल बर्मन अवधेश गर्ग सुरेंद्र चौकसे सुरेश पालीवाल हेमचंद असाटी सुनील तिवारी शंकर लाल बर्मन प्रेमलता सिंह प्रिया पालीवाल माया झारिया भागवती चौकसे ने किया।

पार्षद दीपक जैन के कार्यो से खुश है वार्ड की जनता

पाटन, देशबन्धु। पाटन की धरती ने हमेशा ही ऐसे व्यक्तित्वों को जन्म दिया है, जिन्होंने जनसेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है। नगर में इन दिनों पार्षद दीपक जैन का नाम बहुत तेजी से उभर रहा है यह नाम आज सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं,बल्कि सेवा,समर्पण और संघर्ष की पहचान बन चुका है। हर दीन दुखी की मदद को तत्पर रहने वाले पार्षद दीपक जैन निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा को ईश्वर की भक्ति मानते हैं। उनकी लोकप्रियता नगर में दिनों दिन बढ़ती जा रही है और खासकर बच्चों और युवाओं के वे प्रेरणास्त्रोत बन चुके हैं। लोगों की राय के अनुसार निकाय के वार्ड क्रमांक 13 से भाजपा पार्षद दीपक जैन ने विकास कार्य में कोई कसर नहीं छोड़ी है और पार्षद बनने के बाद अपने अधिकतर वादों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। बताया जाता है कि जरूरतमंदों के लिए हर समय उपलब्ध रहना,उनकी समस्याओं को सुनना और समझना,उनके समाधान के लिए प्रयास करना यही दीपक जैन की कार्यशैली का मुख्य आधार है। पाटन की राजनीति में अपनी सशक्त पहचान बना रहे दीपक सेवा और नेतृत्व को समान रूप से निभा रहे हैं। लोगों की आवाज बनने की उनकी क्षमता और समाज के प्रति उनका समर्पण उन्हें नगर के अन्य नेताओं से अलग बनाता है। राजनीति में सेवा का जो जज़्बा उनके भीतर है,वह उन्हें आम जनता के बीच एक सच्चे मित्र और मार्गदर्शक के रूप में स्थापित कर रहा है।

लैपटॉप की राशि पाकर विद्यार्थियों के चेहरे खिले

गोसलपुर, देशबन्धु। लैपटॉप की पाकर देख विद्यार्थियों के चेहरे खिल उठे। विगत दिवस मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 12वीं कक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले सभी विद्यार्थियों को सिंगल क्लिक में राशि प्रदान की। इसी के तहत ज्ञानोदय मंदिर जुझारी के पांच विद्यार्थी इस वर्ष चयनित हुए और पांचो विद्यार्थियों के खाते में 25-25 हजार रुपए की राशि आई। छात्र-छात्राओं में आकांक्षा मिश्रा पिता राजेंद्र मिश्रा प्रयास गुप्ता पिता प्रदीप गुप्ता, प्रद्युम्न सिंह राजपूत पिता धर्मेंद्र सिंह राजपूत, रिया साहू पिता संतोष साहू, सूर्यांश पटेल पिता जितेंद्र पटेल को राशि प्राप्त हुई। सभी बच्चों को संस्था प्रधान रश्मि गुप्ता, शिक्षक ओमप्रकाश पटेल, सुग्रीव मिश्रा, रंजीत राम जे, राम दुबे, सचिन रजक, जितेंद्र कुमार, राजेश कोरी, माया झरिया जानकी राजभर सहित समस्त स्टाफ एवं अभिभावकों ने बधाई देकर उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

पनागर के रेपुरा में कथा करने से रोकने पर बवाल

ओबीसी एवं एसटी-एससी संयुक्त मोर्चा ने थाने का घेराव कर सौंपा ज्ञापन

पनागर, देशबन्धु। रेपुरा ग्राम पनागर 24 फरवरी से 4 मार्च तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन एक विशेष समुदाय द्वारा किया जा रहा था, जिसमें देविका पटेल नामक युवती द्वारा कथा का वाचन किया जा रहा था, जो कि समीप ग्राम इमलई की निवासी हैं।

संयुक्त ज्ञापन में कुर्मी महासभा के लोगों ने बताया की कथा कर रही कथावाचक देविका के पिता मानिक लाल पटेल को रेपुरा स्थित कमलापति मढिया में कुछ युवकों द्वारा बुलाया गया एवं विरोध व अपशव्दों से देविका के पिता के साथ अभद्रता की गई, इसके विरोध में सात युवक जो ब्राह्मण समुदाय के रेपुरा क्षेत्र निवासी हैं उनके खिलाफ ज्ञापन सौंप कर कड़ी कार्यवाही की मांग की गई है। देविका पटेल ने बताया कि धर्म का प्रचार में कर रही हूं। ऐसा करने से कुछ लोग मुझे रोक रहे हैं एवं धमकी दे रहे हैं। मुझे सुरक्षा की आवश्यकता है एवं मांग की गई कि जातिवाद विरोध करने वालो पर कार्यवाही हो। घेराव एवं ज्ञापन में राजेश पटेल, विवेक पटेल, शैलेंद्र पटेल, प्रदीप पटेल, भीम इंद्र कुमार पटेल, प्रमोद पटेल, दिनेश पटेल, राजेंद्र पटेल, दिलीप पटेल, धनेश पटेल, पवन पटेल, बसंत पटेल, मोनू पटेल, बृजेश पटेल, राजेश यादव, रमेश पटेल ने नगर पुलिस अधीक्षक प्रियंका करचाम एवं थाना प्रभारी अजय सिंह को ज्ञापन सौंपते हुए दो दिवस में कार्यवाही की मांग की एवं चेतावनी दी की कार्यवाही नहीं की गई तो थाना पनागर के समक्ष उग्र आंदोलन होगा।

थाना प्रभारी अजय सिंह ने बताया कि ओबीसी एकता मंच एवं देविका पटेल द्वारा ज्ञापन प्राप्त हुआ है, जिसमें कुछ व्यक्तियों द्वारा विरोध अपशब्द कहने की बात सामने आई है। मामले को जांच में लेकर उचित कार्यवाही की जाएगी।

12 दिनों से हाईवे किनारे लगातार चल रहा भंडारा

महाकुंभ प्रयागराज जाने वाले विभिन्न प्रदेशों के यात्री कर रहे भोजन

गांधीग्राम, देशबन्धु। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 30 जबलपुर सिहोरा हाईवे सड़क मार्ग पर गांधीग्राम तिराहे पर मानव सेवाभाव का अनूठा उदाहरण देखने को मिल रहा है यहां पर भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजमणि सिंह बघेल के संयोजन में लगातार 12 दिवसों से दिन और रात में जहां महाकुंभ प्रयागराज जाने आने वाले यात्रियों को स्वल्पाहार, भोजन, चाय, पानी का वितरण किया जा रहा है, वहीं जो यात्री रात्रि के समय यात्री नि:शुल्क विश्राम भी कर रहे हैं रात्रि विश्राम करने वाले यात्रियों के लिए प्रसाधन, सोने के कपड़े, स्नान हेतु व्यवस्था आदि का प्रबंध भी किया गया है।

हाइवे सड़क किनारे आयोजित इस भंडारे में भारत के विभिन्न प्रदेशों मध्यप्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक सहित अनेक प्रदेशों के महिला पुरुषों की बड़ी संख्या में यात्रियों ने इस भंडारे में भोजन ग्रहण कर मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। एक बार में हजारों लोगों का बन रहा खाना- भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजमणि सिंह बघेल द्वारा भंडारे कार्यक्रम में भोजन बनाने के लिए ऐसे बर्तन की उपलब्धता कराई गई है कि 5 हजार लोगों का खाना एक साथ बन जाता है , जहां खाना के तैयार किया जाता है वहां भक्तों की टीम सेवाकार्य में लगी हुई है । यहां पर लगे तीन बड़े कड़ाह में पहले कड़ाह में चावल तैयार हो रहा था। इसमें एक बार में एक से 50किलो चावल तैयार हो जाता है। बड़ी करहैयों में एक बार में 50 पूरियों निकलती हैं। यह क्रम दिनभर और देर रात तक जारी रहता है इस संबंध में भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजमणि सिंह बघेल ने कहा कि महाकुंभ प्रयागराज जाने वाले यात्रियों के लिए इस सहयोग और सेवाभाव से उन्हें, उनके परिवार और पूरी टीम को आत्मिक सुख प्राप्त हो रहा है। श्री बघेल ने कहा है कि मानवता की सेवा करना ही सच्चा धर्म है।

विधायक भी पहुंचे भंडारे में-हाइवे सड़क मार्ग तिराहा गांधीग्राम में बारह दिनों से लगातार चल रहे भंडारे में भाजपा जिला अध्यक्ष राजकुमार पटेल,पाटन विधायक अजय बिश्नोई , पनागर विधायक इंदु तिवारी, सिहोरा विधायक संतोष बरकड़े, नीरज सिंह ठाकुर परिवार सहित पहुंच चुके हैं।

बेला माइंस से चल रहे हाइवा उड़ा रहे धूल का गुबार, ग्रामवासी परेशान

गोसलपुर, देशबन्धु। ग्राम पंचायत बेला में जगन्नाथ माइंस से लगभग आधा दर्जन गांवों के लोग परेशानी महसूस कर रहे हैं। जब से माइंस चालू हुई है तब से लोग धूल डस्ट से परेशान हो रहे हैं।माइंस के उत्खनन से निकले रा मटेरियल और ब्लू डस्ट आयरन ओर आदि ढोने वाले हाइवा डंफर जब चलते हैं तो धूल उड़ाते हुए चलते हैं।

बेला गांव से लगे हुए गांवों, सिलुआ, झांसी, अगरिया, टिकरिया, पौड़ी कला, बरनू तिराहा,बेला सड़क किनारे रहने वाले लोगों की परेशानियां बढ़ गई हैं। सड़क पर सिंचाई नहीं होने से जहां इस मार्ग पर दिन भर धूल के गुबार उड़ रहे हैं। वहीं सड़क की गुणवत्ता पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

उड़ते धूल के गुबारों से सड़क के सहारे स्थित मकानों में लोगों का जीना मुश्किल हो रहा है। सड़क पर सिंचाई नहीं किए जाने से दिनभर धूल के गुबार उड़ते रहते हैं। कस्बे का मुख्य मार्ग होने इसी मार्ग पर रोडवेज बस स्टैंड रेलवे स्टेशन होने से सड़क पर दिनभर वाहनों का आवागमन बना रहता है,जिससे दिनभर धूल के गुबार उड़ते रहते हैं। इससे दुपहिया वाहन चालकों, पैदल राहगीरों, दुकानदारों आसपास रहने वाले लोगों को बेहद मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामवासियों ने बताया कि माइंस मालिकों द्वारा सुबह ,शाम के समय ही सड़क पर टैंकर से पानी का छिड़काव किया जावे। तेज गर्मी के चलते दो-तीन घंटे में ही पूरी तरह से सूख जाता है। इसके बाद दिनभर रोड पर धूल के गुबार उड़ते रहते हैं। गुबारों से सड़क के आसपास घरों दुकानों में धूल की मोटी परतें जमा हो जाती है। वहीं धूल उड़ने से स्वास्थ्य को लेकर खतरा बना हुआ है। लोगों ने प्रशासन से सड़क पर सिंचाई कराए जाने की मांग की है। लोग हो रहे बीमार- लोगों का कहना है दिनभर धूल उड़ते रहने के कारण लोगों को अब अस्थमा आदि बीमारी होने की आंशका सताने लगी है। जैसे ही सड़क से कोई वाहन निकलता है, वैसे ही उसके पीछे धूल का गुबार नजर आता है। धूल उड़ते रहने से पैदल चल रहे लोगों को ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है।

सड़क कब्जा करने वालों के सामने बेबस निकाय के जिम्मेदार!

पार्षद की आपत्ति के बावजूद सीएमओ मामले की लीपापोती करने में जुटीं, लोगों में आक्रोश

पाटन, देशबन्धु। जहां एक ओर मोहन यादव सरकार जनता के हित में लगातार असरदार फैसले ले रही है, वही पाटन निकाय प्रशासन स्वच्छता एवं मुख्य सड़कों पर लगातार बढ़ रहे अतिक्रमण को लेकर गंभीर दिखाई नहीं दे रही हैं।

निकाय क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों को रोजाना इन हाथ ठेलो, सड़क किनारे लगी सब्जी की दुकानों से लगने वाले जाम से रोजाना बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस मामले में जिम्मेदारों ने मौन धारण कर रखा है। वार्डवासी बताते हैं कि सीएमओ के द्वारा मुख्य सड़क कमानिया गेट से लेकर सिविल अस्पताल के दोनों किनारे पर लगी सब्जी की दुकानों एवं हाथ ठेला में लगने वाली फल सब्जी की दुकानों को नहीं हटाया जा रहा है, जिससे अतिक्रमण करने वालों के हौसले इस समय बुलंद है।

जानकारी के मुताबिक दुकानदारों को सड़क किनारे दुकान लगाने के बजाए बुधवार को झंडा चौक प्रांगण में सब्जी एवं अन्य दुकानें लगाने के निर्देश निकाय प्रशासन के द्वारा दिया गया था। वही सप्ताह के बाकी दिनों में सीएम राइज स्कूल के सामने दुकान लगाने के निर्देश भी दिए गए थे लेकिन इन निर्देशों को धता बताते हुए दुकानदारों के द्वारा नगर की मुख्य सड़क कमानिया गेट से लेकर सिविल अस्पताल तक इसके अलावा बस स्टेंड, सिविल कोर्ट चौराहा, कटंगी रोड पर हाथ ठेले एवं सड़क किनारे दुकान लगाकर आवागमन को अवरुद्ध करने का काम इन अतिक्रमण करने वालों के द्वारा किया जा रहा हैं। इसके अलावा सिविल कोर्ट चौराहे पर ऑटो सवारी,पिकअप वाहनों को भी सड़क किनारे खड़ा कर दिया जाता है जिससे जाम की स्थिति हर समय बनी रहती है और थाने की पुलिस भी इस मामले पर कोई कार्यवाही नहीं करती है। उल्लेखनीय है कि बाजार बैठकी ठेकेदार के द्वारा सड़क किनारे की फुटपाथी दुकानों एवं हाथ ठेलो वालों को नहीं हटाने का सीएमओ पर समय समय पर दबाव बनाया जाता रहा है। जानकार बताते है कि नगर की सड़कों पर जितने ज्यादा हाथ ठेला और फुटपाथी दुकानें सजेगी उतनी ज्यादा ठेकेदार की कमाई होगी।

ठेकेदार के द्वारा इन कब्जेधारियों को संरक्षण देने की भी जानकारी मिल रही है जिसकी वजह से नगर में हाथ ठेला और फुटपाथी दुकानों की बाढ़ सी आ गई है। सरकारी अमले की खामोशी ही बता रही है कि नगर में अतिक्रमण करने वालों के हौसले कितने बुलंद है जब तो वे सरकारी सड़क तक को भी कब्जाने से नहीं घबराते है। इस मामले की शिकायत कई बार स्थानीय लोग निकाय के ज़िम्मेदार अधिकारियों से कर चुके है लेकिन निकाय के लापरवाह और भ्रष्ट अधिकारी इस मामले को एक दूसरे पर टालकर ठंडे बस्ते में डाल देते हैं जिसकी वजह से लोगों का सरकारी अमले से विश्वास दिनों दिन उठता जा रहा है।

बेंजामिन नेतन्याहू भड़के तो हमास ने मान ली गलती, इजरायल को सौंपा शिरी बिबास का असली शव

तेलअवीव। इजरायल और हमास में युद्धविराम के समझौते के तहत हमास ने गुरुवार को चार शव इजरायल को सौंपे थे। इसके बाद इजरायल ने दावा किया था कि हमास ने शिरी बिबास की जगह किसी गाजन महिला का शव भेज दिया है। बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास को परिणाम भुगतने की धमकी दी थी। इसके बाद हमास नए अपनी गलती मानते हुए शिरी बिबास का असली शव अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति (आईसीआरसी) के हवाले किया है। अब इसे इजरायली सेना को सौंपा जाएगा। हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी है। इससे पहले इजरायली अधिकारियों ने पाया कि गुरुवार को हमास द्वारा लौटाया गया शव शिरी बिबास का नहीं था। अधिकारी ने बताया कि इजरायली हवाई हमलों के कारण हुई अराजकता के कारण शवों की पहचान गलत हो गई। उन्होंने कहा, यह अनजाने में हुई गलती थी क्योंकि शिरी का शव उस क्षेत्र पर इजरायली हमलों के कारण अन्य शवों के साथ मिल गया था, जहां वह था। हमास की सशस्त्र शाखा अल-क़स्साम ने गुरुवार को चार इज़रायली बंधकों के अवशेषों को संभवत: शिरी बिबास, उनके दो बेटे एरियल और केफिर, साथ ही सेवानिवृत्त पत्रकार ओडेड लिफ़्शिट्ज़ को आईसीआरसी के माध्यम से वापस इज़रायल भेज दिया।

मुजीब को भुलाया, जिन्ना को अपनाया!

यूनुस राज में पूर्वी पाकिस्तान बनने के कगार पर बांग्लादेश?

ढाका। बांग्लादेश जो अपनी मातृभाषा और सांस्कृतिक पहचान के लिए लड़ा था, आज खुद अपनी जड़ों को काटने पर आमादा दिख रहा है। कभी शेख मुजीबुर रहमान के नेतृत्व में उभरा यह राष्ट्र अब जिन्ना के नाम की माला जप रहा है। हालात ऐसे हैं कि मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में बांग्लादेश फिर से पूर्वी पाकिस्तान बनने की राह पर है। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के मौके पर न केवल श्रद्धांजलि कार्यक्रम फीके रहे, बल्कि कई जगहों पर तो शहरों के बीच बसे ऐतिहासिक थरोहरों को ही तोड़ दिया गया। सवाल यह है कि क्या यह वही बांग्लादेश है, जो भाषा के लिए लड़ा और हजारों जानें कुर्बान कर दीं?

शहीदों को भुलाने का खेल– 1952 में जब पाकिस्तान ने जबरन उर्दू थोपने की कोशिश की, तो बांग्लादेश ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह की चिंगारी ने 1971 के मुक्ति संग्राम को जन्म दिया और पाकिस्तान को हार माननी पड़ी। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। एक ओर उर्दू भाषा को बांग्लादेश में फिर से जगह दी जा रही है, वहीं जिन्ना की तारीफों के पुल बांधे जा रहे हैं। पिछले साल पहली बार बांग्लादेश की राजधानी ढाका में जिन्ना की बरसी पर बड़े स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहां उर्दू कविताएं पढ़ी गईं, गजलें गाई गईं और उनकी प्रशंसा में भाषण दिए गए। इस बार मामला और आगे बढ़ गया। सरकारी स्कूलों में उर्दू पढ़ाने की सिफारिशें हो रही हैं, और यहां तक कि पाठ्यक्रम से शेख मुजीबुर रहमान से जुड़ी सामग्री को हटाया जा रहा है। बांग्लादेश में इस बार मातृभाषा दिवस अलग ही रंग में दिखा। हर साल रात 12 बजे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं, लेकिन इस बार प्रधानमंत्री का पद खाली होने के चलते यह परंपरा भी टूट गई। राष्ट्रपति मोहम्मद साहबुद्दीन शहीदों को श्रद्धांजलि देने पहुंचे, लेकिन अंतरिम सरकार के प्रमुख सलाहकार मोहम्मद यूनुस उनके साथ नहीं आए। वे अलग से श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

यही नहीं, कट्टरपंथी समूहों को भी इस बार मातृभाषा दिवस के आयोजन में व्यवधान डालने का खुला मौका मिला। कुमिल्ला में एक ऐतिहासिक शहीद मीनार को कट्टरपंथियों ने तोड़ दिया, जबकि कई अन्य जगहों पर लोगों को पुष्पांजलि अर्पित करने से रोका गया। मातृभाषा दिवस पर भारत और बांग्लादेश के बीच हमेशा सौहार्द देखने को मिलता था। हिली बॉर्डर पर दोनों देशों के लोग मिलकर इस दिवस को मनाते थे, लेकिन इस बार यह आयोजन नहीं हुआ। बताया जा रहा है कि यह भारत की ओर से एक तरह का सांकेतिक विरोध था। भारत की नाराजगी साफ दिखी जब कोलकाता में बांग्लादेश के वाणिज्य दूतावास में भी कोई बड़ा आयोजन नहीं हुआ। यह सब संकेत हैं कि भारत-बांग्लादेश संबंधों में दरार गहरी होती जा रही है।

क्या बांग्लादेश फिर बन रहा पूर्वी पाकिस्तान?– बांग्लादेश जिस तेजी से अपने इतिहास को मिटा रहा है, वह चिंता का विषय है।

जिन्ना की याद में कार्यक्रम, उर्दू भाषा का बढ़ता प्रभाव, शेख मुजीब को भुलाने की कोशिशें यह सब संकेत दे रहे हैं कि बांग्लादेश अपनी पहचान खोकर फिर उसी पाकिस्तान की गोद में जाने को तैयार हो रहा है, जिससे उसने आजादी पाने के लिए खून बहाया था।

हमास ने पूरा कर दिया वादा, दो और इजरायली बंधक सौंपे; चार की रिहाई जल्द

तेलअवीव। हमास ने शनिवार को दो और इजरायली बंधकों को रिहा कर दिया है। हमास ने तल शोहम और अवेरा मेंगिस्तू को रेड क्रॉस के हवाले कर दिया है। अब रेड क्रॉस दोनों बंधकों को इजरायली सेना को सौंपेगा। जानकारी के मुताबिक जल्द ही दो और बंधकों को रिहा किया जा कता है। शनिवार को 6 बंधकों की रिहाई की बात कही गई थी। सीजफायर के पहले चरण में हमास ने 33 बंधकों को रिहा करने का वादा किया था। इन 6 कि रिहाई के बाद यह संख्या पूरी हो जाएगी। 7 अक्टूबर को हमले के दौरान हमास ने इजरायल से शोहम, एलिया, उमर शेम तोव, उमर वेंकर्ट को बंथक बनाया था। शोहम को किबुत्ज से बंधक बनाया गया था। उनकी पत्नी और बच्चों को नवंबर में ही छोड़ दिया गया था। बतादें कि हमास जब भी बंधकों को छोड़ता है तो उन्हें होस्टेजेज स्क्वायर पर इजरायली सेना को सौंपा जाता है। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहते हैं और उनका स्वागत करते हैं। हमास ने शनिवार को ही इजरायली बंधक शिरी बिबास का शव अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति (आईसीआरसी) को सौंपा है। इससे पहले जिस महिला का शव हमास ने भेजा था वह बिबास का नहीं बल्कि गाजा की ही किसी महिला का था। इसपर इजरायल ने कड़ी आपत्ति जताई थी और प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने परिणाम भुगतने की धमकी तक दे दी थी। हमास ने गलती मानते हुए कहा कि इजरायली हवाई हमलों के कारण हुई अराजकता के कारण शवों की पहचान गलत हो गई। हमास ने कहा यह अनजाने में हुई गलती थी क्योंकि शिरी का शव उस क्षेत्र पर इजरायली हमलों के कारण अन्य शवों के साथ मिल गया था, जहां वह था। अल-क़स्साम ने गुरुवार को चार इज़रायली बंधकों के अवशेषों को संभवत: शिरी बिबास, उनके दो बेटे एरियल और केफिर, साथ ही सेवानिवृत्त पत्रकार ओडेड लिफ़्शिट्ज़ को आईसीआरसी के माध्यम से वापस इज़रायल भेज दिया। फरेंसिक जांच में पाया गया था कि शव शिरी बिबास का नहीं था।

पाकिस्तान में 22 भारतीय मछुआरों की सजा पूरी, लौटेंगे स्वदेश

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी अधिकारियों ने कराची की मलीर जेल से 22 भारतीय मछुआरों को रिहा कर दिया है और उन्हें शनिवार को भारत को सौंपे जाने की संभावना है। समाचारपत्र 'एक्सप्रेस ट्रिब्यून' ने मलीर जेल के अधीक्षक अरशद शाह के हवाले से बताया कि मछुआरों को उनकी सजा पूरी होने के बाद शुक्रवार को जेल से रिहा कर दिया गया। 'ईदी फाउंडेशन' के अध्यक्ष फैसल ईदी ने मछुआरों के लिए लाहौर तक परिवहन की व्यवस्था की, जहां से वे भारत वापसी की यात्रा जारी रखेंगे। उन्होंने लंबी अवधि तक जेल में रहने के दौरान मछुआरों के परिवारों की पीड़ा को उजागर किया तथा सजा पूरी होने के बाद उनकी तत्काल रिहाई तथा शीघ्र वापसी का आह्वान किया। पाकिस्तानी अधिकारी भारतीय मछुआरों को वाघा सीमा पर पहुंचाते हैं, जहां भारतीय अधिकारी आधिकारिक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद उनकी वापसी की व्यवस्था करते हैं। दरअसल, दोनों देशों के मछुआरे मछली पकड़ते हुए समुद्री सीमाओं को पार कर एक-दूसरे के जलक्षेत्र में घुस जाते हैं जहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता है। दोनों देशों के बीच एक जनवरी को आदान-प्रदान की गई कैदियों की सूची के अनुसार, पाकिस्तान में 266 भारतीय कैदी हैं जिनमें 217 मछुआरे हैं।

तेल अवीव को मिट्टी में मिला देंगे

ईरान की धमकी पर इजरायल बोला- हम भी हैं तैयार

इरना। ईरान और इजरायल के बीच जारी धमकियों ने मध्य पूर्व में और अधिक अस्थिरता पैदा कर दी है। हाल ही में ईरानी इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स के जनरल इब्राहीम जब्बारी ने कहा कि ईरान ऑपरेशन ट्रू प्रमिस 3 के तहत इजरायल को नष्ट कर देगा।

उन्होंने चेतावनी दी, ऑपरेशन ट्रू प्रमिस 3 को सही समय पर, सटीक तरीके से और इतने बड़े पैमाने पर अंजाम दिया जाएगा कि इजरायल को नष्ट कर दिया जाएगा और तेल अवीव व हैफा को जमींदोज कर दिया जाएगा। इजरायल के विदेश मंत्री गिडियन सार ने जब्बारी की धमकी का कड़ा जवाब देते हुए कहा, अगर यहूदी लोगों ने इतिहास से कुछ सीखा है तो वह यह है कि अगर आपका दुश्मन कहता है कि उसका उद्देश्य आपको नष्ट करना है, तो उसे मानो। हम तैयार हैं। यह धमकी आरजीसी के उच्च अधिकारियों द्वारा इस हफ्ते में दी गई तीसरी धमकी है। आरजीसी के डिप्टी कमांडर ब्रिगेडियर जनरल अली फदवी और एयरोस्पेस फोर्स के कमांडर ब्रिगेडियर जनरल अमीर अली हाजीज़ादेह ने भी इसी तरह की धमकियां दी हैं, जिसमें इजरायल को नष्ट करने की बात की गई है। यह

धमकी ऑपरेशन ट्रू प्रमिस 3 के तहत तीसरी हमले की योजना के तहत दी गई है, जो अप्रैल और अक्टूबर 2024 में ईरानी हमलों के बाद इजरायल पर तीसरी बार हमला करने की योजना है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ढ्ढक्रन्नष्ट ने मिसाइल उत्पादन में भी वृद्धि की है। ईरान ने हाल ही में चीन से 1,000 टन रॉकेट ईंधन के प्रीसर्सर रसायनों की खेप प्राप्त की है। इसके साथ ही, आरजीसी ने एक नया भूमिगत मिसाइल सिटी भी खोला है, जो दक्षिणी जल क्षेत्रों में विध्वंसक जहाजों को निशाना बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिकी-इजरायल गठबंधन ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर संयुक्त हमले की योजना बना सकता है। अमेरिकी-इजरायल सार्वजनिक मामलों के समिति के पूर्व रिसर्च प्रमुख और सीआईए के 30 साल के अनुभवी अधिकारी कॉलिन विंस्टन ने एक लेख में दावा किया है कि अब ईरान पर एक संयुक्त हमले का यह सही समय है। उन्होंने कहा, हिज़बुल्ला और हमास अब इजरायल के लिए खतरा नहीं हैं। ईरान का प्रतिरोध धुरी नष्ट हो चुका है।

विंस्टन ने आगे कहा कि ईरान अब परमाणु बम बनाने के लिए पर्याप्त हथियार-ग्रेड यूरेनियम तैयार करने के कगार पर है और अब इंटेलिजेंस पर निर्भर रहना एक प्रभावी रणनीति नहीं रह गई है। इसलिए, उन्होंने इजरायल और अमेरिका को ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ निर्णायक सैन्य कार्रवाई करने का आह्वान किया है। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरगची ने जनवरी में चेतावनी दी थी कि यदि इजरायल या अमेरिका ने ईरान के परमाणु सुविधाओं पर हमला किया, तो यह क्षेत्र में पूर्ण युद्ध की स्थिति पैदा कर सकता है। उन्होंने अल जजीरा से कहा, ईरान के परमाणु सुविधाओं पर सैन्य हमला करना अमेरिका की सबसे बड़ी ऐतिहासिक गलती होगी।

कौन हैं पटेल? गीता पर हाथ रखकर ली, एफबीआई डायरेक्टर की शपथ

वाशिंगटन। कश्यप प्रमोद पटेल ने शनिवार को भगवद गीता पर हाथ रखकर अमेरिका की जांच एजेंसी एफबीआई के डायरेक्टर के रूप में शपथ ली। वह इस जांच एजेंसी के प्रमुख के रूप में नियुक्त होने वाले नौवें व्यक्ति हैं। शपथ ग्रहण समारोह वाशिंगटन में व्हाइट हाउस परिसर में आइजनहावर एक्जीक्यूटिव ऑफिस बिल्डिंग के भारतीय संधि कक्ष में हुआ। अमेरिकी अटॉर्नी जनरल पैम बोंडी ने इसे आयोजित किया था। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पटेल की नियुक्ति की सराहना की और एफबीआई एजेंट्स में उनके बीच सम्मान का उल्लेख किया। ट्रंप ने कहा, मैं काश को पसंद करता हूं और उन्हें इस पद पर नियुक्त करना चाहता था क्योंकि स्न्रक्चढ्ढ के एजेंट्स उनके प्रति सम्मान रखते थे। उन्होंने कहा, वह इस पद पर सबसे बेहतरीन साबित होंगे। वह बहुत मजबूत और कठोर व्यक्ति हैं। उनके पास अपने विचार हैं। ट्रे गोवडी ने एक शानदार बयान दिया था और कहा कि काश एक असाधारण व्यक्ति हैं और लोग इसे समझते नहीं हैं। जब उन्होंने यह कहा तो कोई संदेह नहीं रहा। यह एक बड़ा बयान था, जिसे एक सम्मानित और मध्यम विचार वाले व्यक्ति ने दिया। पटेल की नियुक्ति को गुरुवार को सीनेट ने 51-49 के वोट से मंजूरी दी। दो रिपब्लिकन सीनेटर, सुज़ैन कॉलिंस (मेन) और लीसा मर्कोव्स्की (अलास्का) ने डेमोक्रेट्स के साथ मिलकर उनकी नियुक्ति का विरोध किया।

कौन हैं काश पटेल?– काश पटेल भारतीय मूल के पिता के बेटे हैं। उनका जन्म एक गुजराती परिवार में हुआ था। काश पटेल के माता-पिता युगांडा के शासक ईदी अमीन के देश छोड़ने के फरमान से डरकर 1970 के दशक में भागकर कनाडा के रास्ते अमेरिका पहुंचे थे। 1988 में पटेल के पिता को अमेरिका की नागरिकता मिलने के बाद एक एरोप्लेन कंपनी में नौकरी मिली। काश पटेल पहले काउंटरटेररिज़्म अभियोजक और रक्षा सचिव के मुख्य कर्मचारी रह चुके हैं।

घोषणा *नतीश ने प्रगति यात्रा के अंतिम दिन पटना के वकास के लिए की योजनाओं की घोषणा*

पटनावासियों को दी 1,404.84 करोड़ की योजनाओं की सौगात

पटना, (एजेंसियां)। प्रगति यात्रा के चौथे चरण के आखिरी दिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटनावासियों को 1,404.84 करोड़ की योजनाओं की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने 623 विकासात्मक योजनाओं का रिमोट के माध्यम से उद्घाटन और शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने पटना को पहला आधुनिक वेंडिंग जोन और हाईड्रोलिक मल्टीलेवल कार पार्किंग की सौगात दी। बुद्ध मार्ग में बनाई जा रही इस पार्किंग में 156 गाड़ियां खड़ी हो सकेंगी। सड़क पार करने के लिए एफओबी, कदमकुआं में दो मंजिला वेंडिंग मार्केट का अनावरण किया। वहीं आशियाना-दीघा रोड स्थित राजीवनगर नाला और आनंदपुरी नाला पर प्रस्तावित फोरलेन सड़क निर्माण करवाने का एलान किया। इसमें 180.99 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इस रोड की लंबाई 4.26 किमी होगी। इसके निर्माण् से दो लाख की आबादी को फायदा होगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दनियांवा प्रखंड के ग्राम तोप से 1404.84 करोड़ रुपए की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने 623 विकासात्मक योजनाओं का रिमोट के माध्यम से उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इनमें 845.43 करोड़ रुपये की लागत से

■ 623 विकासात्मक योजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

387 योजनाओं का उद्घाटन एवं 559.41 करोड़ रुपये की लागत से 256 योजनाओं का शिलान्यास शामिल है। पटना शहर के पास एक नए अंतर्राष्ट्रीय ग्रीनफील्ड हवाईअड्डा के निर्माण के लिए केंद्र सरकार से अनुरोध किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जेपी गंगा पथ को पश्चिम की ओर कोइलवर के वीर कुंवर सिंह सेतु तक परबट ओर मोकामा के राजेन्द्र सेतु तक पुराने राष्ट्रीय उच्च पथ-31 का चौड़ीकरण किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि जेपी गंगा पथ के दक्षिण दीघा से सभ्यता द्वार के बीच वाले स्थान में पार्क एवं नागरिक सुविधाओं का समेकित विकास किया जाएगा। सभ्यता द्वार को पूरब की ओर से पक्के गंगा घाट तथा पश्चिम की ओर एकता भवन से जोड़ा जायेगा तथा पटना हाट एवं पार्किंग का निर्माण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि नेहरू पथ के दोनों तरफ रूपसपुर नहर से सगुना मोड़ तक भूमिगत नाले के साथ पथ का निर्माण एवं इसका चौड़ीकरण किया जाएगा। कुमार ने कहा कि खगौल नेहरू पथ-अशोक राजपथ तक रूपसपुर नहर पथ का चौड़ीकरण एवं निर्माण किया जाएगा। दानापुर में नेहरू पथ से गोला रोड का चौड़ीकरण किया जाएगा। पटेल गोलम्बर से अटल पथ तक सरपेंटाईन नाले पर अंडर ग्राउण्ड नाले के साथ फोर लेन सड़क का निर्माण किया जाएगा। राजीव नगर नाले का पक्कीकरण एवं इसके ऊपर सड़क का निर्माण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि आनंदपुरी नाले का पक्कीकरण एवं इसके ऊपर सड़क का निर्माण किया जाएगा।

आज का इतिहास

1881–भारत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त एवं क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह का जन्म।
1886–अमेरिका के रसायनशास्त्री और आविष्कारक मार्टिन हेल ने अलम्यूनियम की खोज की।
1913–भारत के प्रसिद्ध जादूगर पी. सी. सरकार का जन्म।
1940–रूसी सेनाओं ने यूनान के समीप स्थित लासी द्वीप पर क़ब्ज़ा किया।
1952–कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम पारित किया गया।
1954–भारत के प्रसिद्ध संत और संत निरंकारी मिशन के आध्यात्मिक गुरु बाबा हरदेव सिंह का जन्म।
1969–भारतीय फ़िल्म अभिनेत्री मधुबाला का निधन।
1970–गयाना देश गणराज्य बना और आज के दिन को इस देश का राष्ट्रीय दिवस घोषित किया गया।
1990–साहित्य जगत में उपन्यासकार के रूप में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त करने वाले अमृतलाल नागर का निधन।
1998–जैविक एवं रासायनिक हथियारों की जांच को लेकर हुए गतिरोध को समाप्त करने के लिए सं.रा. महासचिव कोफी अन्नान व इराकी उपप्रधानमंत्री तारिक अजीज के बीच ऐतिहासिक समझौता सम्पन्न, विश्व में पहली बार बछड़े की प्रतिकृति क्लोन अमेरिका में तैयार।

सुडोकू 6834

	1		7	8		6		4
	5	8		2	4			
4				5		1	8	
2					6		1	9
	3	9	2		8	4	6	
8	4		5					7
	8	3		1				6
			4	3		2	9	
9		4		6	5		3	

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गो का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम,कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6834

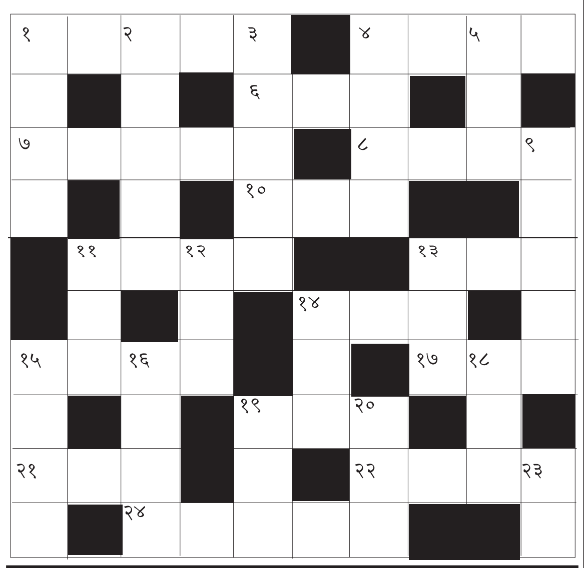

बायें से दायें:–
१. प्राचीन कालीन, प्राचीन काल की बातों के अनुसंधान तथा अध्ययन संबंधी
४. कारखाना, लोहे-लकड़ी की चीजों के निर्माण या अन्य वस्तुओं के निर्माण की जगह
६. किसी चीज का टूटा हुआ हिस्सा
७. हिमालय की बर्फीली चोटियों पर प्राप्त बड़े-बड़े पदचिन्हों वाला कल्पित रहस्यमय प्राणी, येति
८. पैरों की धूल
१०. रवैया, रीति-रिवाज, तौर-तरीका
११. जिस किसी कारण वश अपने स्थान या पद से हट जाना पड़ा हो, पदच्युत
१३. एक प्रकार का श्वांस रोग
१४. सौगंध, कसम, हलफ़
१५. सिरमौर (उर्दू)
१७. लौटा या लौटाया हुआ, पुन: प्राप्त
१९. सूचित करना
२१. ध्यान बंटा कर दिया गया धोखा
२१. कलंकित
२४. नगरवासी

ऊपर से नीचे:–
१. धार्मिक कृत्य कराने वाला
२. व्यंग्य या चुटीली बातें करना (मुहावरा)
३. कड़वी एवं अप्रिय बात
४. कठोरता
५. चालाक, काइयां, चोर, गठकतरा (उर्दू)
९. जनता की भावना
११. दानव, राक्षस
१२. मोती, सीप से उत्पन्न
१३. या
१४. बलि चढ़ाकर शांति-रक्षा का प्रयास करने वाला
१५. साथ चलने वाला, साथी
१६. किसी के शरीर या वातावरण की उष्णता
१८. चिड़िया, पक्षी (उर्दू)
१९. बहरा
२०. अबोध, मूर्ख (उर्दू)
२३. किसी फल आदि का निचोड़, आनंद भाव

वर्ग पहेली-6833

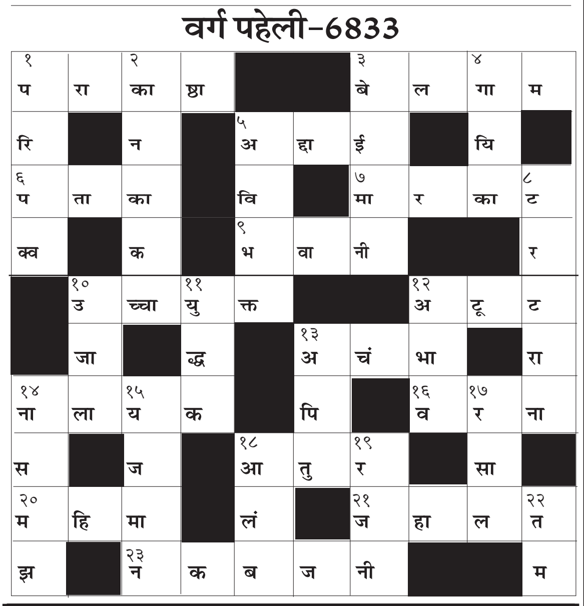

यूसुफ कुरैशी, मो. 8109948408

खेल जगत

भारत को पाकिस्तान के खिलाफ सतर्क रहना होगा: परांजपे

नई दिल्ली। भारत के पूर्व क्रिकेटर और राष्ट्रीय चयनकर्ता जतिन परांजपे का मानना है कि रोहित शर्मा की अगुआई वाली टीम पाकिस्तान के खिलाफ अपने बहुप्रतीक्षित चैंपियंस ट्रॉफी मुकाबले को जीतने के लिए आशावादी रहेगी, लेकिन उन्हें मोहम्मद रिजवान एंड कंपनी के अप्रत्याशित होने के कारण सतर्क रहना होगा। रविवार को, 2025 चैंपियंस ट्रॉफी का माहौल चरम पर पहुंच जाएगा, जब भारत दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खचाखच भरे दर्शकों के सामने ग्रुप ए के एक बहुप्रतीक्षित मुकाबले में पाकिस्तान से भिड़ेगा। दोनों टीमों के बीच आखिरी बार एकदिवसीय मैच अहमदाबाद में 2023 विश्व कप में हुआ था, जिसमें टूर्नामेंट के मेजबान भारत ने सात विकेट से जीत दर्ज की थी। 'भारत पाकिस्तान के खिलाफ मैच में बहुत सतर्क तरीके से उतरेगा।

भारत और पाक महा मुकाबला आज

भारत शुभमन गिल और शमी जैसे मैच जिताने वाले क्रिकेटरों के बूते पाक से हिसाब चुकाने को बेताब

- भारत और पाक में जो भावनाओं पर काबू रखेगा, जीत उसी के हिस्से आएगी
- भारत को विराट और पाक को बाबर आजम से बड़ी पारी की आस
- भारत की कोशिश अक्षर, जडेजा व कुलदीप की स्पिन त्रिमूर्ति के सहारे पाक को बांधने की

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी

मैच का समयः भारत वि.पाकिस्तान, दोपहर ढाई बजे से, दुबई

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 22 फरवरी (देशबन्धु)। भारत और पाकिस्तान के बीच चाहे वह वन डे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच हो, टी 20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच या फिर टेस्ट, मैदान पर एक ऐसा अनूठा रोमांच देखने को मिलता है, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल होता है। दोनों टीमों के क्रिकेटरों के साथ क्रिकेट प्रेमियों की भावनाओं का समुंदर खुल का हिलोरे मारता है। रविवार को सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा की अगुआई वाली भारतीय टीम और विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान की कप्तानी में उतरने वाली पाकिस्तान टीम के बीच आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के दुबई में खेले जाने वाले ग्रुप ए के क्रिकेट मैच पर दोनों मुल्कों के साथ दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों की निगाहें टिकीं रहेंगी। दोनों मुल्क अब तक आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में पांच बार आमने सामने हुए हैं और इनमें तीन बार बार मौजूदा चैंपियन पाकिस्तान और दो बार चैंपियन रही भारतीय टीम विजयी हुई है। भारत ने 2023 के वन डे विश्व कप सहित से पाकिस्तान से पिछले पांच में चार वन डे अंतरराष्ट्रीय मैच जीते हैं जबकि एक बेनतीजा रहा है। अपने उपकप्तान शुभमन गिल के लगातार दूसरे और कुल आठवें वन डे अंतरराष्ट्रीय शतक और 2023 वन डे विश्व कप फाइनल सहित सात मैचों में सबसे ज्यादा 24 विकेट चटकाने के बाद बाद चोट के चलते बाहर रह अब मौजूदा चैंपियंस ट्रॉफी के रूप में अपना पहला आईसीसी टूर्नामेंट खेल रहे अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के गेंद से 'पंजे' के बूते भारत ने अपना अभियान तटस्थ स्थान दुबई में बांग्लादेश पर छह विकेट से जीत के साथ शुरू किया है। रंग में चल रहे शुभमन गिल, कप्तान रोहित शर्मा, केएल राहुल और फिलहाल संघर्ष कर रहे वन डे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में इकलौते शतकों का अर्द्धशतक पूरा करने वाले विराट कोहली जैसे बल्ले से अपने दम मैच जिताने में माहिर बल्लेबाजों, तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के साथ खासतौर पर बाएं हाथ के स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल, रवींद्र जडेजा और लेग स्पिनर कुलदीप यादव के रूप में मौजूद स्पिन त्रिमूर्ति के बूते भारत बीच के ओवर में खासतौर पर पाकिस्तान के बाबर आजम, इमाम उल हक, मोहम्मद रिजवान और सलमान आगा के साथ ऑलराउंडर खुशदिल शाह को बांध कर उससे 2017 के संस्करण के फाइनल में मिली 180 रन की हार का हिसाब चुकाने को बेताब है। भारत के पास पाकिस्तान से 2017 के संस्करण की हार का हिसाब चुकता कर चैंपियंस ट्रॉफी में तीन तीन की बराबरी का मौका है। ऑस्ट्रेलिया की तरह अब हुए आठ संस्करणों में सबसे ज्यादा दो दो बार खिताब जीतने वाली भारतीय टीम रविवार को पाकिस्तान को ग्रुप ए के अपने अहम मैच में हराती है तो वह आईसीसी चैंपियंस के इतिहास में 20 मैच जीतने वाली पहली टीम बन जाएगी। भारत के लिए बांग्लादेश पर मौजूदा संस्करण के पहले मैच में जीत से सबक यह है कि उसे पूरे मैच में चुस्त फील्डिंग करनी होगी जिससे की बांग्लादेश शुरू के पांच विकेट गंवाने के बाद 228 तक न पहुंच पाए। भारत के बांग्लादेश के खिलाफ छह विकेट से जीतने वाली टीम के साथ ही पाकिस्तान के खिलाफ भी उतरने की उम्मीद है। यह दखना दिलचस्प होगा कि पाकिस्तान की स्पिनरों के खिलाफ खेलने की कमजोरी को देखते हुए क्या भारत हर्षित राणा को बाहर रख उनकी जगह चौथे स्पिनर के रूप में वरुण चक्रवर्ती को एकादश में शामिल करेगा?

भारत को जूझते अपने धुरंधर बल्लेबाज विराट कोहली और पाकिस्तान को बाबर आजम से बड़ी पारी की आस रहेगी। पाकिस्तान के शहीन शाह अफरीदी, नसीम शाह और हैरिस रउफ जैसे तेज गेंदबाजों की त्रिमूर्ति और लेग स्पिनर अबरार आलम और बाएं हाथ के स्पिन ऑलाराउंडर खुशदिल शाह में से भारत को बस अबरार और नसीम शाह के खिलाफ जरूर कुछ चौकस रहना होगा। बेशक भारत के पास अपने बूते मैच जिताने वाले खिलाड़ी हैं लेकिन उसके और पाकिस्तान के बीच मैच में जो टीम भावनाओं पर काबू रखेगी जीत उसी के हिस्से आएगी। बाबर आजम (64) और खुशदिल शाह (69) के अलग अलग अंदाज में जड़े अर्द्धशतकों के बावजूद मेजबान पाकिस्तान कराची में अपने पहले मैच में न्यूजीलैंड द्वारा जीत के लिए रखे 321 रन का लक्ष्य का पीछा करते हुए 260 पर आउट होकर 60 रन से हार गया था। भारत और पाकिस्तान के क्रिकेटर यह जानते हैं इसमें जीत उन्हें हीरो बना सकती है, हार जीरो। ऐसे में हर खिलाड़ी सभी रिकॉर्ड और पुराने प्रदर्शन को दरकिनार कर रविवार को अपना सर्वश्रेष्ठ करने में कसर नहीं छोड़ेगा। विराट कोहली अपनी पछली छह पारियों में स्पिनर के खिलाफ और इनमें भी पांच बार लेग स्पिनर का शिकार बने। विराट जब रंग में होते तो स्पिन को बढ़िया खेलते हैं। फिलहाल वह रन बनाने की जरूरत से ज्यादा कोशिश में अपना विकेट गंवा रहे हैं। पाकिस्तान की कोशिश अपने लेग स्पिनर अबरार अहमद को मोर्चे पर लगा विराट सहित भारत के शीर्ष और मध्यक्रम को सस्ते में समेट कर उस पर दबाव बनाने की होगी।

बाबर वन डे अंतरराष्ट्रीय मैचों में स्पिन के खिलाफ बराबर जूझते नजर आते हैं हालांकि तेज गेंदबाजी के खिलाफ उनकी बल्लेबाजी बेहतर हुई है। बाबर से न्यूजीलैंड के खिलाफ न तो स्पनिरों के खिलाफ चौके लगे और न ही स्ट्राइकर रोटेट कर पाए। बाबर ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 90 गेंद खेल कर मात्र चार चौकों की मदद 64 रन बनाए। भारत के पास अक्षर, रवींद्र जडेजा और कुलदीप यादव के रूप में स्पिन त्रिमूर्ति है और इसी के जरिए वह बाबर के खिलाफ स्पिन का जाल बुन आउट कर उन्हे पैवेलियन लौटाने की कोशिश करेगा। खासतौर पर कुलदीप यादव की तेजी से स्पिन हो भीतर आती गेंद पर बाबर को दिक्कत पेश आ सकती है। अपने तुरुप के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के पीठ में जकड़न से न उबर पाने के बाहर रहने के बावजूद भारत के लिए अच्छी खबर है कि उसके दूसरे सबसे अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने चोट टखने और घुटने की चोट के बाद वापसी कर चैंपियंस ट्रॉफी में अपने अभियान का आगाज पहले ही मैच में बांग्लादेश के खिलाफ पांच विकेट चटका भारत को शानदार जीत दिला कर किया।

एक नजर भारत-पाक के मैचों पर

भारत और पाकिस्तान चैंपियंस ट्रॉफी में अब तक पांच बार भिड़े हैं। पाकिस्तान ने चैपियंस ट्रॉफी में भारत को 2004 में तीन विकेट से, 2009 में 54रन से 2017 के संस्करण के फाइनल 180 रन सहित तीन बार हराया। वहीं भारत ने 2013 के संस्करण में पाकिस्तान को आठ विकेट से और 2017 के ग्रुप मैच में 124 रन से हराया था। भारत ने दुबई में 2018 में एशिया कप में पाकिस्तान को दोनों मैच में हराया। दुबई के मैचदान पर भारत ने 7 मशं छह मैच जीते जबकि एक टाई रहा, मात्र दो बार ही जीत पाया है। दोनों देशों के बीच अब कुल 135 पनडे मैच खेले गए और इमें पाकिस्तान ने 73 और भारत ने 57 जीते जबकि पांच बेनतीजा रहे।बीते 25 बरस में दोनों टीमें 57 बार आमने सामने हुई और भारत ने 30 और पाकिस्तान ने 26 जीते जबकि एक बेनतीजा रहा।

'बड़े मौकों पर हमें शमी जैसे गेंदबाज की जरूरत'

'केवल एक मैच से दुबई की पिच के मिजाज को आंकना खासा मुश्किल है। पिच पर बहुत घास नहीं थी। हम जानते थे कि यह धीमी रहेगी और रही भी। मेरा मानना है कि बतौर टीम गेंद और बल्ले से स्थितियों हमने वाकई बढ़िया तालमेल बैठाया। मैं पांच विकेट चटकाने वाले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की गेंदबाजी से बहुत खुश हूं। हम शमी की लंबे समय से बाट जोह रहे थे। हम जानते हैं कि शमी हमारे उत्कृष्ट गेंदबाज हैं।

भयानक चूक, ऑस्ट्रेलिया-इंग्लैंड मैच से पहले बजा भारत का राष्ट्रगान

लाहौर, 22 फरवरी (एजेंसियां)। शनिवार को गद्दाफी स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच 2025 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी मैच से पहले एक बड़ी चूक हुई, जिसमें 'एडवांस ऑस्ट्रेलिया फेयर' (ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रगान) की जगह भारतीय राष्ट्रगान 'जन गण मन' बजाया गया। जैसा कि आईसीसी आयोजनों में होता रहा है, हर मैच शुरू होने से पहले दोनों टीमों के राष्ट्रगान बजाए जाते हैं। इंग्लैंड के राष्ट्रगान 'गॉड सेव द किंग' के बजने के बाद, 'एडवांस ऑस्ट्रेलिया फेयर' बजाया जाना था। लेकिन, मैच स्थल पर मौजूद सभी लोगों को आश्चर्य हुआ, जब दो सेकंड के लिए भारतीय राष्ट्रगान बज गया। इस गलती को तुरंत सुधारा गया और 'एडवांस ऑस्ट्रेलिया फेयर' बजाया गया। सोशल मीडिया पर क्रिकेट प्रेमियों ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की, जो इस बड़ी गलती पर खुद को हंसने से नहीं रोक पाए। ऑस्ट्रेलिया-इंग्लैंड मैच से पहले राष्ट्रगान की गलती कुछ ऐसी है, जिसके बारे में मेजबान संस्था पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) को समय आने पर स्पष्टीकरण देना होगा।

भारत के जीवन-प्रशांत ने जीता युगल खिताब

पुणे, 22 फरवरी (एजेंसियां) शीर्ष वरीयता प्राप्त भारत के जीवन नेदुनचेझियन और विजय सुंदर प्रशांत ने ब्लेक बेल्डन और मैथ्यू क्रिस्टोफर रोमियोस की दूसरी वरीयता प्राप्त ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी पर 3-6, 6-3, 10-0 से जीत दर्ज की और बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स टेनिस स्टेडियम में महा ओपन एटीपी चैलेंजर 100 पुरुष टेनिस चैंपियनशिप में युगल चैंपियन बनकर उभरे। यह जीवन और प्रशांत के लिए एक साथ पहला खिताब था, और पुणे में प्रशांत के लिए यह तीसरा खिताब था, शनिवार को भारतीय टीम की जीत ने उन्हें 7 लाख रुपये और 100 एटीपी अंक की पुरस्कार राशि दिलाई, जिससे जीवन विश्व रैंकिंग में क्रमशः 94 और प्रशांत 104वें स्थान पर पहुंच गए। रविवार को खेले जाने वाले एकल फाइनल में छठी वरीयता प्राप्त अमेरिकी ब्रैंडन होल्ट का मुकाबला चेक गणराज्य के गैर वरीयता प्राप्त डैलिबोर स्वर्सिना से होगा। इससे पहले, शनिवार को सेमीफाइनल में, 26 वर्षीय और छठी वरीयता प्राप्त अमेरिकी ब्रैंडन होल्ट, जिनकी रैंकिंग विश्व में 153 है, ने कनाडा के आठवें वरीयता प्राप्त एलेक्सिस गैलारनेउ को 7-5, 6-4 से हराने में एक घंटा और 34 मिनट का समय लिया। होल्ट ने पहले सेट में 5-0 की बढ़त बनाई, लेकिन चालाक कनाडाई गैलारनेउ ने स्कोर 5-5 से बराबर कर दिया, लेकिन सेट को समाप्त नहीं कर सके। ब्रैंडन अब कनाडाई खिलाड़ी के साथ आमने-सामने की लड़ाई में 3-2 से आगे हैं। चेक गणराज्य के 22 वर्षीय दलीबोर स्वर्सिना और भारतीय फ्यूचर्स सर्किट के नियमित खिलाड़ी ने अपने पहले चैलेंजर फाइनल में जगह बनाई, उन्होंने भीड़ के पसंदीदा उज्बेकिस्तान के खुमोयुन सुल्तानोव को 6-7(8), 6-0, 3-1 से हराकर जीत हासिल की। मैच जो कि काफी आगे जा रहा था, उसे रोकना पड़ा क्योंकि खुमोयुन ने गर्मी के कारण सांस फूलने और थकान की शिकायत के बाद मैच से रिटायर हो गए।

■ दूसरी वरीयता प्राप्त ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी पर 3-6, 6-3, 10-0 से जीत दर्ज की

परिणाम एकल (सेमीफाइनल): (6) ब्रैंडन होल्ट (अमेरिका) ने (8) एलेक्सिस गैलारनेउ (कनाडा) को 7-5, 6-4 से हराया; डेलिबोर स्व्रसीना (चेक गणराज्य) बनाम खुमोयुन सुल्तानोव (उज्बेकिस्तान) 6-7(8), 6-0, 3-1(रिटायर)

युगल (फाइनल): (1) जीवन नेदुनचेझियन (भारत)/विजय सुंदर प्रशांत (भारत) ने (2) ब्लेक बेल्डन (ऑस्ट्रेलिया)/मैथ्यू क्रिस्टोफर रोमियोस (ऑस्ट्रेलिया) को 3-6, 6-3, 10-0 से हराया ।

विश्व कप के लिए 35 सदस्यीय भारतीय शूटिंग टीम की घोषणा

■ मनु भाकर दो व्यक्तिगत स्पर्धाओं महिला 10 मीटर एयर पिस्टल और महिला 25 मीटर पिस्टल में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र एथलीट होंगी

नई दिल्ली, 22 फरवरी (एजेंसियां)। दक्षिण अमेरिका में अप्रैल में दो चरणों में शुरु होने वाले आईएसएसएफ विश्व कप के लिये 35 सदस्यीय भारतीय शूटिंग टीम की घोषणा कर दी गयी। ये टीम आगामी संयुक्त (राइफल/पिस्टल/शॉटगन) इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (आईएसएसएफ) विश्व कप में हिस्सा लेगी। ये प्रतियोगिताएं ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना (1-11 अप्रैल) और लीमा, पेरू (13-22 अप्रैल) में आयोजित होंगी। डबल ओलंपिक कांस्य पदक विजेता मनु भाकर एक बार फिर दो व्यक्तिगत स्पर्धाओं महिला 10 मीटर एयर पिस्टल और महिला 25 मीटर पिस्टल में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र एथलीट होंगी। अन्य पेरिस ओलंपियन में अनीश और विजयवीर सिद्धू (पुरुष 25 मीटर रैपिड-फायर पिस्टल), ईशा सिंह (महिला 25 मीटर पिस्टल), ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर (पुरुष 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन), सिफत कौर समरा और श्रियांका सदांगी (महिला 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन), अर्जुन बाबूता (पुरुष 10 मीटर एयर राइफल), पृथ्वीराज टोंडाईमान (पुरुष ट्रैप), अनंतजीत सिंह नरूका (पुरुष स्कीट) और राइज़ा ढिल्लों (महिला स्कीट) शामिल हैं। टीम के प्रस्थान से पहले एक राष्ट्रीय शिविर का आयोजन 14 मार्च से दिल्ली स्थित डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में किया जाएगा।

न्यायालय नजूल अधिकारी नरसिंहपुर

सार्वजनिक उद्घोषणा

रा.मा.क्र. / अ- 6/ वर्ष 2024-25

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार फौती के आधार पर नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 05/3/2025 को प्रातः 11 बजे स्थान नरसिंहपुर में इस न्यायालय के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिए गए हों या वैद्य प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन प्रकरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

अनुसूची

नजूल शीट क्र.	नगरीय क्षेत्र का नाम	प्लाट क्र.	रकबा	विधमान अभिलेख में अंकित धारक/धारकों का नाम/पिता/माता/पिता का नाम तथा पूर्ण पता	उस व्यक्ति/व्यक्तियों का नाम/पिता/माता/पति का नाम तथा पूर्ण पता जिनके पक्ष में प्रकरण विचाराधीन है
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
22	कंदेली	14/1	4429	श्रीमति कृष्णाबाई पत्नि स्व. पुरूषोत्तम दास नेमा, शांतिबाई बेवा सुंदरलाल, छोटेलाल,रामचरन पिस. शिवप्रसाद, प्रेमनारायण, नरेश कुमार, विद्याबाई, कौशल्याबाई पिस,ताराचंद, प्रेमवती बेवा ताराचंद, अनिल कुमार,अनूप कुमार, सुनीता,विनीता,बेबी नेमा पिस.स्व.सुदामाचरन नेमा सा. कंदेली	सुधीर, मनोज,सुनीता पिस. स्व. पुरूषोत्तम, भरत, अरूण, संदीप, पिस.छोटेलाल, प्रवीण आ. प्रेमनारायण नेमा, श्रीमति उर्मिला पत्नि नरेश कुमार नेमा, पुत्री निमिषा नेमा आ. नरेश कुमार नेमा निवासी स्टेशनगंज नरसिंहपुर

आज दिनांक- 15/1/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा के अधीन जारी किया गया।

नजूल अधिकारी नरसिंहपुर

पाकिस्तान के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करेंगे शमी

अमरोहा, 22 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय क्रिकेट टीम पाकिस्तान के खिलाफ 23 फरवरी को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेलने जा रही है। क्रिकेट प्रेमियों के साथ क्रिकेटरों के परिवारों को भी मैच को लेकर उत्सुकता है। भारत-पाक क्रिकेट मैच क्रिकेट की दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्विता के तौर पर विख्यात है। इस मुकाबले में मोहम्मद शमी की गेंदबाजी पर भी नजर होगी, जिन्होंने चोट के बाद शानदार वापसी की है। शमी का परिवार भी मैच को लेकर रोमांचित है। भारत-पाक मैच के अवसर पर शमी के भाई मोहम्मद हसीब ने बताया कि इस मैच को परिवार के लोग एक साथ बैठकर देखेंगे और उन्हें शमी से एक और शानदार प्रदर्शन की उम्मीद है। शमी ने बांग्लादेश के खिलाफ मैच में 5 विकेट लेकर भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। भारत ने यह मुकाबला 5 विकेट से जीता था।

अमनजोत कौर ने खुद का समर्थन किया और मुंबई इंडियंस के लिए मैच को खत्म करना चाहती थी: मिताली राज

नई दिल्ली, 22 फरवरी (एजेंसियां)। पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज ने मुंबई इंडियंस की रोमांचक आखिरी ओवर की जीत पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जब आपके पास अमनजोत कौर जैसी एक सेट बल्लेबाज होती है, तो आपके लिए मैच समाप्त करना आसान हो जाता है। अमूल क्रिकेट लाइव, जियोहॉटस्टार पर विशेष रूप से बोलते हुए, मिताली राज ने अमनजोत कौर के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि उसने आज खुद का समर्थन किया। हरमनप्रीत कौर के साथ मध्य में समय बिताने वाले व्यक्ति के रूप में, उसने अपने कप्तान को बड़े शॉट खेलते हुए देखा है और उससे सबक लिया है। वह मुंबई इंडियंस के लिए मैच को खत्म करना चाहती थी।'

नताली जर्मनोस ने जॉर्जिया वेयरहम के प्रदर्शन और हरमनप्रीत कौर के उनके महत्वपूर्ण कैच का विश्लेषण किया। 'स्मृति मंधाना के दृष्टिकोण से यह वास्तव में एक संतुलनकारी कार्य था क्योंकि वह पहले ही किम गर्थ को आउट कर चुकी थी और अपने विकल्पों के साथ संघर्ष कर रही थी।

इसलिए, यह एक बड़ा ओवर और एक बेहतरीन कैच था। ऋचा घोष स्टंप के पीछे तेज थी, और जॉर्जिया वेयरहम यह समझने लगी है कि भारतीय विकेटों पर कैसे गेंदबाजी करनी है।, उन्होंने कहा, 'पिछले दो मैचों से पहले, वह भारत में विकेट लेने के लिए संघर्ष करती थी। हमें हमेशा उम्मीद थी कि वह डब्ल्यूपीएल में अच्छा प्रदर्शन करेगी क्योंकि वह अच्छी विविधताओं वाली एक कुशल गेंदबाज है।

वह बल्लेबाजों को आसान स्कोरिंग अवसरों के मामले में बहुत कुछ प्रदान नहीं करती है। मुझे लगता है कि वह अब यह समझ रही है कि इन सतहों पर विकेट कैसे लिए जाएं।'

सुडोकू 6834 का हल

3	1	2	7	8	9	6	5	4
6	5	8	1	2	4	9	7	3
4	9	7	6	5	3	1	8	2
2	7	5	3	4	6	8	1	9
1	3	9	2	7	8	4	6	5
8	4	6	5	9	1	3	2	7
7	8	3	9	1	2	5	4	6
5	6	1	4	3	7	2	9	8
9	2	4	8	6	5	7	3	1

इंडियन बैंक Indian Bank

इलाहाबाद ALLAHABAD

अंचल कार्यालय, सिविल लाइन्स, जबलपुर (म.प्र.)- 482001

Ph: 0761-2624977, Email: zojabalpur@indianbank.co.in

परिशिष्ट IV-A{(नियम-8(6)} अचल सम्पत्तियों की बिक्री के लिये बिक्री सूचना

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 (6) एवं 6(2) के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुर्नगठन और प्रतिभूतिहित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत अचल संपत्तियों की बिक्री के लिए ई- नीलामी बिक्री सूचना। यह नोटिस आम जनता एवं उधारकर्ता (ओं)/गारंटीकर्ता (ओं) के लिए नीचे वर्णित अचल संपत्ति जो कि सुरक्षित लेनदार को गिरवी/ चार्ज की गई है, जिसका कब्जा इंडियन बैंक शाखा द्वारा ले लिया गया है, सुरक्षित लेनदार द्वारा राशियों और देय ब्याज की वसूली के लिए ''जैसा है जहाँ है'' और ''जो कुछ भी है '' के आधार पर आम जनता से निविदा का आमंत्रण कर ई- नीलामी द्वारा विक्रय करने का निर्णय लिया गया है। ई- नीलामी मोड के माध्यम से बिक्री के लिए लाई जाने वाली संपत्ति का विशिष्ट विवरण नीचे दिया गया है।

ई- नीलामी की तिथि एवं समय

26/03/2025 11.00 AM TO 4.00 PM

क्र.	शाखा का नाम / खाते का नाम / ऋणी का नाम/प्रोप./निदेशक/पार्टनर / गारंटर/ गिरवी रखने वाला	ई- नीलामी हेतु संपत्ति का विस्तृत विवरण	बकाया राशि / सम्पत्ति पर अन्य ऋण भार / कब्जे का प्रकार	आरक्षित मूल्य / ई.एम.डी. राशि / बिड बढ़ाने राशि
1	गलगला शाखा ऋणीः मेसर्स जय ट्रेडर्स (प्रोपराइटर श्री अजय लालवानी), पताः शॉप नं. 105, हीरा स्वीट्स के पास, भरतीपुर, जबलपुर (म.प्र.)	सम्पत्ति के सभी भू-भाग एवं उससे जुड़े कमर्शियल शॉप एरिया- 177.00 वर्गफुट (सुपर बिल्डअप एरिया) शॉप का बिल्डअप एरिया 146.00 वर्गफुट एवं कारपेट एरिया 116.80 वर्गफुट 1/3rd अविभाज्य कुल प्लाट पर आधिपत्य 59.00 वर्गफुट जिसमें फ्लैट सिस्टम है, सम्पत्ति बड़े भाग में स्थित ग्राउण्ड फ्लोर में स्थित है (ग्राउण्ड + फर्स्ट फ्लोर) म्युनिसिपल मकान नं. 105/1 (पुराना नं. 261) निर्मित नजूल लीज प्लाट नं. 13 एरिया 1725.00 वर्गफुट या 160.258 वर्गमीटर (नामांतरण पश्चात प्लाट नं. 13 का भाग), बी.नं. 88, मौजा- भरतीपुर, मदन मोहन मालवीय वार्ड (पुराना भरतीपुर), तहसील एवं जिला जबलपुर। सम्पत्ति स्वामी- श्री अजय लालवानी Prop. ID- IDIB10694932223A	Rs. 57,50,816.95 (as on 20.05.2024) + Interest & Other expenses ज्ञात नहीं सांकेतिक कब्जा	Rs. 29,00,000/- Rs. 2,90,000/- Rs. 10,000/-

बोलीदाता को सलाह दी जाती है कि वे हमारे ई- नीलामी सेवा प्रदाता पीएसबी एलायंस प्राइवेट लिमिटेड की वेबसाइट (https://baanknet.com) पर जाएं। लिमिटेड ऑनलाइन बोली में भाग लेने के लिए। तकनीकी सहायता के लिए कृपया 8291220220 पर कॉल करें। पंजीकरण स्थिति और ईएमडी स्थिति के लिए कृपया support.baanknet@psballiance.com पर ईमेल करें। संपत्ति के विवरण और संपत्ति की तस्वीर और नीलामी के नियमों और शर्तों के लिए कृपया देखें https://baanknet.com और इस पोर्टल से संबंधित स्पष्टीकरण के लिए, कृपया पीएसबी एलायंस प्राइवेट लिमिटेड, संपर्क नंबर 8291220220 से संपर्क करें। बोलीदाताओं को सलाह दी जाती हैं कि वे https://baanknet.com वाली वेबसाइट पर संपत्ति खोजते समय ऊपर उल्लिखित संपत्ति आईडी नंबर का उपयोग करें।

Contact Person: 1. Mr. S. Dash (Mob: 7978413195), 2. Mrs. S. Nayak (Mob: 7978736254)

दिनांक: 23/02/2025

प्राधिकृत अधिकारी, इंडियन बैंक

अर्थ जगत

विदेशी मुद्रा भंडार घटकर 635.72 अरब डॉलर पर

मुम्बई। डॉलर के मुकाबले टूटते रुपये ने भारत के विदेशी मुद्रा भंडार पर बुरा असर डाला है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 14 फरवरी को समाप्त सप्ताह में 2.54 अरब डॉलर घटकर 635.72 अरब डॉलर रहा। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह जानकारी दी है। पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 7.65 अरब डॉलर बढ़कर 638.26 अरब डॉलर हो गया था। रुपये में उतार-चढ़ाव को कम करने में मदद के लिए आरबीआई के विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप के साथ-साथ मूल्यांकन के कारण हाल ही विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट का रुख रहा था।

महंगा हो सकता है खाने का तेल

दूसरी बार आयात शुल्क बढ़ाने पर हो रहा विचार

नई दिल्ली। *सरकार खाने के तेल पर छह महीने में दूसरी बार इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाने पर विचार कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, यह कदम घरेलू तिलहन किसानों को समर्थन देने के लिए उठाया जा सकता है, क्योंकि वे तिलहन की गिरती कीमतों से जूझ रहे हैं।*

दुनिया के सबसे बड़े खाद्य तेल आयातक भारत में इस फैसले से स्थानीय तेल और तिलहन की कीमतें बढ़ सकती हैं, जबकि विदेशी खरीद पर असर पड़ सकता है। इसका सीधा असर पाम तेल, सोया तेल और सूरजमुखी तेल की मांग पर पड़ सकता है। एक सूत्र ने कहा कि शुल्क वृद्धि के संबंध में अंतर-मंत्रालयी परामर्श समाप्त हो गया है। सरकार द्वारा जल्द ही शुल्क बढ़ाने की उम्मीद है। एक अन्य सरकारी सूत्र ने भी आधिकारिक नियमों का हवाला देते हुए पहचान जाहिर न करने की शर्त पर कहा कि सरकार खाद्य महंगाई पर फैसले के प्रभाव को ध्यान में रखेगी।

सितंबर में बढ़ाई थी ड्यूटी- सितंबर 2024 में, भारत ने कच्चे और रिफाइंड वनस्पति तेलों पर 20 फीसदी बेसिक कस्टम ड्यूटी लगाई थी जिसके बाद कच्चे पाम तेल, कच्चे सोया तेल और कच्चे सूरजमुखी तेल पर 27.5 फीसदी आयात शुल्क लगाया गया, जो पहले 5.5 फीसदी था, जबकि तीन तेलों के रिफाइंड ग्रेड पर अब 35.75 फीसदी इंपोर्ट टैक्स है। शुल्क वृद्धि के बाद भी, सोयाबीन की कीमतें राज्य द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य से 10 फीसदी से अधिक नीचे कारोबार कर रही हैं। व्यापारियों को यह भी उम्मीद है कि अगले महीने नए सीजन की सप्लाई शुरू होने के बाद सर्दियों में बोई जाने वाली रेपसीड की कीमतों में और गिरावट आएगी।

कितनी हैं घरेलू कीमतें- घरेलू सोयाबीन की कीमतें लगभग 4,300 रुपए (49.64) प्रति 100 किलोग्राम हैं, जो राज्य द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य 4,892 रुपए से कम है।

जानकारों ने कहा कि तिलहन की कम कीमतों के कारण, खाद्य तेलों पर इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाना समझ में आता है, उन्होंने कहा कि बढ़ोतरी की सही मात्रा अभी तक तय नहीं की गई है।

सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक बीवी मेहता ने कहा कि तिलहन किसान दबाव में हैं और उन्हें तिलहन की खेती में अपनी रुचि बनाए रखने के लिए समर्थन की आवश्यकता है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने दी फिर धमकी

भारत हो या चीन, किसी को भी नहीं छोड़ेंगे, सभी पर लगाएंगे टैरिफ

वाशिंगटन। *अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका जल्द ही भारत, चीन और अन्य देशों पर रिसिप्रोकल टैरिफ लगाने की योजना बना रहा है।*

ट्रंप का कहना है कि अमेरिका उन देशों द्वारा अमेरिकी वस्तुओं पर लगाए गए शुल्क के बराबर शुल्क लगाएगा, जिससे निष्पक्षता बनी रहे. हाल ही में पीएम मोदी की अमेरिका दौरे के दौरान व्यापार, रक्षा और टैरिफ से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई थी। ट्रंप ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हम जल्द ही रिसिप्रोकल टैरिफ का एलान करेंगे. वे हम पर जो शुल्क लगाते हैं, हम भी उन्हीं पर शुल्क लगाएंगे. उन्होंने आगे बताया कि कोविड-19 महामारी से पूर्व भी इस कदम को उठाने की इच्छा रही थी. पीएम मोदी के साथ वाशिंगटन में द्विपक्षीय बैठक से पहले, ट्रंप ने भारत की टैरिफ नीति पर कड़ी टिप्पणी की. उनके अनुसार, भारत में अत्यधिक टैरिफ के कारण व्यापार करना बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया है, जिस कारण कई बार उन्होंने भारत को टैरिफ किंग का भी उपनाम दिया है.एक अन्य प्रेस कॉन्फ्रेंस में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क के साथ पीएम मोदी की मुलाकात पर टिप्पणी करते हुए ट्रंप ने कहा कि हालाँकि भारतीय बाजार में व्यापार के अवसर मौजूद हैं, लेकिन भारी टैरिफ की वजह से अमेरिकी कंपनियों को विदेश में विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने पर मजबूर होना पड़ता है.

समय से पहले लोन बंद करने पर मिलेगी राहत

इन ग्राहकों के लिए आरबीआई की बड़ी तैयारी

नई दिल्ली। *समय से पहले लोन बंद करने वाले ग्राहकों को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) बड़ा तोहफा देने वाला है। दरअसल, आरबीआई ने व्यक्तियों और सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) के बिजनेस लोन पर लगाए जाने वाले प्री-पेमेंट चार्ज को हटाने का प्रस्ताव रखा है।*

आरबीआई के ड्राफ्ट सर्कुलर में कहा गया, टियर-1 और टियर-2 सहकारी बैंकों और शुरुआती स्तर के एनबीएफसी के अलावा उसके दायरे में आने वाली इकाइयां व्यक्तियों और एमएसई कर्जदारों द्वारा व्यावसायिक उद्देश्य के लिए लिए गए फ्लोटिंग रेट लोन के प्री-पेमेंट पर कोई शुल्क/जुर्माना नहीं लगाएंगे। हालांकि, मझोले उद्यमों के मामले में ये निर्देश प्रति कर्जदार 7.50 करोड़ रुपये की कुल स्वीकृत सीमा तक लागू होंगे। मौजूदा मानदंडों के अनुसार विनियमित संस्थाओं (आरई) की कुछ श्रेणियों को पर्सनल कर्जदारों द्वारा व्यवसाय के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए स्वीकृत फ्लोटिंग रेट टेन्योर लोन पर प्री-पेमेंट चार्ज लगाने की अनुमति नहीं है।

बैंक लोन और बैंक जमा में गिरावट- इस बीच, आरबीआई ने बताया है कि बैंक लोन और बैंक जमा में अक्टूबर-दिसंबर के दौरान तिमाही आधार पर गिरावट आई है। सालाना बैंक लोन वृद्धि सितंबर 2024 तिमाही में 12.6 प्रतिशत से घटकर दिसंबर 2024 तिमाही में 11.8 प्रतिशत हो गई। इसी तरह जमा वृद्धि 11.7 प्रतिशत के मुकाबले घटकर 11 प्रतिशत रही। कुल लोन में प्रमुख हिस्सा रहने वाले व्यक्तिगत ऋण की सालाना वृद्धि 13.7 प्रतिशत (एक तिमाही पहले 15.2 प्रतिशत) रही।

बिजनेस लोन में बढ़ोतरी- दूसरी ओर व्यापार, वित्त और पेशेवर/ अन्य सेवाओं के लिए बैंक ऋण 2024-25 की तीसरी तिमाही में तेजी से बढ़ा। आंकड़ों से पता चला कि सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों को ऋण दिसंबर 2024 में 5.4 प्रतिशत की दर से बढ़ा, जबकि इससे पिछली तिमाही में यह 0.3 प्रतिशत की दर से बढ़ा था। आरबीआई ने कहा कि बैंक ने ऋण राशि के आधे से अधिक पर आठ प्रतिशत से 10 प्रतिशत तक ब्याज दर लगाई। लगभग 16 प्रतिशत ऋण आठ प्रतिशत से कम ब्याज दर पर थे। बाकी ऋण10 प्रतिशत या उससे अधिक ब्याज दर पर दिए गए।

बाजार में तेल की अधिकता से वैश्विक स्तर पर ईंधन की कीमतों में कमी संभव : पुरी

नई दिल्ली। *केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा है कि अमेरिका सहित वैश्विक बाजार में तेल की अधिक आवक के कारण ईंधन की कीमतों में कमी आने की संभावना है।*

जिससे मुद्रास्फीति पर काबू पाने में मदद मिलेगी। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने विश्वास जताया कि भारत ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व वाले नए प्रशासन के साथ संपर्क स्थापित कर लिया है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा के मोर्चे पर भारत-अमेरिका संबंध और मजबूत होंगे। उनके अनुसार, भारत अर्जेंटीना सहित 40 देशों से तेल आयात करता है और चूंकि दुनिया में पर्याप्त तेल है, इसलिए तेल उत्पादक देश जो कटौती कर रहे हैं, उन्हें भी अपने फैसले पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि तेल खरीद में डॉलर के इस्तेमाल को खत्म करने का कभी भी उद्देश्य नहीं था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 'अधिकांश लेनदेन डॉलर में होते हैं और हमेशा से होते आए हैं। पेट्रोलियम मंत्री ने कहा, 'मेरिका में, उन्होंने (ट्रंप ने) कहा, ड्रिल, बेबी, ड्रिल। जो अधिक ड्रिलिंग करने और अधिक तेल निकालने का संकेत है। उन्होंने आधिकारिक रूप से कहा है कि वह अंतरराष्टीय तेल की कीमतों को कम करना चाहते हैं।

मुंबई-पुणे नहीं, नोएडा में बढ़ रहा है सबसे तेजी से घर का किराया

नई दिल्ली। *शहरों में रहने वाले लोगों के लिए घर का किराया अब सबसे बड़ी चिंता बन चुका है. पिछले कुछ बरसों में किराये में इतनी बढ़ोतरी हुई है कि लोगों की इनकम का बड़ा हिस्सा केवल किराया देने में खर्च हो जाता है।*

नोएडा, गुरुग्राम, पुणे और बेंगलुरु जैसे शहरों में किराया आसमान छू रहा है. मुंबई, जहां पहले से ही किराया सबसे ज्यादा था, वहां भी लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है.अगर आंकड़ों पर नजर डालें तो पिछले 3 साल में घरों के रेंट में 30 फीसदी तक का इजाफा हुआ है. 2025 में वैसे तो बाजार के स्थिर रहने की उम्मीद की जा रही है लेकिन ये अनुमान तभी सटीक साबित होगा जब सप्लाई और डिमांड का बैलेंस बना रहेगा.

नोएडा में सबसे ज्यादा उछाल- अगर देश में हाउसिंग रेंट में हो रही बढ़ोतरी के ट्रेंड पर नजर डालें तो इसमें टॉप पर है. नोएडा का सेक्टर-150 जहां किराया 22 फीसदी तक बढ़ा है. पुणे के स्क्रएरिया में किराये 12.2 फीसदी तक बढ़ा है. वहीं बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम में 16 फीसद किराये बढ़ा है. मुंबई में सबसे कम 10 परसेंट से भी कम बढ़ोतरी दर्ज की गई है. आखिर घर का किराया बढ़ने की वजह क्या है? एक्सपर्ट्स के मुताबिक कोरोना महामारी के बाद शहरों में घरों की डिमांड तेजी से बढ़ी है. मॉडर्न हाउसिंग सोसाइटी और नई बिल्डिंग्स के आने से किराया महंगा हुआ है. घर की लोकेशन और डिजाइन के हिसाब से भी किराया तय हो रहा है. लैंडलॉर्ड्स अपने निवेश के हिसाब से किराया बढ़ा रहे हैं. महंगाई, प्रॉपर्टी टैक्स और डिमांड-सप्लाई असंतुलन भी किराये में बढ़ोतरी की बड़ी वजहें हैं.

किराये में बढ़ोतरी का क्या कारण- सबसे बड़ा सवाल है कि आम आदमी इन बढ़ती कीमतों का सामना कैसे करेगा? एक औसत कमाने वाले शख्स की आमदनी का बड़ा हिस्सा किराये में चला जाता है. घरेलू कंजम्पशन एक्सपेंडीचर सर्वे 2023-24 के मुताबिक कुल घरेलू खर्च में किराये का हिस्सा 6.58 फीसदी तक पहुंच गया है. 1999 में ये 4.46 परसेंट था, जो लगातार बढ़ रहा है. हर सर्वे में किराये की दरों में इजाफा दर्ज किया गया है।

मुद्रा बाजार

रुपया के मुकाबले अन्य मुद्राएं

मुद्रा	रुपया
एक अमेरिकी डॉलर	86. 71
एक यूरो	90. 32
एक ब्रिटिश पाउंड	109 . 75
एक आस्ट्रेलियन डॉलर	55· 49
एक जापानी येन	0· 58

परफेक्ट हैचरीज एंड पोल्ट्री प्रोडेक्ट इंडिया प्रा. लि.
864 मारुति शोरूम के सामने
फोन- 2412223,9329428085
जिंदा बायलर्स बड़ा- फार्म रेट 88 प्रति कि.
जिंदा बायलर्स मीडियम- फार्म रेट 108 प्रति कि.
जिंदा बायलर्स छोटा- फार्म रेट-120 नेट प्रति किलो
जिंदा मुर्गी लेयर कल्स -52 नेट प्रति किलो
जिंदा काकरेल-मुर्गा- 180 रु. प्रति किलो
(जिंदा थोक फार्म रेट)

सराफा बाजार

दुल्हन श्री आभूषण
कमानिया गेट, सराफा बाजार-
मो. 9425860998,9826307100
सोना बुलियन (प्रति 10 ग्राम) फाइन भाव- 88600 चांदी -98500

सोहन लाल एण्ड संस
रसल चौक फोन- 9425156095
सोना बुलियन (प्रति 10 ग्राम) फाइन भाव-88600 चांदी -98500

दाल- चावल भाव

महावर ट्रेडिंग कंपनी, गांधीगंज
फोन- 4067270, 9826035338
प्रति क्विंटल- राहर दाल एवरेज 8000-9000, मीडियम बोल्ड 11000-12000, फाइन 130000-13500, एकस्ट्रा बोल्ड 13500-14000, चना दाल एवरेज 7600-7800 चना दाल मार्का 7800-8000, मसूर दाल एवरेज 7500-7700, मसूर दाल फाइन 7800-8000, उड़द छिलका 8000-8500, फाइन 8500-9500, उड़द धुली 10000-11000, फाइन 11000-12000, मूंग दाल छिलका 9000-9500, मूंग दाल फाइन 9500-10000, मूंगदाल धुली 10000- 10500, फाइन 10500-11000। चावल - पुराना चावल सरना चालू 3400-3600, बेस्ट 3600-3800, बीपीटी चालू 4200-4500,फाइन 4500-4800,एचएमटी-5200-5500 फाइन-5800-6000 दुबराज भाटापारा 5200-5300, जेजेएल चालू 5600-5800, फाइन 6000-6300, बासमती कनकी चालू 3200-3600, बासमती कनकी मीडियम 4000-4200, बेस्ट 4400-4500, मोगरा- 4300-5200, दुबार- 5200-5800, तिबार- 6500-6800, बासमती 8500-1000, बेस्ट 10000-11000 पोहा- 4400-4500, फाइन 5400-5500, मुरमुरा- 5500-6000, फाइन- 7000-8000 रु.।

लोहा भाव

अग्रवाल आयरन ट्रेडर्स
शास्त्री-ब्रिज 4004070, 2402070
भाव प्रति क्विं.- 6 एम एम 6400, 8 एम एम 5980, 10 एम एम 5860,12 एम एम, 5800 एवं 16 एम 5800 रु.। तार- 75 रु. किलो।

अरबपतियों की लिस्ट में बड़ा उलटफेर, अडानी से तिगुना पैसा गंवा चुके हैं अरबपति एलन मस्क

नई दिल्ली। *भारत और एशिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति गौतम अडानी की नेटवर्थ में इस साल .12 अरब की गिरावट दर्ज की गई है। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के अनुसार, उनकी कुल संपत्ति अब 66.8 अरब रह गई है और वे दुनिया के 23वें सबसे अमीर व्यक्ति हैं।*

हालांकि, एलन मस्क को अडानी से भी ज्यादा नुकसान हुआ है। मस्क ने इस साल 35.2 अरब गंवाए, जिससे उनकी कुल नेटवर्थ घटकर 397 अरब रह गई। शुक्रवार को ही उनकी संपत्ति में 4.4 अरब की गिरावट आई। इसके बावजूद, वे अभी भी दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने हुए हैं।

सबसे ज्यादा कमाई करने वाले अरबपतियों की बात करें तो इसमें फेसबुक के मार्क जुकरबर्ग सबसे आगे हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में 37.6 अरब डॉलर की तेजी आई है। वहीं फ्रांसीसी कारोबारी बर्नार्ड अरनॉल्ट की नेटवर्थ 18.5 अरब डॉलर बढ़ी है। बिल गेट्स और एमेनशियो ओर्टेगा की नेटवर्थ में 10-10 अरब डॉलर की तेजी आई है। दुनिया के टॉप 20 अमीरों में से 15 की नेटवर्थ में इस साल गिरावट आई है। मस्क के अलावा लैरी पेज, सर्गेई ब्रिन, स्टीव बालमर और मुकेश अंबानी ने नेटवर्थ गंवाई है।

कौन-कौन हैं टॉप 10 में- जकरबर्ग 245 अरब के साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में दूसरे, जेफ बेजोस (243 अरब) तीसरे, लैरी एलिसन (200 अरब) चौथे, अरनॉल्ट (.195 अरब) पांचवें, गेट्स (.169 अरब) छठे, पेज (.166 अरब) सातवें, ब्रिन (.156 अरब) आठवें, वॉरेन बफे (.151 अरब) नौवें और बालमर (.145 अरब) दसवें नंबर पर हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 17वें स्थान पर हैं। इस साल नेटवर्थ में 2.9 अरब डॉलर की गिरावट आई है और यह 87.7 बिलियन डॉलर रह गई है।

स्कोडा ऑटो के पहले ब्रांड सुपरस्टार बने रणवीर सिंह

मुंबई। *स्कोडा ऑटो इंडिया ने हाल ही में अपनी पहली सब-4-मीटर एसयूवी काइलैक पेश करने के बाद, अब एक और उपलब्धि हासिल की है। कंपनी ने पावरहाउस रणवीर सिंह को अपना पहला 'ब्रांड सुपरस्टार' घोषित किया है। यह भागीदारी अपने साथ स्कोडा के अंदाज़ वाले और लोगों पर आधारित कैम्पेन लेकर आ रही है, जिनमें रणवीर सिंह स्कोडा ऑटो इंडिया के प्रशंसकों तथा ग्राहकों को आकर्षित करेंगे।*

स्कोडा ऑटो इंडिया के ब्रांड डायरेक्टर पेट्र जैनेबा ने इस भागीदारी के बारे में कहा, ''काइलैक के समय मैंने वादा किया था कि 'पिक्चर अभी बाकी है'। हम भारत में अपने 25 वर्षों का उत्सव मना रहे हैं और इसके एक नये युग की शुरुआत करने के लिये प्रतिबद्ध हैं। इसमें सिर्फ विश्व-स्तरीय उत्पादों को लॉन्च नहीं किया जाएगा, बल्कि व्यवसाय के हर पहलू को नयापन दिया जाएगा, जैसे अपने ग्राहकों और प्रशंसकों से नए तरीकों से जु?ना। यह पूरी दुनिया में होता है और भारत में तो कारें और फिल्में लोगों को बहुत भावुक कर देती हैं और उन्हें जोड़ने का काम करती हैं। इसलिये भारत में अपने इतिहास में पहली बार हमें रणवीर सिंह को स्कोडा ऑटो इंडिया का पहला 'ब्रांड सुपरस्टार' बनाने पर बड़ा गर्व हो रहा है। रणवीर पर्दे पर और पर्दे के पीछे भी प्रतिभा एवं उत्साह का भंडार हैं। उनका व्यक्तित्व बड़ी मजबूती से हमारी लगन और स्वभाव दिखाता है। यह घोषणा ऐसे वक्त में हो रही है, जब हम दुनिया में अपनी उत्कृष्टता के 130 वर्षों का उत्सव मना रहे हैं। यह भागीदारी हमारे उत्पादों, नेटवर्क तथा ग्राहकों के लिये और भी कई सौगातें लेकर आएगी। हम यूरोप के बाहर स्कोडा के लिये सबसे महत्वपूर्ण बाजार के तौर पर अपनी स्थिति को मजबूत करना चाहते हैं।''

भारत में कितनी होगी टेस्ला के कार की कीमत? रिपोर्ट में हुआ खुलासा

नई दिल्ली। *शुरुआती चरण में, टेस्ला अपनी कारों को जर्मनी में मौजूद अपने प्लांट से भारत में आयात करेगी। इलेक्ट्रिक कारें बनानी वाली दिग्गज कंपनी टेस्ला के भारतीय बाजार में आने की अटकलें तेज हो गई हैं। इस बीच ब्रोकरेज फर्म सीएलएसए ने अनुमान लगाया है कि टेस्ला अगर भारत में आती है, तो उसकी इलेक्ट्रिक कारों की कीमत यहां कम से कम 35-40 लाख रुपये होगी।*

ब्रोकरेज ने कहा कि सरकार अगर इंपोर्ट ड्यूटी में 20 फीसदी की कटौती करती है, तो भी उसकी कारों की कीमत इससे कम नहीं होगी। ब्रोकरेज ने कहा कि टेस्सा की सबसे किफायती इलेक्ट्रिक कार मॉडल 3 है। इफैक्ट्री स्तर पर खुदरा कीमत लगभग 35,000 डॉलर (लगभग 30.4 लाख रुपये) है। अगर भारत सरकार की ओर से इंपोर्ट ड्यूटी में 15 से 20 प्रतिशत की कटौती की जाती है, तो भी रोड टैक्स, इंश्योरेंज जैसे दूसरे खर्चों के चलते इसकी ऑन-रोड कीमत लगभग 40,000 डॉलर होगी, जो भारत में लगभग 35-40 लाख रुपये के बराबर है। यह कीमत महिंद्रा एक्सईवी हुंडई ई-क्रेटा और मारुति सुजुकी ई-विटारा जैसी भारतीय बाजार में पहले से मौजूद इलेक्ट्रिक कारों की तुलना में 20 से 50 प्रतिशत अधिक है। सीएलएसए ने कहा कि भारत में टेस्ला के प्रवेश से भारत के ईवी मार्केट में कोई बड़ा उथल-पुथल नहीं होने वाला है।

केवल दो की कीमत 20 लाख से ऊपर है- हुंडई क्रेटा और महिंद्रा स्कॉर्पियो। ऐसे में टेस्ला के आने से कोई बड़ा बदलाव होने की उम्मीद कम है। भारत में टेस्ला की एंट्री कब होगी रिपोर्ट के मुताबिक, टेस्ला अप्रैल 2025 से भारत में अपनी रिटेल बिक्री शुरू कर सकती है। कंपनी ने नई दिल्ली और मुंबई में अपने पहले दो शोरूम खोलने की योजना बनाई है। शुरुआती चरण में, टेस्ला अपनी कारों को जर्मनी में मौजूद अपने प्लांट से भारत में आयात करेगी।

देशबन्धु
ग्राहक सेवा

रेमण्ड से ट्रेनिंग प्राप्त फ्यूजिंग सूट, ट्राउजर शर्ट स्पेशलिस्ट
टेलर्स वारिस
शॉप नं. 3 आनंद टॉकीज शॉपिंग काम्पलेक्स, जबलपुर फोन: 2405596
मो.- 9424392281, 9425152707
देग्रासे सी 30/7/2022

100 प्रतिशत गारन्टेड इलाज
क्या आपको गुप्त रोग है। अंडकोष, बवासीर, सेक्स से संबंधित रोगों के स्थायी इलाज के लिए मिलें
बिना ऑपरेशन
डॉ. विश्वास
राइट टाउन, प्रेम मंदिर, होटल पंकज पेलेश के पीछे
मो: 9827042596

फ्लैट बेचना है
गोलबाजार, जबलपुर में 742 वर्गफुट का 2 BHK बालकनी सहित फ्लैट दूसरी मंजिल पर बिक्री हेतु उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
एडवोकेट रविशंकर पटेल
फोन नंबर-
9827087838

नोट- पाठकों को सूचना दी जाती है कि किसी भी विज्ञापन पर कार्यवाही जैसे पैसा भेजना, कोई खर्च करना या प्रकाशित विज्ञापन के विश्वास पर किसी प्रकार संबंध बनाना आदि करने से पूर्व आवश्यक/संपूर्ण जानकारी कर लेवें।
देशबन्धु यह भी घोषित करता है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित होने वाले किसी भी राजनैतिक, सामाजिक अथवा अन्य प्रकार के विज्ञापनों से देशबन्धु का कोई सरोकार नहीं है। अतः विज्ञापनदाता द्वारा जारी किये गये किसी भी प्रकार के दावे/ प्रस्तुतिकरण के लिये जिम्मेदार नहीं हैं।

प्रकाशक-गिरिराज चाचा, मुद्रक-मोहन सुरजन द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लिमि. के लिये देशबन्धु काम्पलेक्स नौदराब्रिज जबलपुर से प्रकाशित एवं श्रीजी प्रिंटर्स से मुद्रित, सम्पादक-अशोक मिश्रा, * (* पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार)
फोन संपादकीय-4006577 व्यवस्था - 4085031, 4085679, 2626244 आर.एन.आई. पंजी. क्रमांक 38276/71 डाक पंजीयन क्रमांक-एसएसपी जबलपुर /04/2020-2022 E mail- Jabdesh1@yahoo.com

पमरे में सीबीआई के हत्थे चढ़ा सीएमएम कहीं पूरे मामले का सरगना तो नहीं..

रेलवे विभागीय परीक्षा में रिश्वतखोरी मामले में साहब को स्टेनो सहित ले गई टीम, और भी हो सकती हैं गिरफ्तारियां

जबलपुर, देशबन्धु। रेलवे विभागीय परीक्षा में रिश्वतखोरी के मामले में पश्चिम मध्य रेलवे (पमरे) में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की टीम जितनी गहन विवेचना में जुटी हैं उससे चर्चाओं का बाजार गर्म हैं कि जिन अधिकारियों से पूछताछ की गई वे इस पूरे मामले के सरगना तो नहीं। मामले में जिस तरह से नगदी के बजाए सोने लिया गया उससे शुरु से ही कयास लगाए जा रहे थे कि मामले में व्यूह रचना रचने वाला मास्टर माईंड (सरगना) आखिर कौन हैं।

पमरे में सीबीआई ने लेखा विभाग के साथ भंडार विभाग में पड़ताल में जुटी हैं। रेल सूत्रों के अनुसार शनिवार को सीबीआई ने भंडार विभाग के चीफ मटेरियल ऑफिसर (सीएमएम) अशोक कुमार गुप्ता और उनके स्टेनों से न सिर्फ सुबह से शाम तक गहन पूछताछ की बल्कि बताते हैं कि उन्हें साथ में ही ले गई। ज्ञात हो कि इस मामले में पूर्व में 6 आरोपियों की पूर्व में गिरफ्तारी हो चुकी हैं, वडोदरा में कार्रवाई के बाद आरोपियों की निशानदेही पर सीबीआई की टीम पमरे पहुंची।

चार अन्य आरोपियों पर भी कसा शिकंजा- सीबीआई द्वारा उक्त जांच से संबंधित एक विज्ञप्ति से जानकारी में आया कि रेलवे विभाग में फर्जी तरीके से नौकरी हासिल करने के आरोप में सीबीआई ने 3 अन्य रेलवे अधिकारियों और एक बहरूपिये सहित चार आरोपियों और अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

सीबीआई ने माल ट्रेन प्रबंधक सहित आरोपियों के खिलाफ सतर्कता विभाग, मुख्यालय कार्यालय, पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर (एमपी) द्वारा की गई एक शिकायत और संदर्भ पर गत दिवस यह मामला दर्ज किया। सीडब्ल्यूएम के तहत टेक-2 सहायक टीआरडी (खलासी हेल्पर), इलेक्ट्रिकल विभाग, पमरे कोटा (राजस्थान) के तीनों और एक प्रतिरूपणकर्ता उम्मीदवार और अज्ञात अन्य पर आरोप है कि सहायक टीआरडी (खल्लासी हेल्पर) ने आरोपी डमी उम्मीदवार और अन्य अज्ञात रेलवे अधिकारियों सहित अन्य आरोपियों के साथ मिलकर, धोखाधड़ी करने के साथ ही रुपये की अवैध वित्तीय संतुष्टि के बदले में रेलवे में नौकरी दिलाने के नाम पर अभ्यर्थियों से 15 लाख की अवैध वसूली की। यह भी आरोप लगाया गया कि आरोपी डमी उम्मीदवार रेलवे परीक्षा में उपस्थित हुआ था और रेलवे भर्ती परीक्षा की पूरी चयन प्रक्रिया में डमी उम्मीदवार की तस्वीरों, नकली पहचान, उंगलियों के निशान का उपयोग किया गया। सीबीआई द्वारा राजस्थान के कोटा और सवाई माधोपुर जिलों में आरोपियों के परिसरों पर तलाशी ली जा रही है।

अंतर्राज्यीय गिरोह का सरगना कौन.? सीबीआई की जांच से पमरे के तीनों मंडलों में प्रबंधन के साथ अधिकारियों कर्मचारियों में भी हड़कंप का माहौल है। ज्ञात हो कि हाल ही में सीबीआई ने रेलवे भर्ती घोटाला मामले में 4 अधिकारियों पर केस दर्ज किया था जिसमें 5 लाख रुपये लेकर अभ्यर्थियों से परीक्षा पास कराने का आरोप था। इस मामले में सीबीआई ने वडोदरा, मुंबई और अन्य जगहों के रेलवे अधिकारियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

इन अधिकारियों पर आरोप है कि उन्होंने रेलवे में विभागीय परीक्षा में पास करवाने के बदले उम्मीदवारों से पैसे वसूले। सीबीआई ने अंकुश वासन (वेस्टर्न रेलवे, वडोदरा), संजय कुमार तिवारी (डिप्टी चीफ कमर्शियल मैनेजर, चर्च गेट, वेस्टर्न रेलवे, मुंबई), नीरज सिन्हा (डिप्टी सुपरिटेंडेंट) और मुकेश मीणा समेत कई और अधिकारियों के खिलाफ केस दर्ज किया। जांच में सामने आया है कि अंकुश वासन ने संजय तिवारी को निर्देश दिया कि वो ऐसे 10 उम्मीदवारों की सूची बनाएं जो पैसे देकर परीक्षा में पास होना चाहते हैं। इसके बाद हर उम्मीदवार से 4-5 लाख रुपए लिए गए। सूत्रों की मानें तो अधिकारी नगदी लेने में फंस न जाएं इसलिए सोने के बिस्किट में सभी को ऊपर तक हिस्सा पहुंचाने का षणयंत्र रचा गया था। इस गिरोह का सरगना कौन हैं इसको लेकर सीबीआई भी मंथन में जुटी है।

इसलिए लिए गए सोने के बिस्किट

सूत्रों के अनुसार सीबीआई ने अब तक रेलवे विभागीय परीक्षा में रिश्वतखोरी से संबंधित मामले में दो आईआरपीएस अधिकारी सहित 5 रेलवे अधिकारियों और एक निजी व्यक्ति सहित 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया था जिसके बाद कोटा में 4 और पमरे जबलपुर में 2 गिरफ्तारियों को जल्द शामिल किया जा सकता हैं। वडोदरा में अधिकारियों की तलाशी के दौरान 650 ग्राम सोना और करीब 5 लाख रुपये नकद बरामद किए हैं। वडोदरा, गुजरात सहित 11 स्थानों पर आरोपी व्यक्तियों के आवासीय और आधिकारिक परिसरों की तलाशी ली गई, जिसमें करीब 57 लाख रुपए की 650 ग्राम की सोने की बिस्किट एवं करीब 5 लाख नकद रुपये बरामद हुए। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट और आपत्तिजनक दस्तावेज़ आदि भी जब्त किए गए हैं।

पेंच नेशनल पार्क में भूख-प्यास से बाघ शावक की मौत

वन विभाग की टीम ने एक को रेस्क्यू किया, बाघिन छोड़ गई थी दो शावक

सिवनी, देशबन्धु। पेंच नेशनल पार्क के खवासा क्षेत्र में बाघिन ने दो शावकों को छोड़ा था, जिसमें से भूख-प्यास के कारण एक की मौत हो गई। इसका शव ईको विकास समिति दुर्गापुर के अध्यक्ष को दिखा तो उन्होंने इसकी सूचना अधिकारियों को दी।

वन विभाग की टीम ने पहाड़ी नाले में रात भर निगरानी की, लेकिन बाघिन नहीं आई। पेंच टाइगर रिजर्व के उपसंचालक रजनीश कुमार सिंह के अनुसार, घटनास्थल पर यह सोचकर ट्रैप कैमरा लगाए गए कि बाघिन रात में आकर जीवित शावक को ले जा सकती है। दो टीमें रातभर निगरानी के लिए तैनात की गईं। रात में जीवित शावक फिर मृत शावक के पास आया, लेकिन कुछ देर बाद लौट गया। बाघिन नहीं आई।

कई दिनों से भूखे थे दोनों शावक- दोनों शावक कई दिनों से भूखे और कमजोर थे। माना जा रहा है कि उनकी कमजोरी के कारण बाघिन ने उन्हें छोड़ दिया था। घटनास्थल पेंच टाइगर

रिजर्व सिवनी के वन परिक्षेत्र खवासा बफर के बीट मोहगांव यादव में स्थित है।

अंतिम संस्कार किया- जहां पर एनटीसीए के दिशा निर्देशों के तहत शव परीक्षण कराया गया। शव परीक्षण में शावक के सभी अंग सुरक्षित पाए गए। प्रथम दृष्टया भूख एवं प्यास से मौत होना पाया गया। एनटीसीए के दिशा निर्देशों के तहत भष्मीकरण समिति के समक्ष शावक का अंतिम संस्कार किया गया। रेस्क्यू कर लाए गए जीवित शावक का चिकित्सा परीक्षण एवं उपचार विशेषज्ञ वन्यप्राणी चिकित्सकों द्वारा किया जा रहा है।

पाली के करकटी में मिला बाघ का शव

मौत के कारणों की जांच जारी, वन विभाग की टीम ने की घेराबंदी

उमरिया, देशबन्धु। जिले के सामान्य वन मंडल के पाली परिक्षेत्र के करकटी इलाके में शनिवार को एक बाघ का शव संदिग्ध परिस्थितियों में पाया गया। यह शव बेली सर्किल के करकटी बीट के राजस्व क्षेत्र में मिला।

सूचना मिलते ही वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचे और क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। मृत बाघ के पास एक अन्य बाघ के पगमार्क भी देखे गए, जिससे आशंका जताई जा रही है कि दोनों के बीच संघर्ष हुआ होगा। हालांकि, बाघ की मौत का वास्तविक कारण पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। वन विभाग ने तत्काल डॉक्टरों की एक टीम को बुलाया, जो बाघ के शव का पोस्टमॉर्टम कर रही है। इसके साथ ही, फॉरेंसिक जांच भी कराई जा रही है ताकि शिकार या जहर दिए जाने की संभावना को खारिज किया जा सके। वन अधिकारियों के अनुसार, घटना के सभी पहलुओं की गहराई से जांच की जा रही है।

बाघों की रहस्यमयी मौतें वन्यजीव संरक्षण के लिए गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं। उमरिया जिला, जो बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के नजदीक स्थित है, बाघों की आबादी के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। फिलहाल, वन विभाग और डॉक्टरों की टीम मिलकर बाघ की मौत की गुत्थी सुलझाने में जुटी है। इस संबंध में अनुविभागीय वन अधिकारी दिगेंद्र सिंह ने बताया कि वह अपनी टीम के साथ घटनास्थल पर मौजूद हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए डॉग स्क्वॉड को भी बुलाया गया है, और आगे की जांच जारी है।

महिला नक्सलियों के पोस्टमार्टम के दौरान जिला अस्पताल बना रहा छावनी

परिजनों के सुपुर्द किये गये शव

बालाघाट, देशबन्धु। मुठभेड़ में मारी गयी चारों महिला नक्सलियों का पोस्टमार्टम जिला अस्पताल में किया गया। इस दौरान जिला अस्पताल पूरी तरह छावनी में तब्दील था। मीडिया कर्मियों को भी पोस्टमार्टम कक्ष से निर्धारित दूरी पर रोक दिया गया था।

मुठभेड़ में मारी गई चारों महिला नक्सलियों पर 62 लाख रूपये का इनाम घोषित था। पोस्टमार्टम के बाद महिला नक्सलियों के शवों को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया। नक्सल सेल के एसआई अखिलेश मिश्रा ने बताया कि चारों महिला नक्सलियों का पोस्टमार्टम उनके परिजनों की उपस्थिति में करवाया गया। पोस्टमार्टम के बाद देर शाम तक चारों महिला नक्सलियों के शवों को परिजनों के सुर्पुद कर दिया गया था। परिजन शवों को लेकर अस्पताल से रवाना हो गये है गौरतलब है कि गढ़ी थानान्तर्गत सुपखार रेंज के रौंदा जंगल क्षेत्र में कान्हा-भोरदेव डिवीजन में गुरुवार की दोपहर को नक्सलियों तथा हॉक फोर्स तथा पुलिस बल की टीम में मुठभेड़ हुई थी। इस मुठभेड में चार महिला नक्सलियों को मार गिराया गया था। जिनकी शिनाख्त आशा निवासी दक्षिण बस्तर जिला सुकमा एरिया कमेटी की कमाण्डर भोरमदेव एरिया कमेटी ,शीला उर्फ पदम उर्फ सरिता निवासी पेन्टा थाना जगरगुंडा जिला सुकमा छत्तीसगढ़ एसीएम भोरमदेव एरिया कमेटी, रंजीता जिला कोण्डागांव छ.ग. एसीएम भोरमदेव एरिया कमेटी तथा लख्खे मरावी जिला सुकमा छ.ग. एसीएम भोरमदेव एरिया कमेटी के रूप हुई थी। चारों मृतक महिला नक्सलियों पर 62 लाख रूपये का इनाम घोषित था।

125 व्यक्तियों के खिलाफ बिजली चोरी के प्रकरण दर्ज

जबलपुर, देशबन्धु। सबसे अधिक लाइन लॉस वाले क्षेत्रों में दबिश देकर मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने सवा सौ व्यक्तियों के खिलाफ बिजली चोरी का प्रकरण दर्ज किया है। जिन क्षेत्रों में कार्यवाही की गयी वह संवेदनशील थे। जिसके कारण कार्यवाही के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात था।

अधीक्षक अभियंता संजय अरोरा से प्राप्त जानकारी के अनुसार शहर के सबसे ज्यादा बिजली चोरी,लाइन लॉस एवं सबसे कम राजस्व वसूली वाले क्षेत्रों में विजिलेंस एवं पुलिस प्रशासन के सहयोग से कार्यवाही की गयी। कार्यवाही के लिए 20 टीम का गठन किया गया था। इन क्षेत्रों में घनी बस्ती तथा लोगों के विरोध के कारण कई बार बाधा भी उत्पन्न हुई। सभी दल को कार्यवाही के दौरान संयम बरतने के निर्देश दिये गये थे। दल में महिलाओं को विशेष रूप से शामिल किया गया था और हनुमान ताल तथा गोहलपुर थाने के पुलिस बल का सहयोग लिया गया था। कार्यवाही के दौरान 124 व्यक्तियों के खिलाफ बिजली चोरी के प्रकरण दर्ज

किये गया। दोषियों के खिलाफ विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 135,126 एव 138 के तहत कार्यवाही की गयी। जो मुख्य रूप से मीटर से छेड़छाड़ न्यूट्रल कंट्रोल,सर्विस लाइन से छेड़छाड़ इत्यादि के थे। जिले में विद्युत लाइन लॉस 24 प्रतिशत है। इन क्षेत्र में विद्युत लाइन लॉस 50 से 60 प्रतिशत था। जबलपुर शहर के बिजली बिल की प्रति यूनिट कैश वसूली दर 5.15 रूपये है। इन अंदर के क्षेत्र में बिजली बिल की प्रति यूनिट कैश वसूली दर दो रूपये से कम है।

एमपीपीएससी: पदों की संख्या जस की जस

प्रारंभिक परीक्षा के परिणामों के पूर्व हो सकता है इजाफा

जबलपुर, देशबन्धु। राज्य सेवा परीक्षा 2025 में पदों को लेकर अभी फिलहाल कोई फेरबदल सामने नहीं आया हैं लेकिन सूत्रों की मानें तो परीक्षा में पदों की संख्या में इजाफा प्रारंभिक (प्री) के परिणाम (रिजल्ट) घोषित होने के पूर्व तक हो सकता है, क्योंकि पदों की संख्या से ही मुख्य (मेन्स) के लिए पात्र उम्मीदवारों का चयन होता है। मप्र लोक सेवा आयोग (पीएससी) की राज्य सेवा परीक्षा 2025 में केवल 158 पद हैं।

प्री हो चुकी है और प्रश्नपत्र का स्तर बेहतर रहा है। इससे कटऑफ कम होने की उम्मीद की जा रही है। लेकिन कम पद चुनौती बने हुए हैं। कई उम्मीदवारों को आस है कि पदों की संख्या में इजाफा होगा और वे प्री क्वालीफाई कर सकेंगे।

पदों को लेकर उम्मीदवार लगातार यहां वहां से जानकारियां एकत्रित करने में जुटे हैं। जिसमें वर्तमान मे यह बात संज्ञान में आ रही हैं कि राज्य सेवा परीक्षा 2025 में पदों की संख्या में इजाफा प्री के रिजल्ट घोषित होने के पूर्व तक हो सकता है, क्योंकि पदों की संख्या से ही मेन्स के लिए पात्र उम्मीदवारों का चयन होता है। इसके लिए आयोग ने विभागों से बात की है और भोपाल व जीएडी (सामान्य प्रशासन विभाग) को भी पत्र लिखा है। इसमें पदों की जानकारी और मांगी गई है, भले ही वह फैक्स कर दें, ईमेल कर दें, जिससे इन्हें जोड़ा जा सके। लेकिन शुक्रवार (21 फरवरी) तक की स्थिति में आयोग को अभी रिक्त पदों की जानकारी नहीं मिली है।

यानी अभी पद जस के तस हैं, इसमें इजाफा नहीं हो रहा है। आयोग अभी और दस तक इंतजार कर सकता है। लगातार चर्चा जारी है कि पदों की संख्या और मिल जाए तो इसे बढ़ा दिया जाए।

एक पखवाड़ा शेष- एमपीपीएससी 2025 की मेंस 9 जून से घोषित हुई है। सूत्रों की मानें तो आयोग विवाद नहीं चाहता है इसलिए रिजल्ट के बाद 90 दिन का समय मेन्स में देगा, यानी रिजल्ट 8-9 मार्च तक देने की कोशिश की जा रही है। ऐसे में पद बढ़ाने के लिए आयोग के पास भी मुश्किल से एक पखवाड़ा यानि मात्र 15 दिन का समय है। इतने दिन के भीतर ही विभागों को रिक्त पद भेजने होंगे।

700 की थी मांग, आए 158 पद - पदों की कम संख्या लगातार विवाद का कारण बनी हुई है। इस बार तो विज्ञप्ति के पहले लंबा तीन दिन तक आंदोलन भी चला। इसमें 700 पद की मांग हुई, लेकिन आए केवल 158 पद ही। इसके पहले 2024 में केवल 110 पद, 2023 में 229, 2022 में 457, 2021 में 290 पद, 2020 में 261 पद, 2019 में 571 पद आए थे।

बेटे-बहू और पत्नी के सामने किसान ने खुद को मारी गोली, मौत

शहडोल, देशबन्धु। शहडोल में एक किसान ने गुस्से में आकर खुद को देसी पिस्टल से गोली मार ली, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के समय उसके दोनों पुत्र बहू व पत्नी सामने खड़े हुए थे। मृतक अपनी पत्नी की रोज पिटाई करता था, दोनों पुत्र बाहर रहकर काम करते थे। जिसके बाद मां ने पिटाई की जानकारी अपने दोनों पुत्रों को दी। बीती रात्रि 2 बजे दोनों पुत्र घर पहुंचे और मां को अपने साथ ले जाने की जिद करने लगे, तभी पिता नाराज हो गया और अपनी पत्नी को पुत्रों के साथ भेजने से मना करने लगा। लेकिन पत्नी की पिटाई होने से पुत्रों के साथ मां जाने लगी, जिससे वह नाराज हो गया और उसने अंदर रखी अपनी देसी पिस्टल से खुद को गोली मार ली। घटना केशवाही चौकी के ग्राम टेंघा की है। जानकारी लगने के बाद पुलिस के आला अधिकारी एफएसएल एवं फिंगर एक्सपर्ट के साथ मौके पर पहुंचे।

पति की मौत के बाद जाकर शांत हुआ विवाद- जानकारी के अनुसार के केशवाही चौकी के टेंघा गांव में एक किसान ने खुद को गोली मारकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। पुलिस ने बताया कि मृतक भवानी शंकर पयाशी (50) टेंघा के सिकटा टोला का रहने वाला था, पति-पत्नी के बीच आए दिन विवाद होता था। मृतक के दोनों पुत्र बाहर रहकर प्राइवेट नौकरी करते हैं, आए दिन मां के साथ मारपीट की जानकारी मां अपने दोनों पुत्रों को देती रहती थी। बीती रात्रि दोनों पुत्र गांव पहुंचे और घर से अपनी मां को अपने साथ ले जाने लगे, तभी पिता भवानी शंकर ने अपने दोनों बेटों को कहा कि मां को तुम अपने साथ नहीं ले जा सकते हो मैं अकेला हो जाऊंगा, लेकिन मां के साथ हो रही लगातार मारपीट से पुत्र काफी नाराज थे और अपनी मां को अपने साथ ले जाने की जिद करने लगे। मां भी बेटों के साथ जाने

के लिए तैयार हुई और जाने लगीं। पत्नी के घर छोड़ने से नाराज पति भवानी शंकर ने घर के अंदर रखी देसी पिस्टल को लेकर बाहर निकल आया और पुत्रों को गोली मार देने की धमकी देने लगा। लेकिन दोनों बेटे यह जान रहे थे कि पिता हमें डरा रहे हैं और दोनो बेटे मां को लेकर आंगन तक निकल आएं। तभी भवानी शंकर ने अपने कनपटी पर बंदूक अड़ाई और खुद को गोली मार ली।जानकारी के अनुसार जब यह घटना घटी तो उसके दोनों पुत्र बहू और मृतक की पत्नी सामने ही खड़ी थी।

जानकारी लगने के बाद पुलिस मौके पर पहुंच पड़ताल में जुटी है। चौकी प्रभारी आशीष झारिया ने बताया कि हमें जब जानकारी लगी तो हम मौके पर पहुंचे। घटना की जानकारी वरिष्ठ अधिकारियों को दी गई। मौके पर एसडीओपी थाना प्रभारी बुढार, फिंगर एक्सपर्ट एवम एफएसएल टीम मौके पर पहुंच जांच कर रही है। पोस्टमार्टम के लिए शव को अस्पताल ले जाया जा रहा है। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा।

डीएआरएम ने किया कटनी से रीवा एवं रीवा से सतना रेलखंड का निरीक्षण

जबलपुर, देशबन्धु । जबलपुर रेल मंडल के विभिन्न स्टेशनों में हो रहे पुनर्विकास कार्य की गति को देखने मण्डल रेल प्रबन्धक कमल कुमार तलरेजा ने 21 एवं 22 फरवरी 2025, दो दिनों का निरीक्षण किया।

इसके तहत 21 फरवरी को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा जबलपुर से कटनी स्टेशन के बीच रेलवे ट्रैक, कर्व, समपार फाटक एवं छोटे-छोटे स्टेशनों का विंडो निरीक्षण किया। इसके पश्चात न्यू कटनी जंक्शन में इलेक्ट्रिक एवं डीजल लोको शेड न्यू कटनी, आर ओ एच, एरिया कंट्रोल एवं रनिंग रूम न्यू कटनी जंक्शन का निरीक्षण किया। इसके पश्चात दिनांक 22 फरवरी 2025 को कटनी से रीवा स्टेशन के मध्य ट्रैक, पॉइंट एंड क्रासिंग, समपार फाटक, कर्व एवं छोटे स्टेशनों का विंडो निरीक्षण किया। इसके पश्चात रीवा स्टेशन पहुंचकर उन्होने कोचिंग डिपो, गुड शेड, पिट लाइन, प्लेटफॉर्म, सर्कुलेटिंग एरिया एवं रीवा स्टेशन पर चल रहे अधो संरचना के कार्य एवं यात्री सुविधाओं एवं पुर्नविकास कार्यों को पूरी गुणवत्ता के साथ निर्धारित तिथि पर पूर्ण करने तथा रेल संरक्षा एवं सुरक्षा से किसी भी प्रकार का समझौता न करने के निर्देश दिए। इसके पश्चात सतना स्टेशन पहुंचकर महाकुंभ मेला स्पेशल ट्रेन का निरीक्षण करते हुए सतना स्टेशन पर महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए रेलवे द्वारा की गई यात्री सुविधाओं का भी निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिया कि किसी भी प्रकार की यात्रियों को आसुविधा न हो। इस अवसर पर डीआरएम ने सतना सहित रीवा, कटनी एवं न्यू कटनी जंक्शन स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों की प्रगति एवं पार्किंग, बिल्डिंग, रनिंग रूम का भी निरीक्षण किया।

HEMM DYNAMIC SOLUTION INDIA PVT. LTD.
Job vacancy for Jabalpur Location.
* Telecaller, Back Office, Admin, Stock Management.
* Sales & Marketing
Email:hemm.jbpgreetings@gmail.com (VISIT: www.hem-mac.in,www.hemmac.com)

J.B.F.A
जबलपुर ब्रॉयलर फार्मस् एसोसियेशन
मुर्गा छोटा - रु. 122
मुर्गा मीडियम - रु. 110
मुर्गा बड़ा - रु. 90
मुर्गा जम्बो - रु. 90
मो.-9039925000, 9425800409

सोनू पोल्ट्री
बड़ा ब्रॉयलर - रु. 86
मीडियम ब्रॉयलर - रु. 106
छोटा ब्रॉयलर - रु. 118
मो.- 9039925999